प्रकाशक—
पं० करुणाशंकर शुक्ल
प्रमोद पुस्तकमाला, यूनीवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।

"महापुरुषों के आदर्श उपदेश" भाग २ शीघ्र ही प्रकाशित होगा जिसमें विदेशी महापुरुषों, ईसा, मुहम्मदसाहब, महात्माटाल्सटाय, महात्मा लेनिन, कार्लमार्क्स, डाक्टर सानयात सेन आदि, अनेकों महापुरुषों के आदर्श उपदेश व विभिन्न विषयों पर उनकी राय होगी।"

मुद्रक—
पं० करुणाशंकर शुक्ल
प्रमोद प्रेस, यूनीवर्सिटी रोड, इलाहाबाद।

अपने पूज्य पिता

स्वर्गीय श्रीरामचरण यादव

की

पुण्य-स्मृति में

सदा परिश्रम ही जीवन में जिसको भाया ।
रहे सत्य की छाँह सुपथ को ही अपनाया ॥
सदा काटते रहे विपत की बेड़ी भारी ।
मिला न सुख का लेश आयु ही बीती सारी ॥

रह प्रसन्न दुःख मे सदा, तात गये सुरधाम को ।
कहीं रहें विनती यही सुखी रहें अविराम हो ॥

बनी न मुझसे हाय, तनिक भी सेवा उनकी ।
रहा सदा ही दूर न पाली आज्ञा उनकी ॥
आन्दोलन था सुखद, जेल था जीवन अपना ।
योग्य हुआ जब, हुये तात तब जग से सपना ॥

हाय नहीं कुछ कर सका, मन की मन ही में रही ।
अतः स्नेह का पुष्प शुभ सादर, अर्पित है यही ॥

आपका ही

"प्रकाश"

—:※:—

विषय-सूची

—:o:—

श्री कृष्ण के आदर्श उपदेश

मनुष्य को चाहिये कि इन्द्रियों के भोगों में स्थित जो राग और द्वेष है, उन दोनों के वश में न होवे; क्योंकि वे दोनों ही

कल्याण मार्ग में विघ्न करने वाले महान् शत्रु हैं। इसलिये उन दोनों को जीतकर सावधानी के साथ स्वधर्म का आचरण करे; क्योंकि अच्छी प्रकार आचरण किये हुये दूसरे के धर्म से अपना गुण रहित धर्म भी अति उत्तम है। अपने धर्म में मरना भी कल्याणकारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है। (अ० ३, श्लो० ३४-३५)

× × ×

अपने आप जो कुछ प्राप्त हो, उसमें ही सन्तुष्ट रहने वाला; हर्ष, शोक आदि से अतीत तथा ईर्ष्या से रहित तथा सिद्धि और प्रसिद्धि में समान भाव रखने वाला पुरुष कर्मों को करके भी नहीं बँधता है, क्योंकि आसक्ति रहित ज्ञान में स्थित हुये चित्त वाले यज्ञ के लिये आचरण करते हुये मुक्त पुरुष के सम्पूर्ण कर्म नष्ट हो जाते हैं। (गीता अ० ४, श्लो० २२-२३)

× × ×

सर्दी, गर्मी; सुख, तथा मान अपमान में जिनके अन्त.करण की वृत्तियाँ अच्छी प्रकार शान्त हैं अर्थात् विकार रहित हैं, ऐसे

स्वाधीन आत्मा वाले पुरुष के ज्ञान में परमात्मा के सिवाय और कुछ है ही नहीं।

× × ×

मनुष्य को अपने किये हुये के शुभाशुभ परिणाम भोगने ही पड़ते हैं। न तो ईश्वर किसी को सुख देता है, न फिर उसे लोगों की तकलीफों से ही किसी तरह का सम्बन्ध है। वह तो केवल संसार चक्र का चलानेवाला एक मशीनमैन के समान है। इस संसार-यन्त्र की छान-बीन कीजिये और अनुभव एवं तर्क के आधार पर यह निश्चय कीजिये कि किधर जाने से दबकर पिस जाने का भय है और किस ओर का मार्ग प्रशस्त एवं श्रेयस्कर है। अपने स्वयं निश्चित पथ पर चलिये और अपना उद्धार आप ही कीजिये। (अ० ६ श्लो० ५)

× × ×

गुणातीत उसे समझना चाहिये जो न प्रकाश की चाह करता है न कामों में फँसे रहने की, और न सुस्ती या आलस्य में फँसता है, और न इन तीनों हालतों में किसी से भी घबराता है। उदासीन की तरह जो सुख दुःख को एक सा मानता है और इन हालतों के बदलने से अपने भीतर बिलकुल डांवाडोल नहीं होता। सुख, दुख, मिट्टी, पत्थर और सोना, प्रिय, अप्रिय, नेकनामी और बदनामी सब में एक समान, दोस्त और दुश्मन इन सब में एक समान रहता है, जो सब इच्छाओं से ऊपर है, वही 'गुणातीत' है। जो परमेश्वर के "साधर्म" यानी स्वयम् जैसा होकर उसी में लीन हो जाता है (ब्रह्मभूयाय कल्पते)

क्योंकि वह परमेश्वर ही आत्मा का, अनन्त अमृत का और अखण्ड सुख का भण्डार है। (१४, २, २२ से २७)

× × ×

वे ज्ञानी हैं जिनमें न अहंकार है और न मोह, जिनमें दुनिया से आसक्ति नहीं रही, जो आध्यात्म में लगे रहते हैं जिनकी इच्छायें दूर हो चुकी, जो दुई से ऊपर उठ गये जिन पर सुख दुःख असर नहीं करता, वे ही उस परम पद को पाते हैं जहाँ न सूरज चमकता है, न चाँद, न आग और जहाँ से पहुँच कर फिर वापस नहीं आया जाता। (१५-५-६)

× × ×

जो किसी से वैर नहीं करता, जो सब का मित्र है, जो सब पर दया करता है जिसमें 'मेरे तेरे' का भाव नहीं, जिसमें अहंकार नहीं, जो सुख दुःख में एक समान है और सब को क्षमा कर देनेवाला है, जो सदा सन्तुष्ट है, जिसने अपने को जीत लिया है, जिसका विचार पक्का है और जिसने अपने मन और बुद्धि को ईश्वर में लगा रखा है, ऐसा ईश्वर का भक्त ईश्वर को प्रिय है। (१२ १३, १४)

× × ×

जिसे दुनिया के किसी आदमी को किसी तरह का डर नहीं, और न जिसे किसी से किसी तरह डर है, जो खुशी, रंज और डर से ऊपर उठ गया है, वह ईश्वर को प्रिय है (१२, १५)

× × ×

जो हर हालत में सन्तुष्ट, पाक, बिन आलस्य, पक्षपात से ऊपर और दुःख से परे है, जो फल की चिन्ता छोड़ कर सदा

अपने कर्तव्य के पूरा करने में लगा रहता है, वही भक्त ईश्वर को प्यारा है (१२, १६)

× × ×

जो न आनन्द से फूलता है और न दुःखों से दुःखी होता है, जिसे न किसी वस्तु के जाने का दुःख और न पाने की इच्छा जिसने अपने लिये शुभ और अशुभ दोनों तरह के फलों का त्याग कर दिया है, वही भक्त ईश्वर को प्यारा है।

(१२, १७)

× × ×

जो आदमी मित्र और शत्रु दोनों को एक निगाह से देखता है जो मान और अपमान दोनों मे एक समान रहता है, जो सर्दी, गरमी, सुख, दुःख मे एक समान और मोह रहित है, जिसके लिये अपयश और यश बराबर है, जो व्यर्थ नहीं बोलता, जो हर हाल में सन्तुष्ट है। जो किसी घर को अपना घर नहीं मानता, जिसका मन स्थिर है, वह भक्त ईश्वर का प्यारा है। (१२, १६)

× × ×

सच्चे ज्ञान प्राप्त करने का मार्ग

घमण्ड न करना; दम्भ यानी छल न करना; अहिंसा; सहनशीलता शुद्ध गुरू के पास बैठना; पाक रहना; स्थिरता यानी सकून; अपने ऊपर काबू; इन्द्रिय विषयों से वैराग्य; अहङ्कार या खुदी का न होना; जन्म, मौत, बुढ़ापा, बीमारी और दुःख, इसकी बुराई को समझना, किसी से मोह न करना; स्त्री, बच्चों, घर आदि में अपने को भूल न जाना; चाहे कोई बात अपने मन भाती हो या इसके प्रतिकूल हो हर हालत में अपने

मन को एक सा रखना; ईश्वर में भक्ति; कभी कभी एकान्त में रहने का स्वभाव; भीड़ से बचने की इच्छा आध्यात्म की तरफ लगना असलियत की जानने की इच्छा; ये सब सच्चे ज्ञान को पाने का रास्ता है। यही ज्ञान है। इसके उल्टा सब अज्ञान है। (१३, ७ से ११)

× × ×

उस आदमी की दृष्टि सच्ची दृष्टि है जो सब प्राणियों में एक समान विराजमान एक परमेश्वर को देखता है। जो परमेश्वर को सब जगह रमा हुआ देखकर किसी दूसरे की हिंसा करके अपने हाथ से अपनी हिंसा नहीं करता, वही परम गति को पाता है। जब आदमी अलग अलग प्राणियों के अन्दर एक ही परमेश्वर-देखने लगता है, तब उस पूर्ण ब्रह्म को, उस परमात्मा को पहचानता है, जो नित्य निर्गुण और निर्विकार है। जिस तरह आकाश सब जगह रहते हुये भी बेदाग रहता है। उसी तरह आत्मा सब शरीरों में रहते हुये भी बेदाग रहती है। जिस तरह एक सूरज सारी दुनिया को प्रकाश देता है, इसी तरह एक आत्मा इस सारे क्षेत्र को प्रकाशित करती है। (१३, २७ से ३३)

× × ×

इस दुनिया में दो तरह के आदमी होते हैं। एक दैवी सम्पद् वाले और दूसरे आसुरी सम्पद् वाले दैवी सम्पद् आदमी को आज़ादी या मुक्ति की तरफ ले जाती है और आसुरी-सम्पद् उसे बन्धन में जकड़े रखती है।

× × ×

दैवी सम्पदा।

दैवी सम्पदा में ये बातें शामिल हैं—(१) निडर होना, (२) मन की शुद्धि, (३) ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न (४)

दान देने की आदत, (५) मनको बस में रखना (६) दूसरों का उपकार करना, (७) अच्छी पुस्तकों का पढ़ना, (८) तप (९) कपट न करना, (१०) अहिंसा, (११) सच्चाई, (१२) क्रोध न करना, (१३) त्याग (१४) शान्ति (१५) व्यर्थ बात न करना, (१६) सब पर दया करना, (१७) लोभ न करना, (१८) विरक्त रहना (१९) सज्जनता, (२०) गम्भीरता, (२१) तेज, (२२) क्षमा, (२३) धीरज, (२४) पवित्रता, (२५) किसी से वैर न करना (२६) घमण्ड न करना। (१४-४)

× × ×

पाँच तप

अपने से बड़ों की प्रतिष्ठा शरीर की सफाई, सादगी, ब्रह्मचर्य और अहिंसा ये पाँच शरीर के तप हैं। अपनी बात से किसी का चित्त न दुखाना, सत्य बोलना, जो दूसरे के लिए प्रिय और उपयोगी हो वह बात कहना और अच्छे ग्रन्थ पढ़ने का स्वभाव ये पाँच जबान के तप हैं। खुश दिली, शान्ति मौन यानी ख़ामोशी इन्द्रियों को काबू में रखना और दिल की सफाई ये पाँच मन के तप हैं। (१७, १४ से १६)

× × ×

दूसरों की सेवा, दान और तप जैसे काम करने ही चाहिए। इनसे आदमियों की आत्माएँ शुद्ध होती हैं। लेकिन इन्हें भी आसक्ति यानी मोह को छोड़ कर फल की परवाह न करते हुए कर्त्तव्य समझ कर करना चाहिए (१८, ९; ११). यही असली "सात्विक" त्याग है (१८, ९, ११) मोह में आकर अपने

कर्त्तव्य को छोड़ देना या शरीर के कष्ट के डर से 'कर्त्तव्य' से हट जाना दोनों ठीक नहीं हैं (१८, ७,८)।

× × ×

तीन तरह के ज्ञान

ज्ञान भी तीन तरह के हैं। सब प्राणियों में एक ही सच्चिदानन्द आत्मा को देखना, यह "सात्विक ज्ञान" है। सब में अलग अलग आत्माओं को देखना यह "रजस ज्ञान" है। वह तुच्छ ज्ञान जिसमें आदमी बिना पूरे मतलब या असलियत को समझे एक ही काम में लिपटा रहता है और उसे ही सब कुछ समझ लेता है "तमस ज्ञान" है (१८, २० से २०)

× × ×

ठीक इसी तरह सब धर्मों और सब जातियों को एक समझना 'सात्विक', सब को अलग अलग समझना रजस्', अपने ही धर्म या जाति को ठीक और, दूसरों को गलत समझ बैठना 'तमस' है।

× × ×

तीन तरह के सुख

सुख भी तीन तरह का हो सकता है। जो आरम्भ में विष की तरह और अन्त में अमृत की तरह है, जिसमें आत्मा और बुद्धि को शान्ति मिलती है वह सुख 'सात्विक' है। विषयेन्द्रियों का सुख जो आरम्भ में अमृत की तरह और अन्त में विष की

तरह है रजस्' सुख है। जो सुख आदि और अन्त में आत्मा को केवल मोह, नींद, आलस्य में डाले रहता वह सुख 'तमस्' है। (१८, ३७, ३८, ३९)

× × ×

जिसकी बुद्धि हर तरह निर्मोह है, जिसने अपने को जीत लिया है, जिसमें कोई इच्छा नहीं रह गई है, व उस निर्मल बुद्धि के साथऔर धीरज से अपने को सम्भाले हुए, विषयों से अलग रह कर न किसी से राग न किसी से द्वेष, एकान्त में रह कर थोड़ा भोजन करके, अपने मन, वचन और शरीर को वस में रख कर सच्चे वैराग्य के साथ, अपनी आत्मा में ध्यान लगा कर खुदी, जोर, घमण्ड, क्रोध माल जमा करना और 'मेरा तेरा, इस सब को छोड़कर शान्त होकर स्वयम ब्रह्मरूप हो जाता है। फिर न वह किसी चीज की चरचा करता है, न इच्छा उसका दिल फूल की तरह खिल जाता है, वह सब प्राणियों को एक निगाह से देखता है और परमेश्वर को ठीक ठीक जानकर उसी में लीन हो जाता है। (१८, ४९ से ५५)

—:o:—

म० बुद्ध के आदर्श उपदेश

अपना शुभ कार्य भली भाँति जानकर उसमें प्रवृत होना चाहिये। जिसका हृदय शुद्ध नहीं है उसका बाहर से भला होना किसी काम का नहीं। इसलिये तुम लोग क्रोध को छोड़ दो, मन को संयत रखो, मन का दुष्ट आचरण छोड़कर मन के द्वारा सत्कर्म करो। उसी को यथार्थ संयत कहते हैं जिसके मन, वचन और शरीर तीनों सुसंयत हैं।

❀ ❀ ❀

"प्रेम से क्रोध को, शुभ से अशुभ को, निःस्वार्थता से स्वार्थ को और सत्य-द्वारा असत्य को जीतो। जो तुम्हारी बुराई करे उस पर क्रोध न करके तुम उसके साथ प्रेम करो। तुम्हारी जो जितनी बुराई करे उसकी तुम उतनी ही भलाई करो।

❀ ❀ ❀

युद्ध में जो वीर एक लाख शत्रु-सेना पर विजय प्राप्त करे वह सच्चा विजयी नही है, किन्तु सच्चा विजयी तो वही है जो अपने मन को जीते।

❀ ❀ ❀

जो तुम्हारा दुश्मन है वह तुम्हारी कहाँ तक बुराई कर सकता है? सच पूछो तो तुम्हारा कुपथगामी मत ही तुम्हारा भारी से भारी अनिष्ट करता है। इसलिये तुम अपने घुमक्कड़ मन को रोककर वश में करो। तुम्हारा परम कल्याण होगा। सम्यक प्रकार से रोका हुआ मन ही सुख देता है। पाप और

पुण्य सब तुम्हारे हाथ में हैं। दूसरा कोई तुमको पवित्र नहीं कर सकता।

❀ ❀ ❀

हे गृही, तुम अपने घर को शुभ उज्जवल प्रकाश से प्रदीप्त करो निःसत्त्व बाहरी क्रिया-कलाप के द्वारा वह रक्षित नहीं हो सकता।

❀ ❀ ❀

हे गृहस्थो! तुम अपने माँ-बाप की सेवा करो, उनकी धन सम्पत्ति की रक्षा करो, सब प्रकार से उनके उत्तराधिकारी होने की योग्यता प्राप्त करो। और माता-पिता का परलोकवास होने पर श्रद्धा-सहित उनका स्मरण करो, ऐसा होने से तुम्हारा घर का एक भाग सुरक्षित होगा।

❀ ❀ ❀

जिन्होंने तुम्हारे ज्ञान-नेत्रों को खोला है उन गुरु को देखते ही खड़े हो जाओ, उनकी सेवा करो, उनकी आज्ञा का पालन करो, यथा साध्य उनकी कमी को दूर करो और वे जो कुछ उपदेश दें वह जी लगा कर सुनो। इससे तुम्हारे घर का दूसरा भाग कल्याण द्वारा रक्षित होगा।

❀ ❀ ❀

जो स्त्री तुम्हारी सहधर्मिणी, सहकर्मिणी और सहभोगिनी है उसका आदर करो, उससे कभी विश्वासघात न करो, ऐसी चेष्टा करो जिसमें वह तुम पर श्रद्धा रक्खे, उसको भूषण वस्त्र देकर सन्तुष्ट करो और अपने बेटे-बेटियों को पाप-कर्म्म से बचाये रक्खो। उन्हें धर्म, विज्ञान और शिल्प की शिक्षा दो, उनको

अपनी सम्पति का उपयुक्त अधिकारी बनाओ; उससे तुम्हारे घर का एक अन्य भाग कल्याण से सुरक्षित होगा।

❀ ❀ ❀

जो लोग तुम्हारे हितैषी, आत्मीय, स्वजन और मित्र हों उनके साथ अच्छी तरह बात चीत करो, उन्हें उपहार दो, उनका यथासाध्य उपकार करो, उनको अपनी बराबरी का समझो, उन्हें अपने धन का कुछ अंश दो, उनको कुमार्ग पर मत जाने दो, वे दरिद्र हो जाँय तो उन्हें आश्रय दो, उनके परिजनों के साथ सदय व्यवहार करो; ऐसा करने से तुम्हारे घर का और एक भाग मंगल से सुरक्षित होगा।

❀ ❀ ❀

जो दूसरों के हित।अपना सुख-सम्भोग त्याग दिये हों, जो निरपेक्ष भाव से सब जीवों की भलाई की कामना करते हों उन साधु-सज्जनों की मनसा वाचा, कर्मणा से सेवा किया करो, उनको भोजन-वस्त्र दो, अपने घर बुला कर श्रद्धा पूर्वक उनका आतिथ्य-सत्कार करो। ऐसा करने से तुम्हारे घर का एक और भाग महामंगल की छटा से जगमगा उठेगा।

❀ ❀ ❀

जो मन और शरीर से तुम्हारी सेवा करें, तुम्हारी प्रसन्नता के लिये सदा तत्पर रहें, उन दास-दासियों से उचित काम लो, भोजन-वेतन और पारितोषिक देकर उनका पालन करो; तुम जो कुछ भोजन करो उसका अंश उन्हें भी खाने को दो, बीच बीच में काम से छुट्टी देकर उन्हें सन्तुष्ट रक्खो और वे बीमार हों तो उनके औषधि पथ्य-पानी का प्रबन्ध कर दो। इससे

तुम्हारे घर का अवशिष्ट भाग मंगल से शोभित होकर सुरक्षित रहेगा।

❀ ❀ ❀

हे गृहस्थो, जो धर्म को हृदय से चाहेगा वही विजयी होगा; जो धर्म से घृणा करेगा वही पराजित होगा। दुर्जन जिसके प्रिय हैं, जो साधुओं के आचरण को त्यागकर दुर्जन का साथ देता है, उसका अवश्य पतन होता है। जो बहुत लोगों की संगति में रहकर निकम्मे की तरह उद्यमहीन और साहस हीन होकर जीवन बिताता है, और जो क्रोधी है, उसका पतन अवश्य होगा ही।

❀ ❀ ❀

जो धन-सम्पत्ति का अधिकारी होकर भी बूढ़े माँ-बाप का भरण-पोषण नहीं करता उसका पतन अवश्यम्भावी है।

❀ ❀ ❀

जो व्यक्ति साधु-सज्जनों को झूठ बोल कर ठगता है, उसका पतन होता है। जो स्वर्थी मनुष्य यथेष्ठ धन-धान्य का अधिकारी होकर भी समस्त सुख-सामग्री अकेले भोग करता है उसका अवश्य पतन होगा।

❀ ❀ ❀

धन के गर्व, कुल के अभिमान और वंश के गौरव से मदान्ध होकर जो अपने बन्धु बान्धवों से घृणा करता है उसका अवश्य पतन होता है।

❀ ❀ ❀

जो व्यक्ति व्यभिचार, मद्यपान और जुआ-बाजी में दिन-रात मस्त रहता है उसका पतन अवश्य होगा।

❀ ❀ ❀

जो अपनी धर्म पत्नी से उदासीन रह कर पराई स्त्री से स्नेह करता है, जो अपने थोड़े से धन से असन्तुष्ट होकर साम्राज्य पाने की तृष्णा रखता है, उसका अवश्य पतन होगा।

❀ ❀ ❀

न तो तुम कभी जीव हिंसा करना और न किसी से जीव-हिंसा करने को कहना और दूसरों की जीव हत्या का अनुमोदन भी न करना। क्या सबल क्या दुर्बल, सभी प्राणियों की हिंसा से बचे रहना।

❀ ❀ ❀

जो वस्तु तुम्हारी नहीं वह बिना दिये तुम स्वयं, या दूसरे की सहायता से, लेने की चेष्टा मत करना। सब प्रकार की चोरी से बचे रहना।

❀ ❀ ❀

ज्ञानी मनुष्य अजितेन्द्रियता को जलता हुआ अंगार समझ कर उससे बचे रहते हैं, अर्थात् वे इन्द्रियों के वशीभूत होकर कोई अनुपयुक्त-कर्म नहीं करते। यदि तुम अपनी प्रवृत्ति के ऊपर सम्पूर्ण रूप से विजयी न हो सको तो भी तुम व्यभिचार न करना।

❀ ❀ ❀

तुम स्वयं झूँठ न बोलना, न दूसरे को झूठ बोलने का आदेश देना। न मिथ्या भाषण के पक्ष का समर्थन करना। सब प्रकार की मिथ्या के सम्पर्क से बचे रहना।

❀ ❀ ❀

यदि सद्धर्म पर तुम्हारा तनिक भी अनुराग हो तो भूलकर भी मद्य मत पीना, दूसरे को मद्यमत पिलाना। कोई और पीता

हो तो उसका अनुमोदन न करना। मद्य-पान से उन्मत्त होकर कितने ही अज्ञानी मनुष्य नाना प्रकार के पाप कर बैठते हैं, वे लोग दूसरे को भी मद्य पिला कर पागल बना देते हैं। पाप की आवासभूमि पर सुरापान और उससे उत्पन्न मत वाला होना, असज्जन का ही प्रिय होता है, तुम इसका सर्वथा त्याग करो।

❀ ❀ ❀

तुम फूल माला न पहनना, सुगन्ध-वस्तु का व्यवहार, विलास के पीछे अपने को वरवाद मत करना।

❀ ❀ ❀

हे गृहस्थो, यदि तुम परम कल्याण प्राप्त करना चाहो तो वूढ़ों का आदर-सत्कार करो, दूसरे की वृद्धि देखकर कभी मन मलिन मत करो; धर्म से तुम्हें अह्लाद हो, धर्म में तुम्हारी प्रीति उपजे, धर्मज्ञान के लिए तुम्हारी उत्कंठा बढ़े, धर्म में ही तुम्हारा चित्त लगा रहे। धर्म के विरुद्ध कोई काम मत करो। ऐसा कोई काम कभी मत करो जिससे धर्म में किसी प्रकार का दाग लगे।

उस काम का करना अच्छा है, जिसे करके पीछे पछताना न पड़े और जिसका फल प्रसन्न-चित्त होकर भोगना पड़े।

❀ ❀

जब तक पाप कर्म फल नहीं देता तब तक मूर्ख आदमी उसे मधु की तरह मीठा समझता है, लेकिन जब पाप कर्म फल देता है, तब उसे दुःख होता है।

❀ ❀

पाप कर्म ताजे दूध की तरह तुरन्त विकार नहीं लाता। वह राख से ढकी आग की तरह जलाता हुआ मूर्ख आदमी का पीछा करता है।

❀ ❀

जो आदमी अपना दोष दिखानेवाले को भूमि में छिपे धन दिखानेवाले की तरह समझे, जो समय के समर्थक, मेधावी पंडित की संगति करे, उस आदमी का कल्याण ही होता है, अकल्याण नहीं।

❀ ❀

न दुष्ट मित्रों की संगति करे, न अधर्म पुरुषों की संगति करे। अच्छे मित्रों की संगति करे, उत्तम पुरुषों की संगति करे।

❀ ❀

जिस प्रकार ठोस पहाड़ हवा से नहीं डोलता, उसी प्रकार पंडित निन्दा और प्रशंसा से कम्पित नहीं होते।

❀ ❀

सत्पुरुष कहीं आसक्त नहीं होते। वह कामी लोगों की तरह बात नहीं बनाते। उन्हें चाहे दुःख हो चाहे सुख, पंडित जन व्यर्थ की बात नहीं बनाते।

❀ ❀

अधर्म से न अपने लिये पुत्र, धन या राष्ट्र की इच्छा करे (न दूसरे के लिये) जो अधर्म से अपनी उन्नति नहीं चाहता, वह सदाचारी है, प्रज्ञावान है, धार्मिक है।

❀ ❀

दूसरे को जीतने की अपेक्षा अपने को ही जीतना श्रेष्ट है। जिस आदमी ने अपने आप को दमन कर लिया है, जो अपने को नित्य संयत रखता है, वही श्रेष्ट है।

❀ ❀

जो अभिवादनशील है, जो नित्य बड़ों की सेवा करता है, उसकी आयु, वर्ण, सुख तथा बल में वृद्धि होती है।

❀ ❀

शुभ कर्म करने में जल्दी करे, पापों से मन को हटाये रहे शुभ कर्म करने में ढील न करे नही तो मन पाप में रत होने लगता है।

❀ ❀

यदि पाप करे तो उसे फिर न करे। उससे रत न होवे। पाप का सचय दुःख का कारण होता है।

❀ ❀

जो शुद्ध, निर्मल, दोष-रहित मनुष्य को ढोंगी ठहराता है, उस ढोंगी ठहराने वाले मूर्ख ही को पाप लगता है। जैसे हवा की दिशा के विरुद्ध फेकी हुई सूक्ष्म धूलि फेकने वाले पर ही पड़ती है।

❀ ❀

न आकाश में, न समुद्र की तह में, न पर्वतों के गहर में, संसार में कहीं कोई ऐसी जगह नहीं जहाँ रहने वाला मृत्यु से वच सके।

❀ ❀

सभी दंड से डरते हैं, सभी को जीवन प्रिय है। इसलिए सभी को अपने जैसा समझ कर न किसी को मारे न सतावे।

❀ ❀

सुख की चाह से जो दुखी है, चाहने वाले प्राणियों को डंडे से मारता है, वह मरकर भी सुख नहीं पाता है।

❀ ❀

किसी से कठोर बचन मत बोलो, दूसरे तुमसे कठोर बचन बोलेंगे। दुर्वचन दुःखदायी होते हैं। बोलने के बदले में तुम दंड पाओगे।

❀ ❀

चाबुक खाये उत्तम घोड़े की तरह प्रयत्न-शील और सवेग-युक्त बनो। श्रद्धा, शील, वीर्य, समाधि तथा धर्म-विनिश्चय से युक्त हो विद्यावान और आचारवान बन, स्मृति को साथ रख, उस महान दुःख का अन्त करो।

❀ ❀

सब कुछ जल रहा है, तुम्हें हँसी और आनन्द सूझता है? अन्धकार से घिरे रह कर भी तुम प्रदीप को नहीं सजाते।

❀ ❀

जिन्होंने ब्रह्मचर्य का पालन नहीं किया, जिन्होंने जवानी में धन नहीं कमाया, वह टूटे धनुप की तरह पुरानी बातों पर पछताते हुए पड़े रहते हैं।

* *

✓यदि पहले स्वयं वैसा करे, जैसा औरों को उपदेश देता है, तो अपने को दमन कर सकने वाला दूसरों को भी दमन कर सकता है। लेकिन अपने को दमन करना ही कठिन है।✓

× +

आदमी अपना स्वामी आप है, दूसरा कौन स्वामी हो सकता है? अपने को दमन करने वाला दुर्लभ स्वामित्व को पाता है।

× +

अशुभ और अपने लिये अहित-रक कार्यों का करना आसान है; लेकिन शुभ और हितकर कार्यों का करना कठिन है।

× +

यदि घर की छत ठीक न हो तो जिस प्रकार उसमें वर्षा का प्रवेश हो जाता है। उसी प्रकार यदि संयम का अभ्यास न हो, तो मन में राग प्रविष्ट हो जाता है।

+ +

शुभ कर्म करने वाला मनुष्य दोनों जगह आनंदित होता है, यहाँ भी और परलोक में भी। मैंने शुभ-कर्म किया है, सोच कर आनंदित होता है, सुगति को प्राप्त हो और भी आनन्दित होता है।

+ +

स्नान तो सभी लोग करते हैं, किन्तु पानी से कोई शुद्ध नहीं होता। जिसमें सत्य है और धर्म है, वही शुद्ध है।

× ×

अपने सुख को चाहते हुये जो दूसरों को लाठी से पीटता है वह दूसरे जन्म में सुख-लाभ नहीं करता।

× ×

पराधीनता में दुःख ही दुःख है, स्वाधीनता में सुख ही सुख।

× ×

जिसने काम रूपी कंटक, क्रोध और हिंसा, सभी को जीत लिया है, वह पर्वत के ऐसा अचल रहता है, उसको दुःख नहीं सताते।

× ×

जिसमें न माया है, न अभिमान, जो निर्लोभ, तथा स्वार्थ और तृष्णा से रहित है, जो क्रोध से रहित है और शान्त हो गया है, वही ब्राह्मण है।

× ×

वाणी तथा शरीर से किसी को दुःख न देना, भोजन में हिसाब रखना, योग चित को शिक्षित करना, यहीं महात्मा बुद्ध का उपदेश है।

जो हुये हैं और होंगे, सभी शरीर छोड़ कर अवश्य मर जायँगे। पंडित जन, इसे जान और समझ कर संसार से विरक्त रहें।

× ×

जो निद्राशील, भीरु प्रयत्न न करनेवाला, आलसी और क्रोधी है, वह उसके पतन का कारण है।

× ×

जो सामर्थ्य होने पर भी वृद्ध, माता-पिता का भरण-पोषण नहीं करता, वह उसके पतन का कारण होता है।

× ×

जो मनुष्य सोना-चाँदी आदि बहुत धन तथा खाद्य वस्तुओं से सम्पन्न होकर भी, अच्छी-अच्छी चीजें अकेला ही खाता है, वह उसके पतन का कारण होता है।

× ×

जो मनुष्य जाति में बड़े घर में जन्म लेने, धन और मान के कारण अपने जाति-बन्धुओं का अपमान करता है, वह उसके पतन का कारण होता है।

× ×

वेश्यागामी, शराबी तथा जुआरी मनुष्य को जो कुछ मिलता है वह नष्ट कर देता है, वह उसके पतन का कारण होता है।

× ×

जो मनुष्य अपनी स्त्री से सन्तोष न करके वेश्याओं से सम्बन्ध जोड़ता है और दूसरे की स्त्रियों को दूषित करता है वह उसके पतन का कारण होता है।

× ×

जो मष्नुय वृद्धावस्था में किसी युवती से शादी करता है और उसकी ईर्षा से सोता तक नहीं, वह उसके पतन का कारण होता है।

÷ ÷

जो मनुष्य दुर्व्यसनी तथा अज्ञान स्त्री या ऐसे ही पुरुष को अधिकार प्रदान करता है, वह उसके पतन का कारण होता है।

÷ ÷

जो गॉव और शहरों को घेरता है, नष्ट करता है और जिसे लोग डाकू कहते हैं उसे चांडाल जानो।

÷ ÷

जो गॉव में या जंगल में दूसरे की अपनाई वस्तु को चुराता है उसे चांडाल जानो।

÷ ÷

जो राही को रस्ता चलते उसे (थोड़ा भी तो मिलेगा) इस इच्छा से मार-पीट कर लूट लेता है, उसे चांडाल जानो।

÷ ÷

जो अपने लिये या दूसरों के लिये अथवा धन के लिये झूठी गवाही देता है उसे चांडाल जानो।

÷ ÷

जो बलप्रयोग या लालच देकर अपने जाति-बिरादर अथवा मित्र की स्त्री के साथ सम्बन्ध जोड़ता है उसे चांडाल जानो।

÷ ÷

जो माता-पिता, भाई बहन और सास आदि को मारता-पीटता है और गाली देता है उसे चांडाल जानो।

÷ ÷

जो हितकर बात पूछने पर अहितकर सलाह देता है और कपट भाव से मन्त्रणा करता है उसे चांडाल जानो।

÷ ÷

जो पाप करके 'मुझे कोई न जाने' ऐसी इच्छा करता है ऐसे गुप्त पाप कर्म करने वाले को चांडाल जानो।

— —

जो दूसरों के घर जाकर अच्छा-अच्छा खाना खाता है, किन्तु अपने घर आने पर आदर नहीं करता उसे चांडाल जानो।

÷ —

जो मोह में पड़कर तुच्छ हेतु-साधन के लिये असभ्य वचन बोलता है, उसे चांडाल जानो।

— ÷

जो अपनी प्रशंसा करता है और दूसरों की निन्दा तथा जो अपने इसी गर्व से अधम हो जाता है, उसे चांडाल जानो।

÷ ÷

कोई जन्म से चॉडाल नहीं होता है। ब्राह्मण कर्म ही से चाँडाल होता है और कर्म ही से ब्राह्मण।

÷ +

यदि विचरण करते हुए, अपने से श्रेष्ठ या अपने जैसा साथी को न पाये, तो आदमी दृढ़ता-पूर्वक अकेला ही रहे। मूर्ख आदमी की संगति अच्छी नहीं।

÷ ÷

'पुत्र मेरे हैं' 'धन मेरा है' यह सोच मूर्ख आदमी दुःख पाता है। जब शरीर तक अपना नहीं, तो कहाँ पुत्र और कहाँ धन।

÷ ÷

यदि मूर्ख आदमी अपने को मूर्ख ही समझे, तो उतने अंश में तो वह बुद्धिमान् है। असली मूर्ख तो वह है जो मूर्ख होते हुये अपने को बुद्धिमान् समझता है।

÷ ÷

तुम किसी बात पर केवल इसलिये विश्वास मत करो कि तुमने उसे किसी से सुना है, केवल इसलिये विश्वास मत करो कि वह बात बाप दादा से चली आई है, केवल इसलिये विश्वास मत करो कि उसके कहने वाले अनेक लोग हैं, केवल इसलिये विश्वास मत करो कि वह तुम्हारे धार्मिक ग्रन्थों में लिखी हुई है, केवल इसलिये विश्वास मत करो कि उसके कहने वाले तुम्हारे आदरणीय गुरुजन हैं, बल्कि हर बात को बुद्धि पूर्वक विचार कर देखो कि वह तुम्हारे तथा औरों के लिये कल्याण-कर है या नहीं ?

—:०:—

महात्मा विदुर के आदर्श उपदेश

आत्मा एक नदी है पुण्य उसका घाट है। सत्य उसका जल है। शील उसका किनारा है। दया उसकी लहर है। पुण्यात्मा उस नदी में स्नान करके पवित्र हो जाता है।

\+ +

जो मनुष्य बुद्धि में वड़े, आयु में वड़े, विद्या में वड़े, धर्म में वड़े, अपने भाई वन्धों को सब काम में पूछता है, सब काम में उसकी सम्मति लेता है, वह कभी नहीं भूलता। उसके किसी काम में भूल नहीं हो सकती।

\+ +

जो मनुष्य नम्रता वाले को और लज्जा से युक्त पुरुष को शक्ति हीन समझते हैं, उन्हें धमकाते हैं, वे मूर्ख हैं।

\+ +

सदा उद्यत रहना नियम से चलना, चतुराई से रहना, प्रमादरहित होना, धीरज रखना, विचार कर काम करना ये सब काम मनुष्य की उन्नति की जड़ है। तपस्वियों का वल तप है। ब्रह्मज्ञानियों का बल ब्रह्म है। दुष्टों का वल हिंसा है और गुणी का बल क्षमा है।

\+ +

धूर्त पर, आलसी पर, डरपोक पर, क्रोधी पर, घमंडी पर, कृतघ्न पर और नास्तिक पर विश्वास मत करो? किसी के साथ ऐसा बर्त्ताव न करे जो अपने आप को पसन्द न हो। देवता, ब्राह्मण, राजा, बालक बूढ़े और रोगियों पर क्रोध न करना

चाहिए। और यदि क्रोध आ ही जाय तो उसे रोकना चाहिए। वैर किसी से न करना चाहिए। वैर करने से दोनों लोकों में अपकीर्ति मिलती है।

\+ +

बुद्धि का मतलब यही नहीं है कि उससे केवल धन ही कमाया जाय। मूर्खता का केवल दरिद्रता ही मतलब नहीं है। इस संसार के फ़ेर-फार को विद्वान ही जानते हैं।

\+ +

मूर्ख सब की निन्दा ही किया करते हैं। चाहे कोई विद्या में, शील में, उम्र में बुद्धि में धन में, और कुलीनता में उससे बड़े ही क्यों न हों।

\+ +

दुराचारी, मूर्ख, चुगुलख़ोर, कड़वी बात कहने वाला और क्रोधी मनुष्य सदा अनर्थों से घिरा रहता है। उसे कभी सुख नहीं मिलता।

\+ +

व्यर्थ बात न करने वाला, चतुर, किये हुये उपकार को मानने वाला, बुद्धिमान और सरल मनुष्य चाहे निर्धन भी हो, पर तो भी वह दुःख से मुक्त हो जाता है।

\+ +

जिस प्रकार समिधाओं से अग्नि बढ़ती है, इसी प्रकार लक्ष्मी भी बढ़ती है। लक्ष्मी को बढ़ानेवाली समिधायें हैं—१ धैर्य, २ शान्ति, ३ इन्द्रियों का वश में रखना, ४ पवित्र

रहना, ५ दया, ६ कोमल वाणी, ७ किसी से द्रोह न करना, ८ साहस ।

\+ +

जो मनुष्य स्वयं दोषी होने पर भी अपने किसी निर्दोषी जन को दोष लगा कर क्रुद्ध करता है वह रात भर सुख से नहीं सोता। उसे रात दिन नींद नहीं आती। वह सदा ऐसा भयभीत रहता है कि जैसा साँप वाले घर में मनुष्य।

\+ +

जो मनुष्य समय के विरुद्ध बोलता है, अनावश्यक बात करता है, वह चाहे बुद्धि में बृहस्पति ही के समान क्यों न हो, पर तो भी उसका अनादर होता है।

\+ +

साधुजनों से, बुद्धिमानों से और पंडितों से कभी द्वेष नहीं करना चाहिये। अच्छे कामों से प्रीति और अशिष्ट कामों का त्याग करना चाहिये।

\+ +

जो पुरुष दरिद्र, दीन, दुःखी, भाई-बन्धु पर दया करता है, वह सदा सुख भोगता है। जो अपना भला चाहते हैं उन्हें अपने भाई-बन्धुओं का रक्षण-पालन करना चाहिये। भाई-बन्धुओं के बढ़ने से मनुष्य की वृद्धि होती है। इसी तरह आप भी अपने कुल की वृद्धि करें। जब आप अपने भाइयों का सत्कार करेंगे तभी आपको सुख चैन प्राप्त होगा।

\+ +

जो मनुष्य बुद्धिमानों के बचनों पर विचार करते हैं, उनके मतानुसार काम करते हैं, वे बहुत दिन तक यश पाते हैं।

\+ +

नम्रता से बुराई, पराक्रम से दरिद्रता क्षमा से क्रोध और सदाचार से समस्त बुरे लक्षण दूर हो जाते हैं।

× ÷

मन से, कर्म से या बचन से, जैसा कुछ काम मनुष्य करता है वैसा ही सुख भोगता है। इसलिये सुख चाहनेवालों को सदा शुभ काम करना चाहिये। क्योंकि शुभ कामो ही का फल शुभ होता है।

\+ +

रात-दिन परिश्रम में लगे रहना, लाभ के लक्षण हैं। निरन्तर काम में लगे रहने से मनुष्य की वृद्धि हो जाती है। प्रमादियों को, आलसियों को लक्ष्मी नहीं चाहती। जो लोग उत्साह-हीन होते हैं वे भी सदा निर्धन ही रहते हैं।

\+ ÷

कोमल स्वभाव, सबका भला चाहना, किसी का बुरा न चेतना, क्षमा करना, धैर्य रखना, किसी का तिरस्कार न करना, ये काम आयु को बढ़ाने वाले हैं।

× +

मित्र ऐसा चाहिये जो किये हुये उपकार को माननेवाला हो धर्मात्मा हो, सच्चा हो, गम्भीर हो जिसका दृढ़ प्रेम हो, जो

जितेन्द्रिय हो, जो अपनी अवस्था के अनुसार चाल-चलन रखता हो और जो मित्रता का प्रेमी हो।

+ +

मित्रता उन्हीं की ठीक और स्थायी होती है जिनकी बुद्धि, और मन मिलते हों। जिनके मन परस्पर नहीं मिलते, जिनकी बुद्धि समान नहीं उनकी मित्रता नहीं निभती। ऐसी मित्रता में कुछ सुख नहीं। दुर्बुद्धि और अज्ञानी पुरुष से बुद्धिमान मनुष्य को बचा रहना चाहिये। वे ऐसे हैं जैसे काँटों से ढका हुआ कुँआ।

+ ×

जो घमंडी हैं, जो मूर्ख हैं, जो काम को बहुत जल्दी से करते हैं, जो विचार शून्य तथा लम्पट हैं, उनसे सदा बचे रहना चाहिये। उनसे कभी मित्रता नहीं करनी चाहिये।

—:०:

म० भीष्म पितामह के आदर्श उपदेश

मन अनर्थयुक्त बुद्धि की प्रेरणा से पाप में फँसता है। अंत में निज कार्यों को कलुषित करके बड़ा दुःख भोगता है।

\+ +

जो लोग पाप करते हैं उन्हें एक न एक विपत्ति सदा घेरे ही रहती है, किन्तु जो पुण्यकर्म किया करते हैं वे सदा सुखी और प्रसन्न रहते हैं।

\+ +

जो पुरुष ब्रह्मलोक में वास करना चाहे वह वेद-शुश्रषु ब्राह्मणों को वेदाध्ययन करावे।

\+ +

जिसके चरित्र की परीक्षा न ली हो, उसे विद्या न पढ़ावे।

जैसे अग्नि में तपाने, काटने और घिसने से सुवर्ण की जाँच की जाती है, वैसे ही कुल, शील और गुणों को देखकर शिष्य की परीक्षा ले।

× ×

ब्राह्मण को आगे बैठाकर चारों वर्ण वेद सुन सकते हैं।

वेद पढ़ना बड़ा भारी काम है। देवताओं की स्तुति के निमित्त ही स्वयंभू ब्रह्मा ने वेदों का प्रादुर्भाव किया है।

× ×

जो लोग थोड़ी अथवा अधिक वस्तु दान करने का संकल्प करके फिर उसे नहीं देते उनकी सारी अभिलाषाएँ उसी

प्रकार नष्ट हो जाती हैं, जैसे नपुंसक पुरुष की पुत्र की अभिलाषा।

× ×

जीव जिस समय जन्मता और मरता है, इस बीच में वह जो कुछ पुण्य संचित करता है, उसका सारा फल उस समय नष्ट हो जाता है जब वह किसी वस्तु को देने की प्रतिज्ञा कर नहीं देता।

× ×

सत्य की महिमा

सहस्र अश्वमेधों का फल और अकेला सत्य तराजू पर तौला गया था, परन्तु अकेला सत्य उन सहस्र अश्वमेधों के फल से कहीं अधिक गुरु निकला।

× ×

सत्य ही से सूर्य तपता है, सत्य ही से अग्नि तपती है; सत्य ही से वायु बहती है, इसलिये सत्य ही से सब प्रतिष्ठित हैं।

× ×

सत्य से देवता प्रसन्न होते हैं और सत्य ही से पितर तथा ब्राह्मण प्रसन्न हुआ करते हैं।

❀ ❀

सत्य ही को ऋषि परम धर्म कहते हैं, इसलिये सदा सत्य बोलो।

❀ ❀

मुनि सत्य ही में रत हैं, मुनियों का सत्य ही विक्रम है; मुनियों की शपथ सत्य है; इसलिये सत्य ही सबसे विशिष्ट है।

❀ ❀

सत्यवादी मनुष्य स्वर्गलोक में आनंदित होता है। दम ही सत्य-फल की प्राप्ति का स्वरूप है।

❀ ❀

ब्रह्मचर्य-महिमा

जो पुरुष आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत धारण करता है उसके लिये कोई भी पदार्थ अप्राप्त नहीं है।

❀ ❀

ब्रह्मचारी, ऋषियों के बीच कई करोड़ वर्षों तक ब्रह्मलोक में निवास करता है।

× ×

सदा सत्य में रत, दांत, ऊर्ध्वरेता, विशेष कर ब्रह्मचर्य व्रत में निष्ठ, ब्राह्मण सब पापों को जला देता है; क्योंकि ब्राह्मण अग्नि-रूप कहे गए हैं।

× ×

ब्राह्मणों के तपस्वी होने पर यह प्रत्यक्ष दीख पड़ता है कि जिसके प्रभाव से इंद्र डरते हैं ऋषियों के उस ब्रह्मचर्य का फल इस लोक में दिखलाई पड़ता है।

× ×

माता-पिता की सेवा का फल

माता-पिता की सेवा करने से पुण्य होता है।

जो लोग पिता की सेवा करते हैं और उनके विषय में कभी असूया नहीं करते तथा माता या भ्राता, गुरु और आचार्य के विषय में पितृवत् व्यवहार करते हैं, उन्हें स्वर्गलोक में पूज्य पद मिलता है।

आत्मवान् पुरुष माता पिता एवं गुरु की सेवा के फल से कभी नरक नहीं देखता।

लोभी, क्रूर, कर्मत्यागी, धूर्त्त, शठ, नीचाशय, पापी, सब से सशंकित रहनेवाले, दीर्घसूत्री, गुरु की स्त्री हरने वाले, विपद् में पड़े भाई-बंधुओं को त्यागनेवाले, दुष्टात्मा, लज्जारहित, सब प्रकार के पापदर्शी, नास्तिक, वेदनिंदक, जन-समाज में स्वेच्छाचारी, इंद्रियों के वश में रहनेवाले, लोगों से द्वेष करनेवाले, कार्य्य के समय असावधान, चुगलखोर, नष्टबुद्धि, मत्सरी, अशुद्ध चित्तवाले, मित्रों से सदा असंतुष्ट रहनेवाले, सुरा पीनेवाले, शत्रुता करनेवाले, दयाशून्य, द्रोही, कृतघ्न, दोषान्वेषी, प्राणिहिंसा में रत पुरुष जन-समाज में अधम समझे जाते हैं, अतः ऐसे लोगों से कभी मित्रता न करे।

नीचे लिखे गुणों से युक्त पुरुषों के साथ अवश्य मित्रता करे—

१—सत्कुलोद्भव। २—मधुर-भाषी। ३—ज्ञान-विज्ञानवेत्ता। ४—रूपवान्। ५—गुणवान्। ६—अक्षुब्ध। ७—परिश्रमी। ८—कृतज्ञ। ९—सदा व्यायाम करनेवाले। १०—वंशधर। ११—धुरंधर। १२—दोषरहित। १३—जनसमाज में प्रसिद्ध। १४—शक्ति के अनुसार सदाचार-परायण। १५—अकारण क्रोध न करनेवाले। १६—अर्थ-कोविद। १७—स्वयं कष्ट सहकर मित्र का काम करनेवाले। १८—क्रोध अथवा लोभ के वशवर्ती होकर स्त्रियों को कष्ट न देनेवाले। १९—प्रसन्नचित्त। २०—विश्वासी। २१—धर्मात्मा। २२—सुवर्ण और ढेले को

समान समझनेवाले। २३—दृढ़बुद्धि। २४—विभूषण-त्यागी। २५—जन साधारण की भलाई में तत्पर। २६—शास्त्र में रत। २७—पराक्रमी। २८—शीलयुक्त।

लक्ष्मी का निवास उन पुरुषों में होता है जो निरालसी, कार्यदक्ष, क्रोधविवर्जित, देवताओं की आराधना में निष्ठावान, कृतज्ञ, जितेंद्रिय, उद्योगी पराक्रमी और विचारशील होते हैं।

× ×

जो लोग कार्य करने में असमर्थ हैं, नास्तिक हैं, वर्णसंकर हैं, कृतघ्न हैं, भिन्न चरित्रवाले हैं, निष्ठुर वचन बोलते हैं, चोरी करते हैं और गुरु की निंदा करनेवाले हैं, उनके समीप लक्ष्मी कभी नहीं जाती।

× ×

जो लोग अल्प पराक्रमी, अल्प बलवाले, अल्प बुद्धिवाले और अल्प मानयुक्त हैं, जो किसी विशिष्ट पुरुष को देखते ही क्रुद्ध और दुःखी होते हैं, जो एक विषय की चिंता करते करते विषयांतरों के विचार में लग जाते हैं उन लोगों के पास लक्ष्मी देवी कभी नहीं जातीं।

× ×

जो पुरुष अपनी उन्नति की किसी प्रकार भी चिंता नहीं करते, जिनका अंतरात्मा स्वभाव ही से उपहत हुआ है, उन अल्प संतोषी मनुष्यों के पास भली भाँति लक्ष्मीजी नहीं रहतीं।

× ×

स्वधर्म में निष्ठावाली धर्मज्ञा, वृद्धों की सेवा में लगी हुई, दाता, कृतात्मा, क्षमाशीला; सत्वभाव-संपन्ना, सरला, देव-ब्राह्मणों को पूजनेवाली स्त्रियों के पास लक्ष्मी सदा रहती हैं।

× ×

किंतु जिसके घर की सामग्री इधर उधर बिखरी रहती है, जो बिना विचारे काम करती है, जो सदा पति के विरुद्ध बोलती है; जो पराए घर में वास करने में अनुरक्त तथा लज्जा-हीना होती है, लक्ष्मी ऐसी स्त्रियों को छोड़ देती है।

× ×

पतिव्रता, कल्याणशीला, विभूषिता, सत्यवादिनी, प्रिय-दर्शना, सौभाग्ययुक्त और गुणमयी स्त्री पर कमला देवी सदा सुप्रसन्न रहती हैं।

× ×

दया-रहित, अपवित्रा और सदा शयन करनेवाली स्त्री की ओर भगवती लक्ष्मी देखती भी नहीं।

× ×

सब प्रकार के वाहन, कन्या, विभूषण, यज्ञस्थान, वृष्टियुक्त मेघ-मंडल, फूले हुए कमलदल, शरत्काल के नक्षत्र, गजयूथ, गोसमूह और कमलयुक्त सरोवर, सारांश यह कि समस्त रमणीक वस्तुओं में श्रीलक्ष्मी जी का वास है।

× ×

हंस और सारस आदि पक्षियों के कलरव से कूजित वृक्षों से शोभित, तपस्वी ब्राह्मणों से निषेवित, अधिक जलयुक्त,

सिंह तथा हाथियों से परिपूरित नदियों में लक्ष्मीजी सदा निवास करती है।

❀ ❀

मतवाले हाथी, गौ, बैल, राजसिंहासन, सत्पुरुष, अग्नि-होत्र के स्थान भी लक्ष्मी के निवासस्थान हैं।

❀ ❀

सदा स्वाध्याय में रत ब्राह्मण, सदा धर्म में तत्पर रहनेवाले क्षत्रिय, कृषि-कार्य में संलग्न वैश्य और नित्य सेवा करनेवाले शूद्र लक्ष्मीजी के कृपापात्र हैं।

× ×

जो मनीषी हैं, वे स्तुति से न तो प्रसन्न होते और न निन्दा से अप्रसन्न ही होते हैं। जो लोग उनके निंदक अथवा प्रशंसक होते हैं, वे ऐसों के आचार व्यवहारों को छिपाकर रखते हैं। वे पूछने पर भी अहितकर विषय के संबंध में हितकारी पुरुष से कुछ नहीं कहते और जो उनके ऊपर आघात करते हैं, उनसे वे बदला लेने की भी इच्छा नही रखते।

❀ ❀

ऐसे लोग अप्राप्त वस्तुओं के लिये दुःख न करके समय पर प्राप्त हुई वस्तु ही से काम चला लिया करते हैं। बीती हुई बातों के लिये न तो वे दुःखी होते और न उनका स्मरण करते हैं!

× ×

जिन्होंने क्रोध को जीत लिया है अथवा जिनका ज्ञान परिपक्व हो गया है, वे जितेंद्रिय महाप्राज्ञ पुरुष मन वचन और कर्म से किसी का अनिष्ट नहीं करते।

ऐसे लोग ईर्ष्या-रहित होते हैं और कभी किसी का मन नहीं दुखाते।

❀ ❀

धीर लोग दूसरों की बढ़ती देख कभी नहीं जलते। जो लोग दूसरों की निंदा अथवा प्रशंसा नहीं करते वे अपनी निंदा से न तो चिढ़ते हैं और न अपनी प्रशंसा सुन प्रसन्न ही होते हैं।

❀ ❀

जो लोग सब प्रकार से शांत हैं, और प्राणीमात्र की भलाई में लगे हुए हैं, वे क्रोध अथवा हर्ष को अपने पास नहीं फटकने देते।

❀ ❀

जिनका कोई बांधव नहीं है और जो किसी के बंधु नहीं हैं, उनका न तो कोई शत्रु है और न वे किसी के शत्रु हैं। ऐसे मनुष्यों के मन में किसी प्रकार की गाँठ नहीं पड़ती और वे सुखपूर्वक विचरते हैं।

× ×

हे द्विजोत्तम! जो धर्मानुरागी हैं, वे ही सुखी हैं और जो धर्ममार्ग से च्युत हैं, वे ही दुखी हैं और उन्हीं का मन सदा उद्विग्न रहता है।

❀ ❀

धर्म ऐसी अमूल्य वस्तु है कि जो इसे ग्रहण करता है, उसे किसी वस्तु का अभाव नहीं रहता।

× ×

निंदा से न तो मेरी कुछ हानि हो सकती है और न प्रशंसा से मुझे कुछ लाभ ही हो सकता है।

❀ ❀

जो तत्त्ववेत्ता हैं, वे अपमान को अमृत समझकर तृप्त होते हैं और सम्मान को विष समझकर उद्विग्न होते हैं।

× ×

अवज्ञात लोग सब झंझटों से छुटकारा पाकर इस लोक और परलोक में सुख से सोते हैं और जो दूसरों का अपमान करता है वह स्वय नष्ट होता है।

× ×

जो बुद्धिमान् लोग परमगति की इच्छा करें उन्हें उचित है कि वे इस व्रत को धारण करें। इससे अनायास ही उनकी बढ़ती होती है।

× ×

जितेंद्रिय पुरुष परमश्रेष्ठ नित्य ब्रह्मधाम को पाते हैं और जो लोग परमपद के अधिकारी होते हैं, उनका अनुसरण देवता गंधर्व, पिशाच अथवा राक्षस कभी नही कर सकते।

—:o:—

महर्षि व्यास के आदर्श उपदेश

अठारह पुराण पढ़कर मुझे दो बातें हाथ लगी हैं, एक तो परोपकार करना धर्म है, दूसरे किसी को दुःख देना पाप है।

इन्द्रियों को रोकने के सिवाय आत्मा की उन्नति का दूसरा उपाय नहीं है। विषयों की ओर जाती हुई इन्द्रियों को वश में रखने से अध्यात्माग्नि प्रज्वलित हो उठती है। जिस प्रकार ईंधन के जलने से अग्नि चमक उठती है उसी प्रकार इन्द्रियाँ निरोध से महानात्मा प्रकाशित होता है।

❀ ❀

लोक गार्हस्थ्य और मनुष्य के लिये महापुरुष के मन में श्रद्धा है, जिसका दृष्टिकोण इन विषयों में इतना मँजा हुआ है, उसका अध्यात्मशास्त्र भी तदनुकूल ही मानव को साथ लेकर चाहता है।

❀ ❀

आत्मनिरोध के द्वारा जो व्यक्ति जीवन में अपना मार्ग विषयों से भरे हुये जंगल में स्वयं निश्चित करता है, वह अपना ज्ञान औरों पर नहीं बघारता बल्कि अपने आचार से औरों को उपदेश देता है।

❀ ❀

इन्द्रियों के निरोध और आत्म-चिन्तन से आत्म ज्योति को इसी शरीर में प्राप्त कर ले। यह शरीर मूँज घास है, आत्मा उसके भीतर की सींक है। जिस प्रकार मूँज से सींका निकाली जाती है, वैसे भोगवेत्ता शरीर में आत्मा का साक्षात्कार करते हैं।

❀ ❀

धर्म स्वर्ग से महान् है। लोकस्थित का सनातन बीज धर्म है। इस दृष्टि से देखने पर धर्म गंगा के ओजस्वी प्रवाह की तरह जीवन के सुविस्तृत क्षेत्र को सिंचित और पवित्र करने-वाला अमृत बन जाता है। राजाओं की जय और पराजय आने जाने वाली चीज है, जीवन में सुख और दुःख भी जो सदा एक से नहीं रहते, पर सम्पत्ति और विपत्ति में जो वस्तु एक-सी बनी रहती है वह धर्म है।

❀ ❀

काम से, भय से, लोभ से, यहाँ तक कि प्राणों के लिये भी धर्म को छोड़ना ठीक नहीं। क्योंकि धर्म नित्य है, सुख और दुःख क्षणिक है। इसी तरह जीव भी नित्य है, जन्म और मृत्यु अनित्य है। धर्म से ही धन और काम मिलते हैं, उस धर्म का आश्रय क्यों नहीं लेते ?'

❀ ❀

यदि धर्म जीवन को धारण करने वाला है और धर्म अच्छी चीज है तो जीवन भी मूल्यवान् होना चाहिए।

—:o:—

८० चाणक्य के आदर्श उपदेश

चिरजीवी मूर्ख पुत्र का तो जन्मते ही मर जाना अच्छा, क्योंकि मरने पर तो एक ही बार दुःख होता है और जीता रहा तो सारी उम्र दुःख देगा।

❀ ❀

कुगाँव में रहना, नीच कुल की टहल, बुरा भोजन, कर्कशा स्त्री, मूर्ख पुत्र, विधवा लड़की; ये छः बिना आग ही शरीर को जलाया करते हैं।

❀ ❀

स्त्री वही है जो चतुर, पवित्र, और पतिव्रता हो। स्त्री वही है जिस पर पति का प्यार हो और जो सदा मृदु भाषिणी हो।

❀ ❀

समय कैसा है? मित्र कौन है? देश कैसा है? लाभ व्यय क्या है? मैं किसका हूँ या कैसा हूँ? और मेरा क्या बल है? ये सब बातें मनुष्य को बार-बार विचारना चाहिए।

❀ ❀

विदेश में विद्या ही मित्र है, घर में स्त्री मित्र है, रोगी का मित्र औषध है और मर जाने पर धर्म मित्र है।

× ×

राजा की स्त्री, गुरु की स्त्री, मित्र की स्त्री, सास और जननी ये पाँच माताओं के समान हैं।

× ×

शास्त्र के सुनने ही से मनुष्य धर्म जानता है और उसी से बुद्धि सुधरती है। उसीसे पाता है ज्ञान और मोक्ष।

× ×

"राजा, ब्राह्मण और योगी तो भ्रमण करने से पूजित होते हैं और स्त्री भ्रमण करने से नष्ट हो जाती है",

× ×

जिसके पास धन है वही मित्रवाला है, उसी के बान्धव होते हैं और वही पुरुष होता है और पंडित भी वही गिना जाता है।

× ×

जो होनहार होता है वैसी ही उसकी बुद्धि हो जाती है, वैसा ही उपाय होता है और वैसे ही सहायक मिल जाते हैं।

× ×

दुष्ट राजा के राज में सुख कहाँ? कुमित्र की मित्रता में आनन्द कहाँ? दुष्ट स्त्री से घर में सुख कहाँ? और कुशिष्य के पढ़ाने में यश कहाँ?

× ×

अपने धन का नाश, मन का ताप, स्त्री का चरित्र, नीच का वचन और अपना अपमान कभी किसी से न कहे।

× ×

अन्न और धन के व्यापार में, विद्या पढ़ने में, भोजन में, व्यवहार में जो मनुष्य लज्जा नहीं करता वह सुखी रहता है।

× ×

स्त्री में, धन में और भोजन में सन्तोष करना चाहिए और पढ़ने में, जप में, दान में और दूसरों की सेवा करने में कभी सन्तोष न करे।

❀ ❀

भोजन के समय ब्राह्मण, बादलों के गर्जने पर मोर, दूसरों का वैभव देखकर सज्जन और पराये दुःख को देखकर दुर्जन प्रसन्न होते हैं।

❀ ❀

अधम जन केवल धन चाहते हैं और मध्यम जन धन और मान परन्तु उत्तम जन केवल मान चाहा करते हैं। महात्माओं का मान ही धन है।

❀ ❀

दीपक अँधेरे को खा जाता है इसीलिये उससे काजल पैदा होता है। बात यह है कि जो जैसा अन्न खाता है उसकी सन्तान भी वैसी ही होती है।

❀ ❀

बुढ़ापे में स्त्री का मर जाना, पराये हाथ मे गया धन और पराधीन भोजन, ये तीन काम बड़े दुःखदायी होते हैं।

कोई कितना सुन्दर क्यों न हो, कोई कैसा ही युवक क्यों न हो, और कितने ही उच्च कुल में क्यों न पैदा हुआ हो, यदि वह विद्याहीन है तो किसी काम का नहीं। वह ढाक के निर्गन्ध फूल की तरह व्यर्थ है।

❀ ❀

विद्यार्थी, सेवक, यात्री, भूखा, भयभीत, भंडारी और द्वारपाल, इन सातों को यदि सोते हों तो जगा देना चाहिये। इनके जगाने में कुछ बुराई नहीं।

× ×

साँप, राजा, सिंह बर्रे, बालक दूसरे का कुत्ता और मूर्ख, इनको नहीं जगाना चाहिये। इनके जगाने से हानि ही होती है।

× ×

धन से हीन, हीन नही हैं, पर जो विद्या से हीन है वह सब बातों से हीन है।

× ×

देख-भालकर पाँव रखना चाहिए, वस्त्र से छान कर जल पीना चाहिए, सत्य से शोध कर वचन बोलना चाहिए, और मन से सोच कर कार्य करना चाहिए।

× ×

सुख की इच्छा हो तो विद्या को छोड़ दे और विद्या की चाह हो तो सुख की परवाह न करे। सुखार्थी को विद्या कहाँ और विद्यार्थी को सुख कहाँ ?

× +

बन में शेर और बडे-बडे जंगली हाथियों के बीच रहना, बन के फल खाना और जल पीना, और सैकड़ों छेदवाले बल्कलों का पहनना अच्छा पर भाई-बन्दों के बीच में धनहीन पुरुष का जीना अच्छा नहीं।

× ×

काम, क्रोध, लोभ, रसना शृङ्गार, अधिक खेल, अधिक सोना और अधिक वाद विवाद, इन आठों दुर्गुणों को विद्यार्थी छोड़ दे।

❀ ❀

लड़के पंडित हों, स्त्री मीठी बात बोलती हो, यथेष्ठ धन पास हो, अपनी ही स्त्री में प्रीति हो, सेवक आज्ञाकारी हों, अतिथि और भगवान् की सेवा-पूजा होती हो, प्रतिदिन मीठा अन्न और जल मिलता हो और सदा सत्सङ्ग होता हो ऐसा गृहस्थाश्रम धन्य है।

❀ ❀

शरीर नाशवान है। सम्पत्ति भी सदा नहीं रहती और मौत सदा साथ ही रहती है। इसलिए धर्म का संग्रह करना चाहिए।

❀ ❀

जो मनुष्य दूसरे की स्त्री को माता के समान, दूसरे के धन को ढेले के समान और सब प्राणियों को अपने समान देखता है, वही परमात्मा को देख सकता है।

❀ ❀

जो पुरुष बिना विचारे खर्च कर डालता है, सहायक के न रहने पर भी लड़ाई-झगड़ा कर बैठता है और पराई स्त्रियों को बुरी दृष्टि से देखता है, वह जल्द नष्ट हो जाता है।

❀ ❀

जैसे क्रम-क्रम से एक-एक बूँद पानी से घड़ा भर जाता है वैसे ही थोड़ा-थोड़ा करके विद्या, धन और धर्म भी इकट्ठा हो सकता है।

मनचाहा सुख किसको मिलता है? किसी को नहीं। यह सब दैव आधीन है। इसलिए सन्तोष रखना चाहिए।

÷ ÷

पृथ्वी में तीन रत्न हैं—जल, अन्न और प्रिय-वचन; पर मूर्खों ने जड़ पदार्थों के टुकड़ों का नाम रत्न रख छोड़ा है।

\+ −

धन, मित्र, स्त्री और पृथ्वी बार-बार मिल सकती है, पर यह मनुष्य-शरीर बार-बार नहीं मिलता।

\+ −

जीना उसी मनुष्य का सफल है जो गुणी और धर्मात्मा हो। गुण-धर्म से हीन मनुष्य का जीना व्यर्थ है।

− +

खल और काँटे से बचने के दो ही उपाय हैं। एक तो जूते से उनका मुँह रगड़ना या उनसे दूर रहना।

× ×

मैले कपड़े पहनने वाले को, जिसके दाँतों में मैल भरा रहता हो उसको, बहुत खाने वाले को, कठोर वाणी बोलने वाले को, सूर्य के निकलते और छिपते समय सोने वाले को लक्ष्मी छोड़ देती है, चाहे वह साक्षात् विष्णु ही क्यों न हो।

\+ +

अन्याय से कमाया हुआ धन अल्पकाल तक ठहरता है।

\+ +

गुणों के कारण मनुष्य उत्तम और ऊँचा गिना जाता है। ऊँचे आसन पर बैठने से उत्तम नहीं होता। मंदिर की चोटी पर बैठा हुआ कौआ क्या गरुड़ हो सकता है?

\+ +

मान भङ्ग होने से मरना अच्छा है। मरने से एक बार दुःख होता है और मान के नाश होने पर जीवन पर्यन्त।

\+ +

मीठा बोलने से सबको सुख होता है। इसलिए मीठी बात ही कहनी चाहिए। बचन में दरिद्रता क्या?

❀ ❀

संसार-रूपी वृक्ष बड़ा कड़ुवा है, पर इसके दो फल बड़े मीठे हैं। एक रसीला मीठा वचन, दूसरा सज्जनों की संगति।

❀ ❀

अन्न और जल के समान कोई दान नहीं है; गायत्री से बढ़कर कोई मन्त्र नहीं है और माता से बढ़कर कोई देवी नहीं।

❀ ❀

साँप के दाँत में, मक्खी के सिर में और बिच्छू की पूँछ में विष रहता है; पर दुर्जन का सारा शरीर विष से भरा रहता है।

\- -

हाथ की शोभा दान से है, कंकन से नहीं। शरीर स्नान से शुद्ध होता है, चन्दन से नहीं। तृप्ति सम्मान से ही होती है,

भोजन से नहीं। मुक्ति ज्ञान से ही होती है, छापा-तिलक आदि से नहीं।

× ×

जिन सज्जनों के हृदय में परोपकार रहता है, उनकी विपत्ति नष्ट हो जाती है। उनको पद-पद पर सम्पत्ति मिलती है। खाना, सोना, डर आदि बातें पशुओं और मनुष्यों मे समान ही होती हैं, पर मनुष्यों में केवल ज्ञान ही की विशेषता है। जिनमें ज्ञान नहीं वे पशु के समान हैं।

- -

निर्बुद्धि शिष्य को पढ़ाने से, दुष्ट स्त्री को प्यार करने से और दुखियों के साथ कारबार करने से पंडितजन भी दुःख ही पाते हैं।

❀ ❀

दुष्ट स्त्री, शठ मित्र, जवाब देनेवाला नौकर और सॉपवाला घर, ये चारों मृत्युरूप ही समझना चाहिए।

❀ ❀

विपत्ति काल का निवारण करने के लिए धन जरूर इकट्ठा करना चाहिए, क्योंकि बड़े-बडे धनाढ्यों को भी आपत्ति आ जाया करती है। यह लक्ष्मी बड़ी चंचल है; इसलिये यह खूब इकट्ठी होकर भी नष्ट हो जाती है।

❀ ❀

जिस देश में अपना आदर-सम्मान न हो, जहॉ जीविका न हो और जहॉ न अपने भाई-बन्धु हों और जहॉ किसी प्रकार की विद्या का भी लाभ न हो वहॉ नहीं रहना चाहिए।

जीविका, भय, लज्जा, चतुराई और दान करने की प्रथा, जहाँ ये पाँच न हों वहाँ के लोगों के साथ कभी मित्रता नही करनी चाहिए।

× ×

भारी काम आ पड़ने पर नौकरों की, दुःख आ पड़ने पर भाई-बन्धुओं की, विपत्तिकाल में मित्र और सम्पति के नाश हो जाने पर स्त्री की परीक्षा होती है।

× ×

सच्चा भाई-बन्धु वही है जो दुखी होने पर, किसी व्यसन में फँस जाने पर, दुर्भिक्ष पड़ने पर, शत्रुओं से लड़ाई-झगड़ा हो जाने पर, राजदरबार में और श्मशान पर साथ दे।

— —

जिसका पुत्र वश मे रहता है, जिसकी स्त्री इच्छानुसार काम करने वाली होती है, और जो सन्तोष रखता है, उसके लिए यही स्वर्ग है।

— —

पुत्र वही जो पिता का भक्त हो; पिता वही जो पुत्रों का पालन करे, मित्र वही जिस पर विश्वास हो; स्त्री वही जिससे सुख मिले।

— —

जो सामने तो मीठी-मीठी बातें बनावे और पीठ-पीछे काम बिगाड़े, ऐसे नाम मात्र के मित्र को उस घड़े के समान समझे जिसमें भीतर तो विष भरा है और मुँह पर दूध भरा हो। ऐसे मित्र को छोड़ देना चाहिए।

मूर्खता से दुःख मिलता है। जवानी भी दुःख देनेवाली है, परन्तु दूसरे के घर रहना बहुत ही दुःखदायी है।

— —

वे माता-पिता बैरी हैं जिन्होंने अपने बालकों को नहीं पढ़ाया। वे मूर्ख बालक पंडित-सभा में ज़रा भी शोभा नहीं पाते। वे ऐसे हैं जैसे हंसों में बगुला।

— —

कुछ न कुछ प्रति दिन पढ़ना चाहिए—चाहे एक श्लोक या आधा ही श्लोक पढ़े। पढ़ने और दान देने आदि अच्छे कामों से कोई दिन खाली न जाने दे। थोड़ा-थोड़ा प्रति दिन करने से भी कुछ दिन में बहुत इकट्ठा हो जाता है।

— —

नदी के किनारे पर लगे हुए वृक्ष, दूसरे के घर अधिक जाने वाली स्त्री और बिना योग्य मंत्री के राजा अवश्य नष्ट हो जाते हैं।

— —

जैसे आग से जलते हुए एक ही वृक्ष से सारा वन जल कर भस्म हो जाता है, वैसे ही कुपुत्र से कुल।

— —

पाँच वर्ष तक पुत्र को प्यार करे, फिर दस वर्ष तक ताड़न करे और सोलह वर्ष का हो जाय तब उससे मित्र के समान वर्ताव करना चाहिए।

❀ ❀

इतनी जगहों से भाग जाने वाला जीता रह सकता है। उपद्रव उठने पर, शत्रु के आक्रमण करने पर, घोर दुर्भिक्ष पड़ने पर, और दुष्ट के साथ हो जाने पर।

❀ ❀

जहाँ सज्जनों की पूजा होती है, जहाँ अन्न का ढेर रहता है और जहाँ स्त्री-पुरुषों में कलह नहीं होती वहाँ सदा लक्ष्मी विराजमान रहती है।

❀ ❀

आयु, कर्म, धन, विद्या और मृत्यु ये पाँचों चीजें प्राणी के लिए गर्भ में ही नियत होती हैं। जब तक मौत नहीं आती और जब तक शरीर नीरोग है तब तक उत्तम काम कर लेने चाहिए। नहीं तो मरने पर पछताने के सिवा कुछ हाथ न लगेगा।

+ +

एक ही गुणी पुत्र अच्छा, निर्गुणी सैकड़ों किसी काम के नहीं। देखो अकेला चन्द्रमा सारा अन्धेरा दूर कर देता है, हजारों तारों से कुछ भी नहीं हो सकता।

+ +

कन्या को अच्छे कुल में देना चाहिए, पुत्र को विद्या में लगाना चाहिए, मित्र को सदा धैर्य का उपदेश देना चाहिए।

+ +

दुर्जन और साँप इन दोनों में साँप अच्छा है, दुर्जन नहीं। क्योंकि साँप तो एक ही बार काटता है और दुर्जन पद-पद पर।

+ +

कोयल की मीठी वाणी से, स्त्री की पति-सेवा से, कुरूपों की विद्या से और तपस्वियों की क्षमा से शोभा होती है।

÷ –

उपाय करने से दरिद्रता नहीं रह सकती, पश्चात्ताप करने वाला पाप नहीं करता, मौन रहने से लड़ाई नहीं होती और जागते हुए को किसी का डर नहीं रहता।

\+ +

—:o:—

महात्मा भर्तृहरि के आदर्श उपदेश

मूर्ख मनुष्य यदि कोई बुरा काम करने लगता है, तो बुद्धिमान-विद्वान् मनुष्य उसे युक्ति और तर्क-वितर्क से समझा-बुझा कर अच्छे रास्ते पर ला सकते हैं। यदि कोई बुद्धिमान मनुष्य प्रमाद या भ्रम-वश खोटे रास्ते पर चलने लगता है, तो उसे ज्ञानवान मनुष्य बहुत ही आसानी से कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर ला सकता है; किन्तु जो न तो बिल्कुल मूर्ख ही है और न बिल्कुल पण्डित ही वह थोड़ा जाननेवाला, मूर्ख और पण्डित की बीच की अवस्था का मनुष्य, ब्रह्मा के समझाने-बुझाने से भी असत्मार्ग को छोड़कर सत्-मार्ग पर नहीं आ

सकता। जब ब्रह्मा ही अल्पज्ञ मनुष्य को समझाकर सुमार्ग पर लाने में असमर्थ है, तब मनुष्यों से क्या हो सकता है ?

× ×

यह बात असम्भव है, कि कोई मनुष्य मगर के दाँतों से मणि को निकाल सके; यह भी असम्भव है कि कोई लहरों से उथल-पुथल समुद्र को अपनी भुजाओं के बल से तैर कर पार कर सके। यह भी अनहोनी बात है, कि कोई काले भुजङ्ग को फूल की भाँति सिर पर धारण कर सके। सम्भव है, कि उपरोक्त तीनों असम्भव काम सम्भव हो जायँ अर्थात् कोई मनुष्य उन तीनों कामों को किसी भाँति कर भी सके; लेकिन यह बिल्कुल अनहोनी बात है कि, उक्त तीनों कामों की शक्ति रखनेवाला मनुष्य भी मूर्ख को उसके असत् मार्ग की जिद से हटाकर सत्-मार्ग पर ला सके।

❀ ❀

बालू में तेल नहीं होता। हजार उपाय करने से भी उसमें से तेल नहीं निकल सकता। शायद कोई मनुष्य इस असम्भव को सम्भव कर सके। मृगतृष्णा से किसी की प्यास नहीं बुझती, लेकिन कदाचित् कोई मनुष्य ऐसा कर सके। ख़रगोश के सींग होते ही नहीं, फिर तलाश करने से कहाँ से हाथ आ सकते हैं ? किन्तु शायद कोई आदमी घूम-फिरकर और ढूँढ़-ढाँढ़ कर ख़रगोश का सींग भी ले आवे। ये तीनों काम असम्भव हैं। इन असम्भवों को सम्भव करनेवाले मनुष्य तो पृथ्वी पर मिल भी जायँ; किन्तु हठ पर चढ़े हुए मूर्ख को हठ से हटानेवाला मनुष्य मिलना बिल्कुल ही असम्भव है।

कमल की डण्डी के सूत से हाथी नहीं बाँधा जासकता; सिरस के फूल की पंखुरी से हीरे में छेद नहीं किया जासकता और एक बून्द मधु से समुद्र-जल मीठा नहीं हो सकता। ये तीनों असम्भव बातें हैं। इन तीनों की भाँति ही मूर्ख को सदुपदेश द्वारा कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर लाना भी असम्भव ही है।

\- \-

विद्वानों की मण्डली में यदि मूर्ख आदमी कुछ न बोले, चूप्पी साधे रहे, तो उसकी मूर्खता किसी को मालूम नहीं हो सकती। बोलने से तो लोग उसकी मूर्खता का पता पा जाते हैं; अतः मूर्खता छिपाने के लिये "मौन" ही परमास्त्र है।

\- \-

मनुष्य जब इधर-उधर से कुछ जान लेता है, लेकिन पूर्णतया किसी विषय को नहीं जानता, तब उसे अल्पज्ञ कहते हैं। अल्पज्ञ (अधकचरा) मनुष्य मनमें यही समझता है कि मैं ही सब कुछ जानता हूँ, मुझसे अधिक जाननेवाला और नहीं है। उस अवस्था में उसे घमण्ड हो जाता है। यदि दैवात वह किसी विद्वान् की सुहबत में जा पड़ता है और वह उसकी विद्वत्ता बुद्धिमत्ता आदि को देखता है तब समझने लगता है कि, मैं तो कुछ भी नहीं जानता। ऊँट जबतक पहाड़ के नीचे नहीं जाता, तब तक वह अपने तईं पहाड़ से भी ऊँचा समझता है; किन्तु जब उसके नीचे जाता है, तब उसका अभिमान किरकिरा हो जाता है।

\+ \+

कुत्ता मनुष्य के कीड़ों से भरे हुए, लार से भीगे हुए, बदबूदार, निन्दित, नीरस और बिना माँस के हाड़ को प्रेम से चबाता

है। अगर उस समय उसके पास इन्द्र भी खड़ा हो, तोभी उसे शर्म नहीं आती। इससे यह साबित होता है कि, नीच जीव जिस चीज को ग्रहण कर लेता है, उसकी निस्सारता और सफाई आदि पर ध्यान नहीं देता।

× ×

जलसे आग बुझाई जा सकती है। छाते से धूप का बचाव किया जा सकता है। तीक्ष्ण अङ्कुश से हाथी रोका जा सकता है। डण्डे से दुष्ट बैल और गधा सीधा किया जा सकता है। तरह-तरह की औषधियों से रोग निर्मूल किया जा सकता है। नाना प्रकार के यन्त्रों से जहर उतारा जा सकता है। मतलब यह है कि, शास्त्र में सब का इलाज है; परन्तु मूर्ख का इलाज कहीं नहीं है।

\+ +

जिनमें न विद्या है, न तप है, न ज्ञान है, न शील है, न गुण है और न धर्म है, वे मनुष्य पृथ्वी पर भार-रूप साक्षात् पशु हैं। बात इतनी ही है कि, वे मनुष्य-रूप में मृगों की भाँति पृथ्वी पर घूमते हैं।

– –

पहाड़ और जङ्गलों में सिंह व्याघ्र आदि बनचर जीवों के साथ फिरना अच्छा; किन्तु मूर्ख आदमीका सङ्ग इन्द्र-भवन में भी अच्छा नहीं।

– –

शास्त्रोक्त शब्दों से सुन्दर संस्कृत वाणीवाले, शिष्यों को विद्या पढ़ाने योग्य एवं सुप्रसिद्ध कवि लोग जिस राजा के राज्य में धनहीन रहते हैं, उस राजा की मूर्खता समझनी चाहिये। कवि

लोग तो निर्धनता में भी श्रेष्ठ ही होते हैं। रत्न की परीक्षा करने-वाला जौहरी यदि रत्न की क़ीमत घटा दे, तो रत्न पारखी बुरा समझा जायगा, न कि रत्न।

\+ +

हे राजाओं! जिसको चोर देख नहीं सकते, जो हमेशा सुख को बढ़ाता है, जो मँगतों को देने से उल्टा बढ़ता है और जो कल्पान्त में भी नाश नहीं होता, ऐसा विद्या-रूपी गुप्त धन जिन लोगों के पास है उनसे घमण्ड मत करो; क्योंकि उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता।

❀ ❀

जिन विद्वानों के हाथ में मोक्ष तक का साधन है, उनका अनादर मत करो। तुम्हारी क्षुद्र लक्ष्मी उनको इस भाँति नहीं रोक सकती; जिस भाँति कमल की डण्डी का सूत उन हाथियों को नहीं रोक सकता, जिनके काले-काले मस्तक नवीन मद की धाराओं से शोभायमान हैं।

❀ ❀

यदि विधाता हंस पर नाराज़ हो जाय तो उसका कमल-वन का निवास नष्ट कर सकता है; किन्तु उसकी दूध और जल को अलग-अलग कर देनेवाली सुप्रसिद्ध चतुराई को नाश नहीं कर सकता।

\+ +

हाथों में कङ्कन पहनने से, गले में चन्द्रमा के समान सफेद मोतियों के हार पहनने से, स्नान करने से, चन्दन-कस्तूरी आदि के लेपन करनेसे और सिर के बालोंकी सजावट करनेसे

मनुष्य स्वरूपवान नहीं दिखाई देता। केवल शुद्ध साफ बोली से ही मनुष्य सुन्दर मालूम होता है। सब भूषण-नाश हो जाते हैं, किन्तु शुद्ध वाणी-रूपी भूषण नाश नहीं होता।

❀ ❀

विद्या मनुष्य का रूप है, विद्या छिपा हुआ गुप्त धन है; विद्या भोग भुगानेवाली, यश बढ़ानेवाली और सुख दिलानेवाली है। विद्या गुरुओं का गुरू है। परदेश में विद्या मित्र है। विद्या परम देव है। राजाओं में विद्या का ही आदर होता है, धन का आदर नहीं होता। जो विद्याहीन हैं, वे पशु हैं।

+ +

यदि मनुष्यमें क्षमा है तो कवच की क्या आवश्यकता है? यदि क्रोध है तो शत्रु की क्या आवश्यकता है? यदि जाति है तो अग्निकी क्या आवश्यकता है? यदि मित्र है तो दिव्य औषधियों से क्या मतलब है? यदि दुष्टों से पाला पड़ा हुआ है, तो साँपों से क्या होगा? यदि निर्दोष विद्या है, तो धनकी क्या ज़रूरत है? यदि लज्जा है तो आभूषण की क्या ज़रूरत है? यदि कविता करने की शक्ति है, तब राज्य से क्या मतलब है?

❀ ❀

जो पुरुष अपने कुटुम्बियों से उदारता का बर्ताव करते हैं; जो ग़ैरों पर दया-भाव रखते हैं, जो दुष्टों से दुष्टताका बर्ताव करते हैं, जो सज्जनोंसे प्रेम रखते है, जो राज-सभा में नीति-अनुसार चलते हैं, जो विद्वानों के साथ नम्रता रखते हैं, जो दुश्मनोंके सामने बहादुरी दिखाते हैं, जो माता-पिता और गुरु

आदि बड़े लोगों के प्रति क्षमा का वर्ताव करते हैं, वे ही उत्तम पुरुष हैं—उन्हीं का इस दुनिया में टिकाव हो सकता है।

— —

सत्सङ्गति—बुद्धि की मन्दता को नाश करती है, सच बोलना सिखाती है, मान बढ़ाती है, पापों को नाश करती है और दशों दिशाओं में कीर्त्ति—नामवरी—फैलाती है; सतसङ्गति पुरुष के लिये क्या नहीं करती?

❀ ❀

वह धर्मात्मा प्रसिद्ध कविश्वर सबसे उत्तम हैं, जिनकी यशरूपी काया में जरा-मरण का भय नहीं है।

— —

अच्छा चाल चलनेवाला पुत्र, पतिव्रता स्त्री, कृपा करनेवाला स्वामी, प्रेमी मित्र, चाल न चलनेवाले कुटुम्बी; दुःख-रहित मन, सुन्दर स्वरूप, ठहरनेवाली सम्पत्ति, विद्या से खिला हुआ चेहरा,—यह सब सुख के सामान उस पुरुष को मिलते हैं, जिस पर स्वर्ग-पति नारायण प्रसन्न होते हैं।

❀ ❀

जीव-हिंसा न करना, पराया धन हरने की इच्छा न रखना सच बोलना, समय पर अपनी शक्ति-अनुसार दान देना, पर-स्त्रियों की चर्चा में चुप रहना, तृष्णा न रखना, बड़े आदमियों से नम्र रहना, जीवमात्र पर दया रखना, सब शास्त्रों मे प्रवृत्ति रखना और नित्य नैमित्तिक कर्म न छोड़ना—ये सब पुरुषों के कल्याण करने वाले रास्ते हैं।

नीच लोग विघ्न होने के भय से किसी काम को आरम्भ ही नही करते। मध्यम लोग काम को आरम्भ तो कर देते हैं, किन्तु विघ्न होते देखकर काम को छोड़ बैठते हैं। उत्तम पुरुष जब काम को आरम्भ कर देते हैं, तब विघ्न होने पर भी उसका पीछा नहीं छोड़ते, किन्तु जैसे-तैसे उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं।

❀ ❀

सिंह कैसा ही भूखा क्यों न हो, भूख के मारे दम क्यों न निकलता हो, किन्तु वह अहंकारी और पुरुषार्थी होने से मांस छोड़ कर घास नहीं खाता। इसी तरह पुरुषार्थी और मानी पुरुष, सङ्कटावस्था आजाने पर भी, छोटा काम नही करते।

\+ +

कुत्तेकी भूख पित्त और चर्वी लगे हुए मैले और माँस-रहित हाड़ के टुकड़े से नही बुझती, तथापि वह उसे पाने से प्रसन्न हो जाता है; दूसरी ओर सिंह गोदमें आये हुए स्यार को छोड़ कर हाथी का जाकर मारता है; इस बात से यह मालूम होता है कि, सारे जीव दुःखी होने पर भी अपने-अपने पुरुषार्थ के अनुसार फलकी इच्छा करते हैं।

\+ +

कुत्ता टुकड़ा देनेवाले के सामने पूँछ हिलाता, पैरों में गिर कर सिर देता और जमीन पर लेटकर पेट और मुँह दिखाता है; किन्तु गजराज अपने खिलानेवाले की तरफ एक बार गम्भीरता से देखता है और अनेक भाँति की लल्लो-चप्पो और खुशामदें करने से खाता है।

जगत् में उसी पुरुष को जन्म हुआ समझना चाहिये, जिसके जन्म लेने से वंश की उन्नति हो, नहीं तो पहिये की भाँति घूमने वाले इस संसार में मरकर जन्म कौन नहीं लेता ?

❀ ❀

दानवों के राजा राहु का मस्तकमात्र ही रह गया है तथापि वह विशेष पराक्रम की इच्छा रखने के कारण से, आकाश के वृहस्पति आदि ग्रहों को छोड़ कर, पूर्ण तेजवान सूर्य्य और चन्द्रमा को ही ग्रसता है। इसका मतलब यह है कि, पराक्रमी और बड़े लोग छोटे-मोटों को तङ्ग नहीं करते। छोटों पर हाथ साफ करने में वे अपनी निन्दा समझते हैं। राहु वृहस्पति आदि छोटे-छोटे ग्रहों को हिक़ारत की नजर से देखकर और उन्हें अपने मुकाबिले का न समझकर छोड़ देता है, किन्तु सूर्य्य और चन्द्रमा पर, जो सब से अधिक तेजवान हैं, अपना जोर जमाता यानी ग्रसता है।

❀ ❀

राजा इन्द्र ने मद में भर कर अग्नि के समान जलते हुए तीर पर्वतों पर चलाये। उनसे पर्वतों के पङ्ख कट गये। उस समय मैनाक नामक पर्वत ने, अपने पिता हिमाचल को सङ्कट मे छोड़कर, जलों के राजा समुद्र में कूदकर अपने पङ्ख बचा लिये। मैनाक का भाग कर अपने पङ्ख बचाने और पिता को सङ्कट में छोड़ जाने से मर जाना अच्छा था।

❀ ❀

सूर्य्यकान्त मणि में चेतन-शक्ति नहीं है; तथापि वह सूर्य्य के किरण-रूपी पैरों के छूजाने से जल उठती है। इसी भाँति

तेजस्वी पुरुष दूसरा के द्वारा किया हुआ अनादर किस तरह सह सकते हैं ?

❀ ❀

सब इन्द्रियाँ वही हैं, वैसे ही कर्म हैं, वही बातें हैं; परन्तु ख़ाली धन की गरमी विना, वही पुरुष पल-भर में और का और हो जाता है, यह एक अजीब बात है।

❀ ❀

जब मनुष्य के पास धन रहता है तब लोग उसे सर्व्वगुण-सम्पन्न, बुद्धिमान कहते हैं; किन्तु जब उसके पास धन नहीं रहता, तब उसका शरीर, इन्द्रियाँ और बुद्धि आदि तो वैसी ही बनी रहती हैं; लेकिन लोग उसे मूर्ख कहने लगते हैं। जाता तो केवल धन है; इन्द्रियाँ और बुद्धि वगैरह तो कहीं नहीं जातीं; लेकिन लोग उसी आदमी को निकम्मा और निर्बुद्धि कहने लगते हैं। क्या यह कम आश्चर्य्य की बात है ?

\+ +

अयोग्य मन्त्रियों की सलाह से राजा का राज डूब जाता है। राजा की सुहबत से तपस्वी का तप भङ्ग हो जाता है। लाड़ करने से पुत्र बिगड़ जाता है। विद्याभ्यास न करने से ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व नहीं रहता। कपूत के जन्म लेने से कुल का नाम डूब जाता है। दुष्ट मनुष्य की चाकरी से शीलता नष्ट हो जाती है। शराब पीने से शर्म और हया हवा होजाती है। विना देख-भाल किये खेती नाश होजाती है। परदेश में रहने से प्रेम नहीं रहता। कड़ाई से मित्रता नहीं रहती। अन्याय-अनीति करने से उन्नति में बाधा पहुचती है और विना समझे-बूझे अन्धे के समान लुटाने से धन नाश हो जाता है।

धन की तीन गति हैं—दान, भोग और नाश। जिसने अपना धन दान नहीं किया और भोगा भी नहीं, उसके धन की तीसरी गति होती है अर्थात् वह नाश हो जाता है।

× ×

सान पर साफ की हुई मणि बहुत अच्छी लगती है, संग्राम-विजयी पुरुष तलवार से कटा हुआ खूब सुन्दर मालूम होता है, मद-क्षीण हाथी देखने में भला जान पड़ता है, शरद् ऋतु की थोड़े जलवाली नदी बहुत अच्छी लगती है, दूज का चाँद बहुत प्यारा मालूम होता है, वह राजा जो दान पर दान करने से दरिद्री होजाता है बहुत ही शोभायमान लगता है। मतलब यह है कि, उपरोक्त सब दुर्बल होने ही से भले मालूम होते हैं।

× ×

जब मनुष्य निर्धन अवस्था में होता है, तब केवल एक मुट्ठी जौ चाहता है और जब वही मनुष्य धनवान हो जाता है तब दुनिया को घास फूस के समान समझने लगता है। मतलब यह निकलता है कि, अवस्था ही मनुष्य को छोटा और बड़ा बना देती है।

× ×

हे राजन्! यदि तुम पृथ्वीरूपी गाय को दुहना चाहते हो; तो बछड़े रूपी प्रजा का पालन करो। जब प्रजा रूपी बछड़ा खूब पाला-पोसा जायगा, तब यह पृथ्वी कल्पलता के समान भाँति-भाँति के फल देगी।

\+ +

राजा को कहीं सच बोलना होता है और कहीं झूठ, कहीं कठोर बचन बोलने होते हैं और कहीं मीठे वचन, कहीं

जीव का नाश करना होता है और कहीं दया-भाव दिखाना होता है, कहीं लोभी बनना होता है और कहीं उदार, कभी बहुतसा धन लुटाना होता है और कभी जमा करना होता है। 'राजनीति' वेश्या की भाँति अनेक प्रकार के रूप-रङ्ग बदलती है।

~ ~

जो राजा विद्वान् और कीर्त्तिमान नहीं हैं; जो ब्राह्मणों का पालन नहीं करते; जो दान, भोग और मित्र-रक्षा नहीं करते, उन राजाओं की सेवा से क्या लाभ हो सकता है ?

❀ ❀

ब्रह्मा ने जो थोड़ा या बहुत धन हमारी मस्तकरूपी पट्टी में लिख दिया है, वह मारवाड़ की निर्जल भूमि में जा बैठने से भी मिल सकता है; उससे अधिक धन सोने के सुमेरु पर्वत पर जाने से भी नहीं मिल सकता; इसलिये धीरज धारण करो—घबराओ मत—और धनवानों के पास जाकर वृथा याचना मत करो। घड़े को कूएँ या समुद्र में डालकर देख लो, उसमें दोनों जगह समान ही जल आवेगा।

~ ~

पपीहा पक्षी मेघ से कहता है—"हे मेघ! तुम्हीं मेरे जीवन-आधार हो, इस बात को सभी जानते हैं। अब तुम मेरी दीनता की बाट क्यों देखते हो ?"

❀ ❀

अरे पपीहा! सावधान होकर और चित्त लगाकर हमारी बात सुन! आकाश में बहुतेरे मेघ हैं किन्तु वह सब समान नहीं है। कितने तो बरस-बरस कर धरती को तृप्त कर देते

हैं और कितनेही फिजूल गरज-गरज कर चले जाते हैं। मित्र! इसलिये तू जिसे देखे, उसीके सामने दीनता मत करे।

❀ ❀

दया न करना, बिना कारण लड़ाई-झगड़ा करना, पराये धन और पर-स्त्री की हमेशा चाह रखना, अपने कुटुम्बियों तथा मित्रों की बरदाश्त न करना,—ये सब बातें दुष्ट मनुष्यों में स्वभाव से ही होती हैं।

— —

दुष्ट मनुष्य यदि विद्वान् भी हो तो भी उससे दूर ही रहना उचित है; क्योंकि जिस सर्पके सिर पर मणि होती है, क्या वह भयङ्कर नहीं होता?

× ×

दुष्ट लोग लज्जावान आदमी को मूर्ख, व्रत करने वाले को पाखण्डी, शूरवीर को निर्दयी, पवित्र को कपटी, चुप रहने वाले को निर्बुद्धि, मीठा बोलने वाले को ग़रीब, तेजस्वी को घमण्डी, बहुत बोलने वाले को बक्की और स्थिर चित्तवाले को अशक्त कहते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि गुणवानों में ऐसा कोई गुण नहीं है, जिसमें दुर्जनों ने दोष न लगाया हो।

× ×

जो लोभी है उसे और अवगुणों की क्या जरूरत है? जो चुगुल खोर है उसे और पाप कमाने की क्या आवश्यकता है? जो सत्यवादी है उसे तपस्या से क्या प्रयोजन है? जिसका मन साफ है उसे तीर्थ करने से क्या फ़ायदा? यदि सज्जनता है तो और गुणों से क्या मतलब? यदि नामवरी है, तो

ज़ेवरों की क्या ज़रूरत ? यदि सत् विद्या है, तो कुटुम्बी और मित्रों की क्या कमी है ? यदि अपयश अथवा बदनामी है, तो मरण से और क्या होगा ?

× ×

दिन का ज्योतिहीन चन्द्रमा, यौवनहीना नारी, कमल-रहित सरोवर, खूबसूरत आदमी निरक्षर, धनवान कञ्जूस, सज्जन पुरुष निर्धन और राज-सभा में दुष्ट आदमी—ये सातों दिल में काँटे की भाँति चुभते है।

× ×

प्रचण्ड क्रोधी राजाओं का कोई मित्र नही होता; क्योंकि अग्नि होम करने वाले को भी हाथ छूजाने से जला देती है।

× ×

अगर नौकर चुप रहता है तो कहने लगते हैं कि वह गूँगा है; यदि बहुत बातचीत करता है ता बकवादी कहलाता है, यदि नजदीक रहता है ना ढीठ कहलाता है; यदि दूर रहता है तो मूर्ख कहलाता है; यदि क्षमा करता है यानी टेढ़ी-सूधी सब सुनता और चूँ भी नहीं करता, तो डरपोक कहा जाता है; यदि कड़ुवी और कठोर बातों को सहन नहीं करता तो कुलहीन कहलाता है। मतलब यह है कि, नौकरी या चाकरी बड़ा कठिन काम है; यह इतनी कठिन है कि योगी लोग भी इसे नहीं कर सकते।

× ×

जो अनेक प्रकार की दुष्टता करता है, ज़ो निरंकुश है, [illegible]के पहले जन्म के बुरे कर्म उदय हो रहे हैं, जिसके पास

दैव-योग से धन आ गया है और जो गुणों से द्वेष करता है, ऐसे अधम पुरुष के पास रहकर कौन सुख पा सकता है ?

× ×

जिस भाँति दोपहर के पहले की छाया पहले तो बहुत लम्बी-चौड़ी होती है, किन्तु पीछे पल-पल घटने लगती है; उसी भाँति दुष्ट लोगों की मित्रता पहले तो खूब बढ़ती है; किन्तु पीछे क्षण-क्षण घटने लगती है; किन्तु भले आदमियों की मित्रता दोपहर पीछे की छाया के समान पहिले तो बहुत थोड़ी होती है; परन्तु पीछे क्रम-क्रम से बढ़ती चली जाती है।

× ×

हिरन घास खाकर गुज़ारा करते हैं, मछलियाँ जल से जीविका-निर्वाह करती हैं और सज्जन लोग सन्तोष वृत्ति से जीवन चलाते हैं, परन्तु न जाने क्या बात है जो शिकारी हिरनों से, मछली-मार मछलियों से और दुष्ट लोग सज्जनों से व्यर्थ शत्रुता करते हैं।

× ×

भले आदमियों की सङ्गति की इच्छा, पर-गुणों से प्रसन्न होना, माता-पिता आदि गुरुजनों से नम्रता, विद्या में रुचि, अपनी स्त्री से सम्भोग, लोक-निन्दा से डरना, महादेव में भक्ति, अपनी आत्मा को वश में रखने की शक्ति और दुष्ट आदमी की सङ्गति का त्याग—ये निर्मल गुण जिन पुरुषों में हैं, उन्हें हम नमस्कार करते हैं।

× ×

महात्मा लोग विपत्ति में धीरज रखते हैं, ऐश्वर्य्य में क्षमाशील रहते हैं, सभा-समाज में चतुराई से बात-चीत करते

हैं, अपनी कीर्त्ति चाहते हैं और शास्त्रों के देखने में लगे रहते हैं।

× ×

भले आदमी दान देकर प्रकट नहीं करते, अपने घर पर आये हुए का सत्कार करते हैं, दूसरे की भलाई करके चुप रहते हैं, अगर कोई दूसरा उनके साथ भलाई करता है तो लोगों से कहते रहते हैं, धन-दौलत पाने से घमण्ड नहीं करते, जिस किसी का जिक्र चलता हो उसकी निन्दा की बात बचा कर बात कहते हैं। सत्पुरुषों में ये सब गुण पाये जाते हैं। कह नहीं सकते, यह कठिन व्रत उन लोगों को किस ने सिखाया है?

× ×

जो लोग दान देकर डङ्का पीटते फिरते हैं या समाचार पत्रों में अपने दान की ख़बरें छपाते हैं, घर पर आये हुए पुरुष का अनादर करते हैं, किसी का उपकार करके कहते फिरते हैं सभा-समाज में गँवारपने से बात-चीत करते हैं, धन पाकर घमण्ड के नशे में चूर हो जाते हैं जिस किसी की चर्चा होती है उसकी निन्दाओं का ढेर लगा देते हैं, जिन मनुष्यों में ये लक्षण पाये जाते हैं वे दुष्टात्मा होते हैं। आजकल ऐसे ही लोगों की बहुतायत है।

× ×

जिन हाथों से दान दिया जाता है, जिस मस्तक पर गुरु-जन—माता पिता आदि—के पैर पड़ते हैं जिस मुँह से सत्य बात निकलती है, जिन भुजाओं से अतुल पराक्रम का काम

होता है, जिस हृदय में स्वच्छ वृत्ति होती है और जिन कानों से शास्त्र सुने जाते हैं, वे सब प्रशंसा योग्य हैं।

× ×

सम्पत्ति में, महात्मा लोगों का दिल कमल से भी कोमल हो जाता है; किन्तु विपत्ति में, वह पहाड़ की बड़ी भारी शिला से भी कठोर हो जाता है।

× ×

जल की बूंद जब गरम तवे पर पड़ती है, तब उसका नाम भी नहीं रहता; लेकिन जब वही बूंद कमल के पत्ते पर पड़ती है तब मोती सी दिखाई देती है और जब वह, स्वाती नक्षत्र में, समुद्र की सीप में पड़ती है तब मोती ही बन जाती है, इससे यह सिद्ध होता है कि प्रायः बुरे भले और मध्यम गुण संगति से ही हो जाते हैं।

× ×

जो अपने अच्छे चाल-चलन से बाप को प्रसन्न करे वही पुत्र है, जो अपने पति का सदा भला चाहे वही स्त्री है, जो सम्पद् और विपद् में एक समान रहे वही मित्र है। ऐसे पुत्र, स्त्री और मित्र जगत् में उसे ही मिलते हैं, जिसने पुण्य किया है।

× ×

एक ही देव की आराधना करनी चाहिये, चाहें विष्णु की चाहें शिव की। एक ही मित्र बनाना चाहिये, चाहे राजा हो चाहे तपस्वी। एक ही जगह बसना चाहिये, वन में अथवा नगर में। एक ही स्त्री से प्रेम करना चाहिये; सुरूपा हो या कुरूपा।

जिस भाँति फल लगने से वृक्ष नीचे झुक जाते हैं, नया जल भर जाने से बादल जमीन की ओर नव जाते हैं; उसी भाँति भले लोग सम्पत्ति पाकर ऊँचे नहीं होते, किन्तु नीचे हो जाते हैं। परोपकारी लोगों का स्वभाव ऐसा ही होता है।

❀ ❀

कानों की शोभा शास्त्र सुनने से है न कि कुण्डल पहनने से, हाथों की शोभा दान करने से है न कि कंगन पहनने से, दयावान मनुष्यों की शोभा परोपकार करने से है न कि चन्दन लगाने से।

❀ ❀

जो मित्र को पाप करने से मना करते हैं, उसे उसके भले को बात बताते हैं, उसकी गुप्त बात को छिपाते हैं, उसके गुणों को प्रकाशित करते हैं, मुसीबत पड़ने पर उसका संग नहीं छोड़ते और मौक़ा पड़ने पर यथा-शक्ति धन भी देते हैं, वे ही श्रेष्ठ मित्र हैं। सन्त लोगों ने भले मित्रों के ये ही लक्षण कहे हैं।

❀ ❀

सूर्य्य बिना कहे कमलों को और चन्द्रमा बिना कहे कुमुद-पुष्पों को खिलाता है, बादल बिना माँगे पृथ्वी पर जल बरसाता है; इसी भाँति सन्त लोग, बिना कहे-सुने ही; पराई भलाई का उद्योग आपसे आप करते हैं।

❀ ❀

जो मनुष्य अपने काम को बिसार कर पराया काम करते हैं, वे सत् पुरुष हैं। जो अपने और पराये दोनों काम करते हैं,

वे सामान्य पुरुष हैं। जो अपना काम बनाने के लिये पराया काम बिगाड़ते हैं वे राक्षस हैं और जो व्यर्थ दूसरे का काम बिगाड़ते हैं, वे कौन पुरुष हैं सो हम भी नहीं जानते।

❀ ❀

जब दूध में जल मिला, तब दूध ने अपने मित्र जल को रूप और गुण में अपने समान बना लिया अर्थात् अपना रूप और गुण उसे दे दिया। जब अग्नि की तेज़ी से दूध जलने लगा, तब जल ने अपने मित्र की रक्षा के लिये अपना शरीर जला दिया। जब दूध ने देखा कि हमारा मित्र जल गया, तब वह भी आग में कूदने लगा। जब दूध में फिर पानी के छींटे मारे गये, तब वह अपने मित्र को आता हुआ देखकर ठण्डा हो कर ठिकाने पर बैठ गया। यह दूध और जल के विषय में उचित ही बात है; क्योंकि सज्जनों की मित्रता इसी तरह की होती है।

❀ ❀

समुद्र में एक तरफ़ विष्णु भगवान शेष-शय्या पर सोते हैं, एक ओर उनके शत्रु राक्षस रहते हैं, एक ओर शरण में गये हुये पर्व्वत पड़े हुये हैं, एक ओर बड़वानल प्रलय की अग्नि के समान अग्नि से जल को औटा रहा है; किन्तु समुद्र इन सब से कुछ भी विचलित नहीं होता। उसका विशाल आकार और डील-डौल यह सब भार सहने में समर्थ है। मतलब यह है, कि सत्पुरुष भी समुद्र की भाँति ही होते हैं।

❀ *

तृष्णा को छोड़ो, क्षमा को धारण करो, मद का त्याग करो; पाप-कर्म्म में मत लगो, सच बोलो, साधु लोगों की मर्य्यादा

पर चलो, विद्वानों की सेवा करो, माननीय पुरुषों का मान करो, दुश्मनों को भी खुश रक्खो, अपने गुणों को प्रसिद्ध करो, अपनी नामवरी बनाये रक्खो और दुःखी लोगों पर दया करो; क्योंकि ये ही सत्पुरुषों के लक्षण हैं।

❀ ❀

मन, वाणी और शरीर से त्रिलोकी के जीवों पर उपकार करने वाले और पराये जरा से भी गुण को पहाड़ के समान बड़ा समझ कर चित्त में प्रसन्न होने वाले सज्जन विरले ही होते हैं।

❀ ❀

हमें उस सोने के सुमेरु पर्वत और चाँदी के कैलाश पर्वत से क्या फायदा, जिनके आश्रित वृक्ष हमेशा जैसे के तैसे ही बने रहते हैं? हम तो मलयाचल को सबसे अच्छा समझते हैं, जिसके आश्रित कङ्कोल, नीम और कुटज आदि वृक्ष चन्दन हो जाते है।

❀ ❀

देवताओं ने समुद्र मथा और रत्न पाये; इससे वे सन्तुष्ट हुए, मगर उन्होंने समुद्र का मथना जारी ही रक्खा। पीछे हला-हल विष निकला; इससे वे भयभीत तो हुये, किन्तु मथन-कार्य्य फिर भी न छोड़ा। जब अमृत निकल आया, तब ही काम छोड़ा और आराम किया। इससे यह मालूम होता है कि, धैर्य्यवान पुरुष जिस काम को आरम्भ करते है, उसे अपना इच्छित पदार्थ प्राप्त किये बिना नहीं छोड़ते।

× ×

कभी जमीन पर ही सो रहते हैं, कभी सुन्दर पलंग पर सोते हैं, कभी साग-पात खाकर पेट भर लेते हैं, कभी शाली चॉवल खाते है, कभी चिथड़े पहनते है और कभी अच्छे-अच्छे भड़कदार कपड़े पहनते है। मतलब यह है; कि मनस्वी और कार्य्यार्थी पुरुष दु:ख और सुख को नहीं गिनते।

× ×

सज्जनता ऐश्वर्य्य का भूषण है, घमण्ड न करना शूरता का भूषण है, सुपात्र को दान देना धन का भूषण है, क्रोध न करना तपस्या का भूषण है, निष्कपट रहना धर्म्म का भूषण है। इनके सिवा और सब गुणों का कारण और भूषण "शील" है।

❀ ❀

नीति निपुण लोग बुरा कहें चाहे, भला कहें, लक्ष्मी आवे चाहें चली जाय, अभी मरण हो जाय चाहे कल्पान्त मे हों; परन्तु धीर लोग न्याय के रास्ते से एक क़दम भी इधर-उधर नहीं होते।

❀ ❀

एक सॉप सपेरे के पिटारे में बन्द था, उसे अपने जीने की भी आशा न थी, शरीर दुखी था, भूक के मारे इन्द्रियाँ शिथिल हो रही थीं। रात के समय एक चूहा पिटारे में छेद करके घुस गया। सॉप उसे खाकर तृप्त हो गया और उसी चूहे के किये हुये छेद से बाहर निकल गया। इससे साफ मालूम होता है, कि मनुष्यों की वृद्धि और क्षय का कारण केवल "दैव" है।

❀ ❀

हाथों में जोर से गिराई हुई गेंद ऊपर को ही उछलती है, इससे यह ज्ञात होता है कि अच्छी चाल से चलने वालों की विपत्ति प्रायः नहीं ठहरती।

❀ ❀

मनुष्य के शरीर में आलस्य ही महाशत्रु है। उद्योग के समान मनुष्य का दूसरा मित्र नहीं है; क्योंकि उद्योग करने से दुःख पास नहीं फटकता। छाँटा काटा हुआ वृक्ष फिर बढ़ आता है, इस बात को विचार कर सज्जन लोग विपत्ति से नहीं घबराते।

× ×

यद्यपि मनुष्यों के कर्मानुसार ही फल मिलता है और बुद्धि भी कर्मानुसार ही हो जाती है, तथापि बुद्धिमानों को खूब सोच-विचार कर ही काम करना चाहिये।

× ×

किसी गञ्जे आदमी का सिर धूप के मारे जलने लगा। दैव योग से वह छाया की तलाश में, एक ताड़ के वृक्ष के नीचे जा खड़ा हुआ। खड़े होते ही उसके सिर पर एक ताड़ फल गिरा; जिससे बड़ी भारी आवाज़ हुई और उसका सिर फट गया। इससे यह साबित होता है, कि भाग्यहीन मनुष्य जहाँ जाता है वहाँ विपत्ति भी उसके साथ-साथ जाती है।

❀ ❀

हाथी और साँप को बन्धन में देखकर, सूरज और चन्द्रमा में राहु द्वारा ग्रहण लगते देख कर और बुद्धिमानों को धनहीन देख कर हमें विधाता ही बलवान मालूम होता है।

+ +

ब्रह्मा ने पुरुष-रत्न को समस्त गुणों की खान और पृथ्वी का भूषण बनाया; परन्तु उसकी काया क्षण में नाश होने वाली बनायी, यह बड़े दुःख की बात है! इससे ब्रह्मा की मूर्खता ही मालूम होती है।

\+ +

करील के पेड़ों में पत्ते नहीं लगते, इसमें बसन्त का क्या दोष है? उल्लू को दिन में नहीं दीखता, इसमें सूर्य्य का क्या दोष है? मेह की धारा पपहिये के मुँह में नहीं गिरती, इसमें बादल का क्या दोष है? इस सब का मतलब यह है, कि विधाता ने जो कुछ पहले से ही ललाट में लिख दिया है, उसे मिटाने की सामर्थ्य किसी में नहीं है।

\+ +

हम देवताओं को नमस्कार करते हैं; किन्तु सारे देवता विधाता के अधीन हैं अतः हम विधाता को ही नमस्कार करते हैं; किन्तु विधाता भी हमारे पहले किये हुए कर्मों के अनुसार ही फल देता है; इससे यह मालूम हुआ कि विधाता और फल दोनों ही कर्म के अधीन हैं। जब ऐसा है, तब हमें विधाता और देवताओं से क्या मतलब? हम तो उस कर्म को ही नमस्कार करते हैं, जिस पर विधाता का भी ज़ोर नहीं चलता।

× ×

कर्म ने ब्रह्मा को कुम्हार की तरह ब्रह्माण्ड-रचना पर नियत किया, विष्णु को दश अवतार लेने के सङ्कट में डाला, महादेव के हाथ में खोपड़ी देकर भीख मँगाई और सूर्य्य को सदा के लिए घूमने के काम पर नियत कर दिया; इसलिए हम कर्म ही को नमस्कार करते हैं।

पुरुष की सुन्दर सूरत उसे कुछ फल नहीं देती, न उत्तम कुल, न शील, न विद्या और न खूब अच्छी तरह की हुई टहल-चाकरी ही फल देता है। पहले जन्म की की हुई तपस्या से जो भाग्य बना है, वही समय-समय पर वृक्ष की भाँति फल देता है।

❀ ❀

जो सत् क्रिया दुष्टों को साधु बना देती है, मूर्खों को विद्वान् बना देती है, वैरियों को मित्र बना देती है, गुप्त विषयों को प्रकट कर देती है, हलाहल विष को अमृत बना देती है, उस सत् क्रिया रूपी भगवती की आराधना-उपासना करो। हे सज्जनो! यदि मनोवाञ्छित फल पाना चाहो, तो और गुणों के सीखने में व्यर्थ परिश्रम मत करो।

❀ ❀

जब कोई काम करना हो तो पहले विचार करना चाहिए, कि यह काम करने योग्य है या नहीं; यदि करने-योग्य है तो इसका फल क्या होगा; क्योंकि जो काम बिना विचारे शीघ्रता से किया जाता है, उसका फल मरने के समय तक हृदय में काँटे की भाँति खटका करता है।

❀ ❀

जो पुरुष, इस कर्म्म भूमि में आकर, तप नहीं करता वह अभागा उस पुरुष के समान है जो वैडूर्य्यमणि के बासन में चन्दन की लकड़ियों से लहसन पकाता है, खेत में सोने का हल चला कर आक के वृक्ष बोता है, और कपूर-वृक्ष के टुकड़े काट कर कोदों के चारों तरफ़ मेंड़ लगाता है।

चाहे समुद्र में डूब जाओ, चाहे मेरु पर्वत की चोटी पर चढ़ जाओ, चाहे घोर युद्ध में शत्रुओं को जीतो; चाहे व्योपार,

खेती, नौकरी आदि सारी विद्या और कलाएँ सीख लो; चाहे आकाश में पक्षियों की भाँति उड़ते फिरो; परन्तु जो नहीं होने वाला है वह कभी नहीं होगा और जो पूर्व्वकर्मानुसार होने वाला है, वह कभी बिना हुए न टलेगा।

❀ ❀

जिस पुरुष का, पहले जन्म का, बहुत सा पुण्य होता है, उस पुरुष के लिए भयानक जंगल सुन्दर नगर हो जाता है; सब कोई उसके मित्र और बन्धु हो जाते हैं; सारी धरती उसके लिए रत्नों से भर जाती है।

❀ ❀

लाभ क्या है? गुणी लोगों की संगति। दुःख क्या है? अविद्वानों की संगति। हानि क्या है? समय पर चूकना। चातुरी क्या है? धर्म-कार्य्य में लगे रहना। वीर कौन है? जिसने अपनी इन्द्रियों को वश किया। स्त्री कौन सी अच्छी होती है? जो पति के अनुकूल चलती है। धन क्या है? विद्या धन है। सुख क्या है? प्रवास में न रहना। राज्य क्या है? अपना हुक्म चलना।

❀ ❀

मालती के फूलों की वृत्ति दो भाँति की होती है या तो वे मनुष्य के मस्तक पर ही विराजते हैं या वन में ही नाश हो जाते हैं। धीर पुरुषों की वृत्ति भी मालती के पुष्पों की भाँति ही होती है।

❀ ❀

जो अप्रिय कड़वे—वचनों के दरिद्री हैं, जो प्रिय—मीठे-वचनों के धनी हैं, जो अपनी ही स्त्री से सन्तुष्ट रहते हैं, जो

पराई निन्दा को अपने पास नहीं रहने देते,—ऐसे पुरुष-रत्नों से कहीं-कहीं की पृथ्वी हो शोभायमान है।

× ×

जिसके चित्त में स्त्रियों के कटाक्ष रूपी बाण कुछ असर नहीं करते, जिसके चित्त को क्रोध रूपी अग्नि नहीं जलाती, जिस के मन को इन्द्रियों के विषय अपनी ओर नहीं खींच सकते,—वह धीर पुरुष त्रिलोकी को विजय कर सकता है।

❀ ❀

जिस भाँति अकेला सूर्य्य सारे जगत् में प्रकाश फैला देता है, उसी भाँति अकेला वीर पुरुष सारी पृथ्वी को पाँव के नीचे दबा कर अपने आधीन कर लेता है।

× ×

—:o:—

भगवान महावीर के आदर्श उपदेश

तुम जैसा करोगे वैसा फल पाओगे। कोई परमात्मा या ईश्वर तुम्हें सुख-दुख या कर्म-फल नही देता। किन्तु पूर्ववत् कर्म का फल समय आने पर तुम्हें अपने आप भोगना पड़ता है। जब कोई व्यक्ति अच्छे या बुरे विचार करता है तब तत्काल ही आस-पास के पुद्गल-परमाणु खिच कर उसके पास आते हैं और वे उसकी आत्मा पर पर्दा डाल देते हैं—उसे अच्छादित कर देते हैं। इसे ही 'कर्म' कहते हैं। इसलिए सदा शुभ विचार और शुभ आचरण करो, जिससे कर्म तुम्हारी आत्मा को मलिन न कर सके। बद्ध कर्मो का नाश करके आत्मा परमात्मा हो जाता है, नर से नारायण हो जाता है।

× ×

तुम स्वयं स्वावलम्बी बनो और अपनी आत्मा का विकास करके, उसे कर्मयुक्त करके परमात्मा बन जाओ। परमात्मापन या ईश्वरतत्व किसी के ठेके की चीज नहीं है और न किसी एक व्यक्ति के अधिकार की ही चीज है। जो भी प्रयत्न करके कर्म-जाल का नाश करेगा, वही परमात्मा बन जायगा। महावीर हो जायगा।

जो तुम्हें स्वय अपने लिए नहीं रुचता, उसका व्यवहार दूसरों के प्रति मत करो। किसी भी प्राणी का घात मत करो। जिस प्रकार तुम्हें सुख-दुख का अनुभव होता है, उसी प्रकार दूसरे प्राणी भी सुख-दुख का अनुभव करते हैं। इसलिए सदा अहिंसा के पालन में सतर्क रहो। अहिंसा वीरों के लिए भूषण है और कायरों के लिए दूषण। कायर मनुष्य अहिंसा का पात्र

नहीं। योगियों को सम्पूर्ण-शुद्ध अहिंसा का पालन करना चाहिए। वे एकेन्द्रिय जीवों (वृक्षादि) का भी मन, वचन या काय से घात नहीं कर सकते। तब गृहस्थों को एक देशीय हिंसा का त्यागी होना आवश्यक है, जिसमें वे इरादे के साथ किसी भी प्राणी का घात न कर सकें। हाँ, समय आने पर अनिवार्य परिस्थिति में धर्म, देश और समाज-रक्षा के पवित्र उद्देश्य से शत्रु से युद्ध करना भी गृहस्थ के लिए क्षम्य है।

× ×

अनुचित भेद-भाव को भूल जाओ। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदि का जातीय भेद काल्पनिक है। यह भेद कल्पनामात्र आचरण पर आधार रखता है। इसलिये इसे प्रधान न मान कर गुण-पूजा की ओर ध्यान दो। किसी को दलित या नीच समझ कर उससे घृणा मत करो औ न किसी को मात्र ब्राह्मण-कुल में जन्म लेने से ही बड़ा मानो।

× ×

अपने पास आवश्यक सम्पत्ति ही रक्खो। शेष को दूसरों के हित दे डालो। आवश्यकता से अधिक सम्पत्ति रखना पाँचवाँ पाप है, जिसे 'परिग्रह' नामक पाप कहा गया है।

× ×

प्रत्येक वस्तु को ठीक-ठीक समझने के लिए उसे विभिन्न दृष्टियों से देखो। उसके अलग-अलग पहलुओं पर विचार करो वस्तु के अनन्त गुणों तथा अनन्त विचारों का शुद्ध समन्वय करने की शक्ति 'स्याद्वाद' में है। स्याद्वाद एकी भाव का दर्शन कराने के लिए दिव्यचक्षु है और धार्मिक कलह मिटाने के लिए दिव्यास्त्र।

अपने स्वार्थ के लिए अथवा दूसरों के लिए क्रोध से अथवा भय से किसी भी प्रसंग पर दूसरों को पीड़ा पहुंचाने वाला असत्य वचन न तो स्वयं बोले, न दूसरों से बुलवाये।

× ×

सचेतन पदार्थ हो या अचेतन, अल्प मूल्य हो या वहुमूल्य; और तो क्या, दांत कुरेदने की सींक भी जिस गृहस्थ के अधिकार में हो, उसकी आज्ञा विना संयमी साधक न तो स्वयं ग्रहण करते हैं और न दूसरों को ग्रहण करने के लिए प्रेरित करते हैं।

× +

ससार की मोह-माया में फंसी हुई मूर्ख प्रजा अनेक प्रकार के पाप कर्म करके अनेक गोत्रों वाली जातियों में जन्म लेती है। सारा विश्व इन जातियों से भरा हुआ है।

× ×

प्रमत्त पुरुष धन के द्वारा न तो इस लोक में ही अपनी रक्षा कर सकता है और न परलोक में। फिर भी धन के असीम मोह से मूढ़ मनुष्य दीपक के बुझ जाने पर जैसे मार्ग नहीं दीखता वैसे ही न्याय मार्ग को देखते हुए भी नहीं देख पाता।

× ×

सिर मुंड़ा लेने से कोई श्रमण नहीं होता, 'ॐ' का जाप कर लेने से कोई ब्राह्मण नहीं होता, 'निर्जन वन में रहने से कोई मुनि नहीं होता और न कुशा के वने वस्त्र पहन लेने से कोई तपस्वी ही हो जाता है; किन्तु समता से श्रमण होता है,

ब्रह्मचर्य से ब्राह्मण होता है, ज्ञान से मुनि होता है और तप से तपस्वी होता है।

× ×

चांदी और सोने के कैलाश के समान विशाल असंख्य पर्वत भी यदि पास में हों तो भी लोभी मनुष्य की तृप्ति के लिए वे कुछ भी नहीं। कारण कि तृष्णा आकाश के समान अनन्त है।

× ×

मनुष्य कर्म से ही ब्राह्मण होता है, कर्म से ही क्षत्रिय होता है, कर्म से ही वैश्य होता है, शूद्र भी कर्म से ही होता है। वर्ण-भेद जन्म से नहीं होता।

× ×

'सब प्राणी दुःख से डरते हैं, इसलिये वे अहिंस्य हैं' इस अहिंसा के सिद्धान्त को जानते हुए ज्ञानी के ज्ञान का यही सार है कि वह किसी की हिंसा न करे।

❋ ❋

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, चण्डाल, बुक्कस, एषिक, वैशिक, शूद्र और अन्य कोई भी जीव जो आरंभ और परिग्रह में मग्न हैं वे वैर बढ़ा रहे हैं। उनकी इच्छायें आरंभ पूर्ण होने से वे दुःख से छुटकारा नहीं पाते।

+ +

परिग्रहधारी के मरते ही उसके विषयाभिलाषी ज्ञातिजन मरणकृत्य करने के अनन्तर उसका धन कब्जे में कर लेते हैं और कर्मों का फल कमाने वाला भोगता है।

अपने कर्मों से मरते हुए की रक्षा के लिए माता, पिता, भाई, स्त्री और सगे भाई कोई समर्थ नहीं, इस परमार्थ को जानता हुआ भिक्षु धन, पुत्र, ज्ञातिजन और परिग्रह आदि का त्याग कर निरहंकार और निरपेक्ष भाव से जिन कथित धर्म मार्ग का आचरण करता हुआ विचरे।

× ×

पृथिवी, पानी, अग्नि, वायु, घास, वृक्ष, बीज आदि वनस्पति और अण्डज, पोतज, जरायुज, रसज, संस्वेदज तथा उद्भिज्ज आदि त्रस, इन छः जीवनिकायों का ज्ञान प्राप्त कर विद्वान् भिक्षु मन, वचन और काय से इनके आरंभ और परिग्रह का त्याग करे।

÷ ÷

असत्य वचन, अयाचित स्थान और स्त्री-सेवा ये लोक में कर्म-बन्ध के कारण हैं, यह जान कर भिक्षु इनका त्याग करे।

÷ –

कपट, लोभ, क्रोध और अहंकार को कर्म-बन्ध का हेतु जान कर भिक्षु इनका त्याग करे।

– ÷

सुगन्ध, पुष्प माला, स्नान, दातुन, परिग्रह और स्त्री-सग्रहादि कामों का भिक्षु त्याग करे।

+ +

भिक्षु के उद्देश से बनाये गए, खरीदे गए, माँग कर लाये गए और स्थानान्तर से सामने लाये गए आहारादि को दूषित और अकल्पनीय समझ कर भिक्षु उनका त्याग करे।

पौष्टिक रसायन, नेत्राञ्जन, रसलोलुपता, परोपघातक स्नान-विलेपनादि को कर्म-बन्ध का कारण जान कर भिक्षु इनका त्याग करे।

× ×

असंयतों के साथ पर्यालोचना, उनके कामों की प्रशंसा, ज्योतिष-निमित्त संबन्धी प्रश्नों के उत्तर और गृह स्वामी के यहाँ भोजन इत्यादि का विद्वान् भिक्षु त्याग करे।

— —

भिक्षु जुआ खेलना न सीखे, धर्म विरुद्ध वचन न बोले, किसी के साथ मारा-मारी अथवा विवाद न करे।

❀ ❀

जूता, छाता, पंखा, नालिका और अन्योन्य-क्रिया इन सबका भिक्षु त्याग करे।

❀ ❀

मुनि हरी घास पर मल-मूत्र न करे और न वहाँ जल शौच करे।

❀ ❀

भिक्षु भूखा रहे पर गृहस्थ के पात्र में भोजन न करे। नग्न फिरे पर गृहस्थ का वेष कभी न पहने।

❀ ❀

विद्वान् भिक्षु चारपाई अथवा पलंग पर बैठे, गृहस्थ के घर में आसन न लगावे और उनके कामों की पूछ ताछ कर पूर्वावस्था का स्मरण न करे।

❀ ❀

विद्वान् भिक्षु यश. कीर्ति, प्रशंसा, बन्दन, पूजन और विषय सुख की कभी इच्छा न करे।

❀ ❀

इस संसार में जन्म और मरण के महान् दुखों को तू देख और इस बात का ज्ञान प्राप्त कर कि सब जीवों को सुख प्रिय है, और दुख अप्रिय है। इसलिये ज्ञानी जन मोक्ष के मार्ग को जान कर वे सम्यकत्त्व धारी बन कर किंचित् मात्र भी पाप नहीं करते हैं।

❀ ❀

जितने से अपना निर्वाह हो सके भिक्षु उतना ही आहार-पानी ग्रहण करे अथवा दूसरे भिक्षुओं को दान करे, अधिक नहीं।

– –

भिक्षु को बातें करते हुए दो आदमियों के बीच में नहीं बोलना चाहिये और न उसे कपट-वचन ही कहना चाहिये। वह जो भी बोले विचारपूर्वक बोले। चार भाषाओं में तीसरी (सत्यामृषा) वह भाषा है जिसे बोल कर बोलने वाले पीछे पश्चात्ताप करते हैं।

❀ ❀

भिक्षु को सदा सुशील रहना चाहिये और कुशीलों की तरफ से होने वाली प्रलोभन बुराइयों को जानते हुए उसे उनका सग तक न करना चाहिये।

– +

विना कारण मुनि गृहस्थ के घर में न बैठे, बच्चों के खेल न खेले, अधिक न हँसे और संसारिक सुख की उत्कण्ठा न करे,

किन्तु यत्न-पूर्वक श्रमण धर्म का आराधन करता हुआ अप्रमादी होकर विचरे।

× ×

संयम-निर्वाह के लिए विचरता हुआ अनगार आने वाले कष्टों को सहन करे, मार पड़ने और आक्रोश सुनने पर भी क्रोध और कोलाहल न करे। कष्टों को शान्तचित्त से सहन करने और इन्द्रिय-सुख की चाहना न करने का नाम ही 'विवेक' है।

— —

भिक्षु को नित्य आचार्य के पास रह कर आर्य वचनों का अभ्यास करना चाहिये। इसकी प्राप्ति के लिए उसे बुद्धिमान् गीतार्थ की सेवा करनी चाहिये।

— —

जो धीर, वीर, जितेन्द्रिय और आत्मगवेषी हैं, जो घर में प्रकाश और संसार तरण का उपाय न देखकर श्रमण धर्म स्वीकार करते है, जो शब्द, स्पर्शादि विषयों में आसक्त नही है और जो आरंभ-त्यागी तथा जीवित से निरपेक्ष हैं वे अवश्य ही बन्धन से मुक्त होते हैं।

— —

—:o:—

महात्मा कबीर के आदर्श उपदेश

"अगर कहते हो कि सब में एक ही .खुदा है, तो इस गरीब मुर्गी को जिबह क्यों करते हो ?"

\+ +

"क्यों मारते हो किसी ग़रीब जीव को जान जब सब की एक-सी ही है ? भले ही तुम करोड़ों बार वेद-पुराण सुनो, जीव हत्या के पाप से मुक्त होने के नहीं।"

\+ +

"हिन्दुओं ने दया छोड़ दी मुसलमानों ने मेहर, दोनों ही घर आज खाली पड़े हैं ! पशु हत्या को एक कहता है हलाल, और दूसरा छटका—मगर आग तो दोनों ही खूनियों के घरों में लगी है।"

❀ ❀

अहमद, तेरी नादानी का कुछ पार है, गाय को बरबस पकड़ के पछाड़ दिया, और उसकी गर्दन पर चट से छुरी फेर दी, और फिर जीवित को मृतक करके कहता है क्या—"अब यह हलाल हुआ ! जिस मास को तू पाक कहता है, उसकी उत्पत्ति भी जानता है ? रज-वीर्य से उत्पन्न अपवित्र मांस है वह ! नादान नापाक चीज को पाक बता रहा है। कहता क्या है—हमारे बुजुर्गों ने चलाया है। जिसने तुझे यह मांस-भक्षण का उपदेश दिया है, उसका भी एक दिन खून होगा।"

\+ +

हमारा राष्ट्र शरीर ऐसा है—एक हाथ हिन्दू और दूसरा हाथ मुसलमान है, एक पाँव हिन्दू दूसरा मुसलमान है, दोनों

कान दोनों भाई, दोनों नेत्र दोनों भाई हैं, ऐसा हमारा राष्ट्र शरीर।

❀ ❀

हमें तो सब जगह एक ही आत्मा नजर आती है जो आत्मा हिन्दू में है वही मुसलमान में है।

– –

जब एक ही जमीन पर सब को रहना है—तब किसे हिन्दू कहें और किसे मुसलमान? कुरान पढ़ने वाले को भले ही मुल्ला कहो; और जो वेद पाठक हो उसे पंडित, अलग-अलग नाम भेले ही इनका रख दो पर हैं असल में सब एक ही मिट्टी के बर्तन। एक हिन्दू दूसरा मुसलमान न जाने ये दो नाम कैसे पड़ गये।

+ +

जो ईश्वर के रङ्ग में रङ्गा हुआ है, वही काजी है, वही मुल्ला है, और वही धर्मनिष्ठ मुसलमान है। वही चतुर और जग का भला करने वाला है।

+ +

जो काल चक्र का मान मिट्टी में मिला देता है, उस मुल्ला की मैं हमेशा वंदना करता हूँ।

❀ ❀

दीवान के हुक्म से प्यादे बकरे मार-मार कर खा रहे हैं, ऐसे लोगों की मुश्कें बाँधी जायँगी, और ऊपर से यमदूतों की मार पड़ेगी, उस दिन यह ज़ालिम ज़ोर-ज़ोर से चिल्लायँगे।

❀ ❀

अरे भोंदू चेतना, अब भी चेत जा—क्यों नाहक हिन्दू मुसलमान में भेद करता है ? देख, बोलन हारी आत्मा न मुस्लिम है न हिन्दू।

❀ ❀

निर्दय, जहाँ पर तू धर्म का प्रवचन करता, वहीं तू मूक पशुओं की बलि चढ़ाता है! कैसा घोर कुकर्म कर रहा है तू ! अरे, तुझे हम ब्राह्मण देवता कहें ! तो फिर तू बता, कसाई किसे कहें ?

\+ +

न मुझे अपने कर्मों के चिट्ठे का पता है, और न नमाज़ पढ़ना ही जानता हूँ। रोजा क्या चीज़ है, यह भी मालूम नहीं; और आज़ान देना तो तभी से भूल गया हूँ, जिस दिन कि इस दिल के अन्दर स्वामी को खोज लिया।

— +

जिसने इश्क का दामन नहीं पकड़ा, उसके नमाज़ पढ़ने से क्या और पूजा करने से क्या ?

\+ +

जिसके दिल में कपट का कचरा भरा हुआ है, उसके वजू करने, और मसजिद में सौ-सौ बार सर झुकाने से क्या फायदा ? उसका नमाज़ पढ़ना बेकार है और काबे जाकर हज करने से क्या होता है ?

× ×

"मुसलमान हम उसे कहते हैं, जो ईमान की रक्षा करता है, अल्लाह की आज्ञा मानता है, और सब को सदा सुख पहुँचाता

है। जिसने दया का दामन पकड़ रखा है, जो हमेशा शीतलता का संचार करता है, किसी को दुख की आग से जलाता नहीं; जो न मुर्दों को खाता है और न जिन्दा को हलाल करता है; हर घड़ी जो अल्लाह की बन्दगी में और अपनी आक़बत बनाने में लगा रहता है, उसी को धर्मनिष्ठ मुसलमान समझो।

\+ \+

जिसने सत्य और सन्तोष को दिल में ऊँची जगह दे रखी है, जो सदा सत्य-पथ पर चलता है, लोक-परलोक के रस्ते को संवारता रहता है उसके लिये तो सदा स्वर्ग का द्वार खुला रहता है!"

\+ \+

"आज मेरा वह भ्रम दूर हुआ। अब अल्लाह और राम को अभेद की दृष्टि से देखता हूँ। मेरे लिये हिन्दू और मुसलमान दोनों अब एक ही हैं, दोनों में ही प्रभू, मैं तेरा दीदार पाता हूँ। हिन्दू और मुसलमान के प्राण औ पिंड में क्या कोई भेद है? दोनों में वही रक्त, है, और वही मांस। न आँखों में कोई अन्तर है, न नाक में। सहज ही में तूने यह अजब लीला रच डाली! कान सबके एक—समान ही शब्द सुनते हैं, मीठा खट्टा सब की जीभ को एक-सा ही लगता है। भूख सब को एक-सी लगती है हर घट की रचना में एक ही युक्ति दिखाई देती है वही सधि, वह बन्धन! हाथ पैर जैसे हिन्दू के हैं, वैसे ही मुसलमान के, एक से शरीर हैं—एक-सा सुख है, एक-सा दुख है। खालिक धन्य है तेरा यह अजब खेल! धन्य है कर्तार, तेरी मोहनी लीला!"

—:०:—

गुरू नानक के आदर्श उपदेश

तुम्हें ऐसा नम्र होना चाहिए, जैसी कि नन्हीं दूब। आँधी आने पर बड़े-बड़े पेड़ उखड़ जाते हैं, पर दूब ज्यों-की-त्यों बनी रहती है।

+ +

यह शरीर मिट्टी के कच्चे पात्र की तरह है। यह जन्म लेता और मरता है तथा सुख-दुःख भोगता है।

÷ –

जप, ध्यान तथा तप सब तब पूर्ण होते हैं जब अनन्त भगवान हृदय में वास करते हैं।

÷ ÷

गुरु के उपदेशों के अनुसार भगवान के नाम के रंग में डूबी हुई बुद्धि वाले को ही परमात्मा की उपासना करनी आती है।

÷ –

दो मार्ग हैं। एक स्वार्थ मार्ग और दूसरा निस्वार्थ मार्ग। यदि हम स्वार्थ का अनुसरण करेंगे तो सफलता प्राप्त करने के हम चाहे जितने उपाय करें हमें केवल निराशा ही निराशा प्राप्त होगी। हम और अधिक उपाय करने को प्रेरित होंगे पर अन्त में शरीर और मस्तिक दोनों थक कर रह जायेंगे।

– +

निस्वार्थ मार्ग से कन्या को वर का पुनीत प्रेम प्राप्त होता है। इसलिए जब हम अपने को भगवान 'का अर्पण कर देते

हैं तो हम उसके प्रेम-प्रवेश के लिए अपने हृदय को खोल देते हैं। जो हमें पाप तथा दुःख से मुक्त कर देता है।

❀ ❀

मेरे प्यारे भाइयो ! इसके सिवा कोई दूसरा मार्ग नहीं है। भगवान की इच्छा के सम्मुख सिर झुकाना ही मोक्ष मार्ग है और अपनी इच्छा को उपयोग में लाना दुःख मार्ग है।

❀ ❀

पहले मार्ग से जीव को तत्काल मुक्ति प्राप्त होती है और दूसरे से वह काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा मद इन पांचों शत्रुओं के बन्धन में फँस जाता है।

— —

जो पैदा करता है और दान करता है वह पवित्र जीवन के उपायों को जानता है। जो सम्पत्ति जमा करके रखी जाती है वह उसी प्रकार मूल्यहीन है जैसे गहरे भूगर्भ में छिपा सोना। मनुष्यों के प्रयोग में आने से ही सोना का कुछ मूल्य है। इसलिए अपनी सम्पत्ति को किसी प्रयोग में लगाओ, क्योंकि जो धन पैदा करते हैं वे जानते हैं कि उसका सदुपयोग कैसे किया जा सकता है और जो लोग धन पा जाते हैं वे उसे उड़ाना ही जानते हैं।

× ×

मेरी बहनो ! तुम में भावी प्राणियों के निर्माण की शक्ति है। अपने को भगवान को अर्पण कर दो और ईश्वरी दया तथा सहायता का अनुशरण करो। तब यह घर वास्तविक-मूल्य की सम्पत्ति से भर जायगा और जिन लोगों की सहायता प्राप्त होगी उनके प्रेम के प्रकाश से इसका अन्धकार दूर हो जायगा।

—:०:—

स्वामी रामकृष्ण–परमहंस के आदर्श उपदेश

किसी गाँव में जाते हुए एक महात्मा के पैर से एक मूर्ख का अंगूठा कुचल गया, क्रोधित हो उसने महात्मा को इतना मारा, कि वह पृथ्वी पर गिर पड़े। बड़ी कठिनाई से इलाज करने पर एक चेले ने पूछा, ये इलाज करने वाले कौन हैं, साधु बोला, जिसने मुझे पीटा था वह। सच्चे साधु, शत्रु और मित्र में भेद नहीं समझते हैं।

\-　　　　\-

माया पर मात्मा को ऐसे ढक लेती है जैसे कि बादल सूर्य को ढक लेते हैं। जब बादल हट जाते हैं, तो सूर्य दिखाई देता है। ऐसे ही जब माया हट जाती है, तो भगवान के दर्शन हो जाते हैं।

\+　　　　\+

पर मात्मा और जीवात्मा में क्या सम्बन्ध है। जैसे किसी बहते पानी में कोई काष्ट का पट्टा पटकने से उसके दो भाग हो जाते हैं। ब्रह्म में कोई भेद नहीं, परन्तु माया के कारण वे दिखाई देते हैं।

❀　　　　❀

बुल-बुला और पानी एक ही वस्तु है। वही बुल-बुला पानी से बन कर उसी पर तैर कर उसी में मिल जाता है, ऐसे ही जीवात्मा और परमात्मा एक ही हैं। एक छोटा होने से परिमित है, दूसरा अपार है। एक पराधीन, दूसरा स्वाधीन है।

मछली की ताक में बैठे हुए एक बगुला पर एक शिकारी निशाना लगा रहा था। बगुला को पीछे की कुछ चिन्ता न थी। अवधूत बगुला को प्रणाम कर बोला मैं भी आपकी तरह ईश्वर के ध्यान में किसी की तरफ निगाह न करूं।

❀ ❀

मेंढक की दुम जब झड़ जाती है, तब जल और थल दोनों में रहता है। इसी तरह अज्ञान रूपी अँधेरा जब नष्ट हो जाता है, तब मनुष्य ईश्वर और संसार दोनों में रहता है।

– +

जिस प्रकार सरसों की भरी हुई बोरी फटने से चारों तरफ सरसों फैल जाती है, उसका इकट्ठा करना मुश्किल है। उसी प्रकार सब दिशाओं में फिरने वाले मोह के चक्कर में ग्रसित मन का इकट्ठा करना कठिन हो जाता है।

– –

ईश्वर का भक्त अपने ईश्वर के लिये सब सुखों तथा सब वस्तुओं का परित्याग कर देता है। जैसे कि चींटी चीनी के ढेर में मर जाती है, परन्तु पीछे नहीं लौटती है।

+ +

जैसे कि दूसरों की हत्या के लिये तलवारादि की जरूरत पड़ती है और अपने लिये एक सुई की नोंक ही काफी है। इसी तरह दूसरों को उपदेश देने के लिये बड़े २ शास्त्रों की जरूरत है। परन्तु आत्म-ज्ञान के लिये महावाक्य पर दृढ़ विश्वास करना ही काफी है।

जो प्रलोभनों के बीच में रह कर मन को वश में करके पूर्ण ज्ञान प्राप्त करता है, वही सच्चा शूरमा है।

× ÷ ×

जिस तरह एक भिखारी एक हाथ से सितार एक हाथ से ढोलक साथ ही मुँह से गाता जाता है, उसी तरह संसारी जीवो तुम भी सांसारिक कर्म करो, परन्तु ईश्वर के नाम को न भूल कर उसका भी ध्यान करते रहो।

– × ×

जिस प्रकार कुलटा स्त्री घर के काम-काज करते हुए भी अपने प्रेमी की याद करती रहती है, उसी प्रकार तुम भी संसार के धन्धों को करते हुए भी ईश्वर का स्मरण करते रहो

× × ×

एक बार डुबकी लगाने से अगर मोती न मिले तो यह न कहना चाहिये कि समुद्र में मोती ही नहीं। दुबारा डुबकी लगाओ, मोती अवश्य मिलेंगे, उसी तरह ईश्वर एक बार प्रयत्न करने पर न मिलें तो यह न कहना चाहिए कि ईश्वर ही नहीं है। दुबारा फिर प्रयत्न करो।

× ÷ ×

कुतुबनुमा की सुई हमेशा उत्तर की ओर रहती है, इसी से समुद्र में जहाजों को अड़चन नहीं पहुँचती। इसी तरह जिसका ध्यान ईश्वर की तरफ है, वह संसार रूपी समुद्र में नहीं भटक सकता है।

× × +

देश में सुख और दुःख रहते ही हैं। जिसको ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है वह मन, प्राण, देह और आत्मा सब कुछ ईश्वर को समर्पित कर देता है। पंपा सरोवर में नहाते समय राम और लक्ष्मण ने सरोवर के किनारे पर मिट्टी में धनुष गाड़ दिया। नहाकर ऊपर आने पर लक्ष्मण ने धनुष निकाला तो उसकी नोक में रक्त लगा देखा। तब राम ने कहा कि देखो भाई, किसी जीव की हिंसा हो गई। लक्ष्मण ने मिट्टी हटाकर देखा तो एक बड़ा सा काला मेढक मरणासन्न मिला। राम ने उससे करुण-स्वर में पूछा कि तुमने शब्द क्यों नहीं किया। हम तुम्हें बचाने की चेष्टा करते। साँप के पकड़ लेने पर तो बेतरह चिल्लाया करते हो। मेढक ने कहा कि जब साँप पकड़ता है तो मैं यह कहता हूँ कि "राम रक्षा करो।" जब राम ही मार रहे हैं तो किसको बुलाऊँ?

× +

एक सच्चा साधू—बाल-ब्रह्मचारी—भीख माँगने गया था। एक औरत ने उसे भीख दी। उसकी छाती में स्तन देख कर साधू ने समझा कि फोड़ा हुआ है। उसने पूछा भी। घर की औरतों ने बतलाया कि उसके पेट में बच्चा होने वाला है। इस लिये भगवान स्तनों में दूध भरेंगे। इसी से ईश्वर ने पहले से ही प्रबन्ध कर रक्खा है। यह सुन कर बालक साधू विस्मित हुआ। उसने कहा—अब मैं भीख नहीं माँगूँगा। मेरे लिये भी प्रबंध हुआ होगा।

+ + +

राम ने पूछा कि हनुमान तुम सीता का समाचार लाये हो? किस तरह हैं वे? हनुमान ने कहा—सीता के शरीर में न मन

है और न प्राण। उन्होंने तो इन दोनों को आप के चरण-कमलों में समर्पण कर दिया है। इसी से केवल शरीर वहाँ पड़ा हुआ है। यमराज फेरी लगाता है। किन्तु करे क्या! निर्जीव शरीर है, मन और प्राण ता उसमें है हो नहीं। ईश्वर में सोलहों आना मन लगाने से यही अवस्था होती है।

+ + +

जो वास्तविक भक्त होता है उसके चेष्टा किये बिना ही ईश्वर सब जुटा देता है। वह तो राजा का बेटा है, जेब-खर्च पाता है। मैं वकील वगैरह की बात नहीं कहता जो कि पैसे के लिये मजदूरी करते हैं। मैं तो राजकुमार की बात कहता हूँ। जिसको कोई कामना ही नहीं, वह रुपया-पैसा क्यों माँगेगा! रुपया-पैसा तो उसके पास अपने आप आ जाता है। गीता में 'यदृच्छा-लाभ' का उल्लेख है।

+ + +

छोटी छोटी लड़कियाँ गुड़ियों का खेल कब तक खेलती हैं? जब तक ब्याह और स्वामी से भेंट नहीं होती। स्वामी से भेंट हो जाने के बाद गुड़ियाँ पड़ी रहती हैं। ईश्वर प्राप्ति के पश्चात् यही दशा प्रतिमा-पूजन की हो जाती है।

+ + +

हनुमान ने सोने की लङ्का जलाकर खाक कर दी। लोग देख कर दङ्ग रह गये। एक ने कहा इसको बन्दर ने जला डाला। किन्तु फिर कहा कि बन्दर क्या जलावेगा। सीता की आह और राम के कोप से लंका भस्म हुई है।

+ + +

ईश्वर तो कल्पवृक्ष है। वह सभी की इच्छा पूरी करेगा। किन्तु उससे माँगना पड़ेगा। संसारी के और सर्वत्यागी के ज्ञान में बड़ा अन्तर होता है। संसारी व्यक्ति का ज्ञान है दिये का उजाला जिससे घर के भीतर ही प्रकाश होता है--अपनी और घर की चीजों के सिवा और कुछ वह समझ नहीं पाता। सर्वत्यागी का ज्ञान सूर्य का प्रकाश है। उस प्रकाश में भीतर-बाहर सब चीजें देख पड़ती हैं।

÷ ÷ ÷

किसी की बेटी बचपन में विधवा हो गई थी। उसने पति का मुँह कभी देखा ही नहीं था। अन्य स्त्रियों के पति आते थे। यह देख कर उसने एक दिन पूछा कि पिता जी, मेरे स्वामी कहाँ हैं! तो उत्तर मिला कि तुम्हारे स्वामी गोविन्द जी हैं। बुलाने पर वे दर्शन देंगे। यह सुन कर वह लड़की किवाड़ बन्द करके रो-रोकर गोविन्द जी को पुकारने लगी। कहती थी कि आकर मुझे दर्शन क्यों नहीं दे जाते। उसका रोना सुन कर भगवान् को दर्शन देने जाना पड़ा।

× × ×

—:०:—

स्वामी दयानन्द के आदर्श उपदेश

मेरे विचार में सत्य बोलना, किसी को दुःख न देना, दया आदि शुभ गुण सब मतों में अच्छे हैं। बाकी लड़ाई-झगड़ा ईर्ष्या-द्वेष, और झूठ बोलना आदि सब मतों में वर्जित हैं। जो मनुष्य सत्य का पालन करता है, वही उत्तम गुणों को धारण करता है। सज्जन, विद्वान, धार्मिक और दूसरों की भलाई करनेवाले मनुष्य को सन्त कहते हैं। साधु उस मनुष्य को कहा जाता जो धर्मी और उत्तम कर्म करनेवाला हो, जो सदा दूसरों की भलाई में लगा रहे, विद्वान और गुणवान् हो, और सच्चा उपदेश देकर लोगों का दुःख दूर करे।

❀ ❀

वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। उसका पढ़ना-पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

× × ×

दूसरे की भलाई करना धर्म और दूसरे की हानि करना अधर्म है।

\+ \+ \+

वेश्या के पास जाने वाले मनुष्य की बहू बेटियों और लड़के बालों का आचार ठीक नहीं रहता।

− ÷ ÷

दान उसी को कहते हैं जो विद्या-प्रचार, कला-कौशल की उन्नति, और रोगियों तथा अनाथों की सेवा में लगाया जाय।

× × ×

मनुष्य को चाहिये कि पहले अपने दोषों को देख भाल कर निकाल दे, तब दूसरों के दोष और दुर्गुणों पर दृष्टि डाले।

× × ×

ईश्वर ने मनुष्य में जितनी शक्ति दे रक्खी है उतना पुरुषार्थ उसे अवश्य करना चाहिये।

− − +

ईश्वर की सहायता के बिना धर्म का पूरा ज्ञान और उसका अनुष्ठान कभी नहीं होता।

\+ ÷ ÷

जो मनुष्य सच्चे प्रेम और भक्तिभाव से भगवान् की उपासना करता है उस उपासक को अन्तर्यामी परमेश्वर मोक्ष का सुख प्रदान कर सदा के लिये आनन्दित कर देता है।

÷ ÷ −

जिन लोगों का मन विद्या में लगा रहता है, जो सदा सत्य बोलते हैं, जो अभिमान नहीं करते, जो सदा पवित्र रहते हैं,

जो सत्य उपदेश और विद्यादान से संसारी लोगों का दुःख दूर करते हैं ऐसे परोपकारी नर-नारी धन्य हैं।

- - -

जो मनुष्य स्वार्थी हैं, अपने ही प्राणों को पुष्ट करने वाले और छली-कपटी हैं, वे असुर हैं। और जो आदमी परोपकारी, दूसरे के दुःख को नाश करने वाले, तथा धर्मात्मा हैं वे 'देव' कहलाते हैं।

❀ ❀ ❀

गुण-कर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था के विषय में यह आवश्यक है कि वर्तमान जन्म मूलक जात-पॉत के बन्धनों को तोड़ कर विवाह हो। इस कार्य की सिद्धि के लिये प्रत्येक प्रान्त के मनुष्य मिल कर यत्न करें। जन्म-मूलक जात पॉत जब तक स्थिर है देश तथा आर्यों की उन्नति नहीं हो सकेगी। जात-पॉत तोड़े बिना वर्ण-व्यवस्था का क्रम ठीक न हो सकेगा।

❀ ❀ ❀

परमात्मा की उपासना से ही आत्मआनन्द बढ़ता है और पाप का नाश होता है।

❀ ❀ ❀

मित्र को एक दूसरे के साथ अपनी आत्मा और प्राणों के समान वर्ताव करना चाहिए। मालिक नौकर के साथ ऐसा वर्ताव करे जैसा वह अपने अंगों के साथ करता है। अपने पड़ोसी को अपनी देह के तुल्य जानना चाहिए।

× × ×

कोई कितना ही करे, जो स्वदेशी राज्य होता है वह सबसे अच्छा होता है। मत-मतान्तर के झगड़े से दूर, अपने-पराये

की रियायत न करनेवाला, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा करनेवाला, न्याय और दया से युक्त भी विदेशियों का राज्य क्यों न हो, तो भी वह पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।

× × ×

जब भाई से भाई लड़ने लग जाता है, तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है।

× × ×

सत्य से बड़ा और कोई धर्म का अंग नहीं। जो लोग समझते हैं कि झूठ से काम सिद्ध होते हैं वे अज्ञानी हैं।

× ×

मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि वह वाणी और लेखनी द्वारा सत्य का प्रकाश और असत्य का नाश करे। ऐसा न करने से मनुष्यों की उन्नति नही हो सकती। मनुष्य जन्म का यही फल है कि सच और झूठ का निर्णय किया और कराया जाय, न कि झगड़ा और वैर विरोध बढ़ाया जाय।

× ×

सत्य मानना, सत्य बोलना, शुभ काम करना, इन्द्रियों को वश में रखना तप कहलाता है।

× ×

जो मनुष्य धर्मात्मा नहीं, जिसकी इन्द्रियाँ उसके वश में नहीं, जिसमें प्रभु की भक्ति नहीं उससे ईश्वर बहुत दूर रहता है।

❀ ❀

—:o:—

स्वामी विवेकानन्द के आदर्श उपदेश

सारी खराबियों का मूल कारण यह है कि तुम दुर्बल हो — अतिदुर्बल ! तुम्हारा शरीर दुर्बल है, तुम्हारा मन दुर्बल है,

आत्म विश्वास तो तुम्हारे अन्दर बिलकुल ही नहीं है। शत-शत वर्षों से विदेशी विजेताओं ने तुम्हें पीस डाला है। तुम्हारे अपने जनों ने भी तुम्हारे बल का हरण किया है। इस समय तुम पददलित, घायल, मेरुदण्डहीन, फोडे की तरह हो। इस समय तुम्हे बल और वीर्य की ही आवश्यकता है। तुम्हे विश्वास करना चाहिये, कि तुम आत्मा हो—अमर-अमोघ बल शाली !

❀ ❀

'कोरी गीता पाठ करने की अपेक्षा यदि तुम शारीरिक व्यायाम करो तो स्वर्ग के निकट पहुँच सकते हो।

❀ ❀

मनुष्य में भली भाँति पूर्णता का विकाश होना ही शिक्षा है। शिक्षा प्राप्त करके मनुष्य अभिमानी नहीं, विनम्र बनता है।

❀ ❀

जिस देश अथवा राष्ट्र में नारी पूजा नहीं है, वह देश या राष्ट्र कभी महान् या उन्नति नहीं हो सकता। नारी रूपी शक्ति का मान न करने ही से आज हमारा अधःपतन हुआ है। स्त्रियाँ माया की प्रतिमा हैं, जब तक उनका उद्धार न होगा, तब तक हमारे देश का उद्धार होना असम्भव है।

❀ ❀

दरिद्र, अज्ञानी और असमर्थ को ही अपना देवता मानों इन्हीं की सेवा में परम धर्म जानो।

❀ ❀

आप समझते हैं कि परीक्षा पास करने और अच्छे भाषण देने से कोई व्यक्ति शिक्षित हो सकता है। जो शिक्षा जनता-जनार्दन को, जीवन-संग्राम के लिये तैयार नहीं करती, उसका चरित्र-निर्माण नही करती, उसमें उदारता और वीरत्व उत्पन्न नही करती, वह किस काम की है? सच्ची शिक्षा वह है जो मनुष्य को अपने पाँवों पर खड़ा होना सिखाती है। किन्तु स्कूलों और कालेजों में आज जो शिक्षा दी जा रही है, वह तो अजीर्ण-ग्रस्त व्यक्तियों की नसल पैदा करती, जो केवल यंत्रवत् काम कर सकते हैं, सामुद्रिक मछली की तरह जिन्दगी के दिन काट सकते हैं।

❀ ❀

किसान; मोची भगी तथा हमारे देश की ऐसी ही और छोटो जातियों मे आप से अधिक काम करने की क्षमता और आत्म-विश्वास है। वे वर्षों से बिना चूँ-चाँ के चुपचाप काम करते हुये, सब कुछ पैदा कर रही हैं। वे बहुत जल्दी आप से

ऊँचा उठेंगी। धीरे-धीरे पूँजी उनके हाथों में जमा हो रही है और आपकी अपेक्षा उनकी आवश्यकताएँ बहुत थोड़ी हैं। आधुनिक शिक्षा ने आपका ढंग बदल दिया है, किन्तु अन्वेषक बुद्धि न होने के कारण उनके नये साधन अभी गुप्त पड़े हैं। आपने अब तक सहनशील जनता पर अत्याचार किया है और अब उसके लिये बदला लेने का समय आया है। आपके लिये नौकरी ही सब कुछ रह जायेगी और इसी की तलाश में भटकते हुये आप मिट जायँगे।

❀ ❀

बिना कारण के कार्य नही उपस्थित हो सकता। प्रथम वस्तु कारण है; और कार्य कारण का फल है।

\+ +

नम्रता स्वयं तो विना मूल्य आती है परन्तु उससे हर एक चीज खरीदी जा सकती है।

× ×

हर एक आदमी को दो तरह की शिक्षा मिलती है एक तो वह दूसरों से पाता है और दूसरी अपने आपको स्वयं देता है। दूसरी शिक्षा पहली से ज्यादा महत्व की है।

× ×

महात्मा गांधी के आदर्श उपदेश

सार्वजनिक स्थानों में मेरा चित्र लगा कर पूजने वालों से मेरी प्रार्थना है कि वे मेरे कार्यों की उन्नति करें, उनका प्रचार करें। मैं समझता हूँ ऐसा करके ही मेरा उचित सम्मान, समादर अथवा जो कुछ वे चाहते हैं, कर सकेंगे। "सम्पूर्ण भारत के उद्धार का भार बिना कारण सिर पर मत लो। अपना निज का ही उद्धार करो। इतना भार काफी है। सब कुछ अपने व्यक्तित्व पर लागू करना चाहिये। हम स्वयं ही भारतवर्ष हैं; बस यही मानने में आत्मा का बड़प्पन है। तुम्हारा उद्धार ही भारतवर्ष का उद्धार है। शेष सब व्यर्थ है, ढोंग है।"

× ×

चर्खा चलाओ; खादी पहनो, हरिजनों को अपनाओ; मुसलमानो से मिलो, उनका विश्वाश करो; गॉवों में जाओ; गॉववालों की सेवा करो, गॉवों की बनी चीजें खरीदो; देशी उद्योग-धंधों को बढ़ाओ, गरीबों की सेवा करो, बच्चों को नई तालीम दो, बहनों को बराबरी के हक दो, उन्हें घर के कैद-खानों से छुड़ाओ, सुबह से शाम तक मेहनत करो, मजदूरी करो. पसीने का कमाओ, पसीने का खाओ, किसी को लूटो मत, किसी को ठगो मत, किसी को कुचलो मत, किसी से लड़ो

मत, किसी पर बिगड़ो मत, सच्चे बनो, सच बोलो, अहिंसक बनो, हिंसा मत करो, जीने के लिये खाओ, खाने के लिये मत जियो, जरूरत की चीजें लो, रक्खो, गैर-जरूरी चीजों को बाँट दो, तन-मन-धन से किसी की चोरी न करो; किसी को चोर बनने के लिये मत ललचाओ, भले बनो, ब्रह्मचारी बनो, व्यायाम करके बलवान बनो, श्रमी बनो, श्रम की पूजा करो, न किसी से डरो, न किसी को डराओ, सम्बन्धियों का आदर करो, सब को समान समझो, स्वदेशी का पालन करो, जीवन में ऊँच-नीच के भाव को छूत-अछूत को आश्रय मत दो, व्रत की तरह इसको पालो, एक मिनट को भी इनसे न डिगो, इनकी उपासना करो, इन्हें साधो, इनसे गरीबी मिटेगी, इनको साधकर आदमी-आदमी बनेगा ।

÷ ÷

"जो बदला या यश की आशा न रख कर निःस्वार्थ भाव से सेवा करता है, वही देश और समाज की शुद्ध सेवा करता है।'

× ÷

"सर्व श्रेष्ठ धर्म तो वह है कि जो मनुष्य की प्रकृति को ही बदल दे, जो अन्तःकरण के सत्य से आत्मा का अविच्छेद सम्बन्ध कर दे और जो सदा शुद्धि की तरह हो।"

× ×

"किसी कार्य को आरम्भ न करना बुद्धि का प्रथम लक्षण है; परन्तु आरम्भ किया जाय तो उसे पूरा करना आवश्यक है।"

❀ ❀

रत्ती भर कार्य कोरी बातों के पुलन्दों से कहीं अच्छा है।

❀ ❀

"यदि कोई तुम्हें मारने आये तो हँसते-हँसते मर जाओ इसी का नाम आत्मिक बल या रूहानी ताकत है।"

❀ ❀

"धर्म की नाप तो प्रेम से, दया से और सत्य से होती है।"

"सत्य की कभी हत्या नहीं हो सकती।"

❀ ❀

"हमने जैसा बोया वैसा ही काटा, अन्त्यजों का तिरस्कार करके हम संसार के तिरस्कार के पात्र हुये हैं।"

\+ +

"अस्पृश्यता को बुद्धि ग्रहण नहीं कर सकती हम ऊँचे और अन्य नीचे हैं यह विचार ही नीच है।"

\+ +

"ब्राह्मण वही है जो क्षत्री, वैश्य एवं शूद्र इन तीनों वर्णों के गुणों से मुक्त हो और साथ ही उसमें ज्ञान भी हो।"

× ×

"धर्म का बदले के साथ कोई सम्बन्ध नहीं, उसका सम्बंध तो परमेश्वर के साथ है।"

× +

"तुम्हारे कार्य से किसी को दुःख न पहुँचे इसका ज्ञान रखना, एवं इसके अनुसार कार्य करना तुम्हारा कर्तव्य है।"

× ×

"मनुष्य जितना दुर्बल है सौभाग्य से प्रभु उतना ही समर्थ है। वह अनन्त साधनों द्वारा कार्य करता है।"

× ×

"जो अहिंसा धर्म का पूरा पूरा पालन करता है, उसके चरणों पर सारा ससार आ गिरता है। आस पास के जीवों पर भी उसका ऐसा प्रभाव पड़ता है कि साँप और दूसरे जहरीले जानवर भी उसे कोई हानि नहीं पहुँचाते।"

× ×

"सस्ते से सस्ता खरीद कर, महँगे से महँगे बेचना इस नियम के समान मनुष्य को कलङ्क लगाने वाला दूसरा नियम नहीं।"

× ×

"ईश्वर की अन्तिम परीक्षा सब से अधिक कठिन होती है।"

× ×

सत्य

"सत्य में ही सब बातों का समावेश हो जाता है। अहिंसा में चाहे सत्य का न होता हो पर .....सत्य में अहिंसा का समावेश हो जाता है।"

+ ×

"सत्य सर्वदा स्वावलम्बी होता है और बल तो उसके स्वभाव में ही होता है।";

× ×

मेरा यह विश्वास दिन-दिन बढ़ता जाता है कि सृष्टि में एक मात्र सत्य की ही सत्ता है और उसके सिवा दूसरा कोई नहीं है।",

× ×

"सत्य एक विशाल वृक्ष है। उसकी ज्यो-ज्यों सेवा की जाती है त्यों-त्यों उसमें अनेक फल आते हुये दिखाई देते हैं। अनका अन्त ही नहीं होता।

— —

"अहिंसा को जितना मैं पहचानता हूँ उसकी बनिस्बत मैं सत्य को अधिक पहचानता हूँ, ऐसा मेरा ख्याल है। यदि मैं सत्य को छोड़ दूँ तो अहिंसा की बड़ी उलझने मैं कभी न सुलझा सकूँगा, ऐसा मेरा अनुभव है।"

"परमेश्वर 'सत्य' है, यह कहने के बजाय 'सत्य' ही परमेश्वर है यह कहना अधिक उपयुक्त है।"

+ +

"अहिंसा धर्म में खतरे के समय अपने अजीजों को मुसीबत में छोड़ कर भाग खड़े होने के लिये जगह नहीं है। मारना या नामर्दी से भाग खड़ा होना, इनमें से यदि मुझे किसी बात को पसन्द करना पड़े तो मेरा उसूल कहता है कि मारने का हिंसा का रास्ता पसन्द करो।"

× ×

"डर कर भाग खड़े होना, मन्दिर छोड़ देना या बाजे बजाना बन्द कर देना या अपनी रक्षा न करना, यह मनुष्यता नहीं है; यह तो नमर्दी है। अहिंसा वीरता का लक्षण है—भीरु, डरपोक मनुष्य यह तक नहीं जान सकता कि अहिंसा किस चिड़िया का नाम है।"

× ×

"मैंने तो पुकार-पुकार कर कहा कि अहिंसा—क्षमा—वीर का लक्षण है। जिसे मरने की शक्ति है वही मारने से

अपने को रोक सकता है। मेरे लेखों से तुम भीरुता को अहिंसा मान लो तो? अपने लोगों की रक्षा करने के धर्म को खो बैठो तो मेरी अधोगति हुये बिना न रहे। मैंने कितनी बार लिखा है और कहा है, कि कायरता कभी धर्म हो ही नहीं सकती। संसार में तलवार के लिये जगह जरूर है। कायर का तो क्षय ही हो सकता है। उसका क्षय योग्य भी है।"

आत्म-बल के सामने तलवार बल तृणवत् है।

\+ +

"मेरे लिये 'सत्य धर्म' और 'हिन्दू धर्म' पर्यायवाची शब्द है। हिन्दू धर्म में अगर असत्य का कुछ अंश है तो मैं उसे धर्म नहीं मान सकता। अगर इसके लिये सारी हिन्दू जाति मेरा त्याग कर दे और मुझे अकेला भी रहना पड़े तो भी मैं कहूँगा, मैं अकेला नहीं हूँ, तुम अकेले हो। क्योंकि मेरे साथ सत्य है और तुम्हारे साथ नही है। सत्य तो प्रत्यक्ष परमात्मा है।"

❀ ❀

अहिंसा

"अहिंसा ही सत्येश्वर का दर्शन करने का सीधा और छोटा-सा मार्ग दिखाई देता है।"

× ×

"सत्य के बाद अहिसा ही संसार में बड़ी से बड़ी सक्रिया शक्ति है। विफल तो वह कभी जाती ही नहीं। हिंसा केवल ऊपर से सफल मालूम पड़ती है।"

× ×

"मेरी आज भी वही ज्वलन्त श्रद्धा है कि संसार के समस्त देशों में भारत ही एक ऐसा देश है जो अहिंसा की कला सीख सकता है।"

❀ ❀

"शस्त्रीकरण की दौड़ में शामिल होना हिन्दुस्तान के लिये आत्मघात करना है। भारत अगर अहिंसा को गँवा देता है, तो संसार की अन्तिम आशा पर पानी फिर जाता है।"

❀ ❀

अगर हिन्दुस्तान जगत को अहिंसा का सन्देश न दे सका तो यह तबाही आज या कल आने वाली है, और कल के बदले आज इसके आने की सम्भावना अधिक है। जगत युद्ध के शाप से बचना चाहता है, पर कैसे बचे, इसका उसे पता नहीं चलता। यह चाबी हिन्दुस्तान के हाथ है।

❀ ❀

"जहाँ सिर्फ कायरता और हिंसा के बीच किसी एक के चुनाव की बात हो वहाँ मैं हिंसा के पक्ष में राय दूँगा।"

❀ ❀

मेरा विश्वास है कि अहिंसा हिंसा से असीम गुनी ऊँची चीज है। क्षमा दण्ड से अधिक पुरुषोचित है—क्षमा वीरस्य भूषणम्। . . .

— ÷

" अगर भारत तलवार के सिद्धान्त को अपनाता है तो उसे क्षणिक विजय प्राप्त हो सकती है। पर तब भारत मेरे हृदय का गौरव न रह जायगा। भारत के प्रति मेरी भक्ति इसलिये है कि मेरे पास जो कुछ है वह सब मैंने उसी से पाया

है। मेरा पक्का विश्वास है कि उसे दुनिया को एक सन्देस देना है। उसे अन्धा बन कर युरोप की नकल नहीं करनी है। जिस दिन भारत तलवार का सिद्धान्त ग्रहण करेगा वह मेरी परीक्षा का दिन होगा और मुझे आशा है कि मैं अपने कर्तव्य में हलका न उतरूँगा। मेरा धर्म भौगोलिक सीमाओं में बँधा हुआ नहीं है। अगर इसमें मुझे जीवित श्रद्धा होगी तो वह मेरे भारत-प्रेम को भी पार कर जायगी। मैं अहिंसा द्वारा, जिसे मैं हिन्दू धर्म का मूल समझता हूँ, भारत की सेवा के लिये अपना जीवन अर्पित कर चुका हूँ।"

× ×

"सम्पूर्ण आत्म शुद्धि के प्रयत्न में मर मिटना यह अहिंसा की शर्त है।"

× ×

"मेरा धर्म मुझे शिक्षा देता है कि औरों की रक्षा के लिये अपनी जान दे दो, दूसरे के मारने के लिये कभी हाथ न उठाओ। पर मेरा धर्म मुझे यह कहने की भी छुट्टी देता है कि अगर ऐसा मौका आवे कि अपने आश्रित लोगों या जिम्मे के काम को छोड़ कर भाग जाने या हमला करने वाले को, मारने में से किसी एक बात को पसन्द करना हो, तो यह हर मनुष्य का कर्तव्य है कि वह मारते हुये वहीं मर जाय। अपनी जगह छोड़ कर भागे कदापि नहीं। मुझे ऐसे हट्टे-कट्टे पछत्ते लोगों से मिलने का दुर्भाग्य प्राप्त हुआ है जो सीधे-सरल भाव से आकर मुझसे कहते हैं, जिसे मैंने बड़ी शर्म के साथ सुना है, कि मुसलमान बदमाशों को हिन्दू अबलाओं पर बलात्कार करते हुये हमने अपनी आँखों से देखा है। जिस

समाज में जवाँमर्द लोग रहते हैं। वहाँ बलात्कार की आँखों देखी गवाहियाँ देना प्राय: असम्भव होना चाहिये ऐसे जुर्म की खबर देने के लिये एक भी शख्स जिन्दा न रहना चाहिये। एक भोला-भाला पुजारी, जो अहिंसा का मतलब नही जानता था, मुझसे खुशी खुशी आकर कहता है कि जब हुल्लड़बाजों की भीड़ मन्दिर में मूर्ति तोडने को घुसी तो मैं बड़ी होशियारी से छिप रहा। मेरा मत है कि ऐसे लोग पुजारी होने के योग्य कदापि नहीं हैं। इसे वहीं मर जाना चाहिये। तब उसने अपने खून से उस मूर्ति को पवित्र कर दिया होता। मूर्ति तोड़ने वालों का संहार करना भी उसके लिये ठीक था। परन्तु अपने इस नश्वर शरीर को बचाने के लिये रहना मनुष्योचित न था।"

× ×

"कायरता की अपेक्षा बहादुरी के साथ शरीर बल का प्रयोग करना कहीं श्रेयस्कर है।"

× ×

"अहिंसा कुछ डरपोक का, निर्बल का धर्म नहीं है। वह तो बहादुर और जान पर खेल जाने वाले का धर्म है। तलवार से लड़ते हुये जो मरता है वह अवश्य बहादुर है, किन्तु जो मारे बिना धैर्यपूर्वक खड़ा खड़ा मरता है वह और भी अधिक बहादुर है।...मार के डर से जो अपनी स्त्रियों का अपमान सहन करता है वह मर्द न रह कर नामर्द बनता है। वह न पति बनने लायक है, न पिता या भाई बनने लायक।...जहाँ जहाँ नामर्द बसते हैं वहाँ बदमाश तो होंगे ही।"

— —

"चाहे जो हो, कायरता को तो छोड़ ही देना है। अहिंसा लाचार और भीरुओं के लिये नहीं है।"

× ×

"मेरा मतलब यह है कि हमारी अहिंसा उन कायरों की चीज न हो जो लड़ाई से डरते हैं; खून से डरते हैं, हत्यारों की आवाज से जिनका दिल कॉपता है। हमारी अहिंसा तो पठानों की अहिंसा होनी चाहिये।"

× ×

"मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि अगर हमारी अहिंसा वैसी न हुई जैसी कि वह होनी चाहिये, तो राष्ट्र को उससे बड़ा नुकसान पहुँचेगा क्योंकि उसकी आखिरी तपिश में हम बहादुर के बजाय कायर साबित होंगे। और आजादी के लिये, लड़ने वालों के लिये, कायरता से बड़ी कोई बेइज्जती नहीं है।"

\+ +

देवता कौन है ?

"दुनिया में देवता नाम की कोई सत्ता नहीं है, बल्कि वे सब जो उत्पादन-शक्ति और समाज के लिये काम करने की इच्छा रखते हैं और उसको कार्यरूप में परिणत भी करते हैं, वही देवता है; फिर भले ही वे मजदूर हों या पूँजीपति।"

\+ +

राम, खुदा, ईसा, कहाँ है ?

"राम रामायण मे नहीं हैं; कृष्ण गीता में नहीं है, खुदा कुरान में नहीं हैं; ईसा बाइबिल में नहीं हैं। वे सब तो मनुष्य के चरित्र में हैं, नीति सत्य में है और सत्य शिव है।"

× ×

सड़कों पर पत्थर तोड़ना गुलामी से अच्छा है।

"आजादी के लिये अपढ़ रह कर खुशी से सड़कों पर पत्थर तोड़ना भी गुलामी के भीतर रह कर विद्या पढ़ने से कहीं अच्छा है।"

"अछूतों का तिरस्कार करना मनुष्यता को खो देना है।"

× ×

"पुस्तक ही ज्ञान की कुञ्जी है। जिसे उत्तम पुस्तकों के पढ़ने का शौक है वह सब जगह सुखी रह सकता है।"

+ +

"ईश्वर न काबा में है, न काशी में है। वह तो घर-घर में व्याप्त है—हर दिल में मौजूद है।"

❀ ❀

"ईश्वरी प्रकाश किसी एक ही राष्ट्र या जाति की सम्पत्ति नहीं है।"

× ×

"ईश्वर ही प्रकाश है, अन्धकार नहीं। वह प्रेम है, घृणा नहीं। वह सत्य है, असत्य नहीं। एक ईश्वर ही महान है। हम उसके वन्दे उसकी ही चरण-रज हैं।"

+ +

"-ार्थना करना याचना करना नहीं है, वह तो आत्मा की पुकार है।"

– –

"स्वर्ग और पृथ्वी सब हमारे ही अन्दर है। हम पृथ्वी से तो परिचित हैं पर अपने अन्दर के स्वर्ग से बिलकुल अपरिचित हैं।"

× ×

"धर्म तो सिखाता है कि जीवमात्र अन्त में एक ही हैं। अनेकता क्षणिक होने के कारण आभास मात्र है। लेकिन राष्ट्र भावना भी हमें यही पाठ देती है।"

× ×

झूठ

"सबसे अच्छा तो यही है कि झूठ का कोई जवाब ही न दिया जाय। झूठ अपनी मौत मर जाता है। उसकी अपनी कोई शक्ति नहीं होती। विरोध पर वह फलता फूलता है।"

❀ ❀

जीवन में प्रतिज्ञा का महत्व

'प्रतिज्ञा-हीन जीवन बिना नींव का घर है; अथवा यों कहिये कि काग़ज का जहाज है।.. प्रतिज्ञा के बल पर ही संसार यह टिका हुआ है। प्रतिज्ञा न लेने का अर्थ अनिश्चित या डॉवाडोल रहना है।

ब्रह्मचर्य

"ब्रह्मचर्य का अर्थ है मन, वचन और कार्य से समस्त इन्द्रियों का संयम। जब तक अपने विचारों पर इतना कब्जा न हो जाय कि अपनी इच्छा के बिना एक भी विचार न आने पावे तब तक वह सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य नहीं। जितने विचार हैं वह सब एक तरह के विकार हैं। उनको वश में करने के मानी है मन को वश में करना और मन को वश मे करना वायु को वश में करने से भी कठिन है। इतना होते हुए भी यदि आत्मा कोई चीज है तो फिर यह भी साध्य होकर रहेगा।"

ब्रह्मचर्य का आचरण

"ब्रह्मचारी रहने का यह अर्थ नहीं कि मैं किसी स्त्री को स्पर्श न करूँ, अपनी बहिन का स्पर्श न करूँ. । ब्रह्मचारी होने का यह अर्थ है कि स्त्री का स्पर्श करने से किसी प्रकार का विकार न उत्पन्न हो जिस तरह कि कागज को स्पर्श करने से नहीं होता । मेरी बहिन बीमार हो और उसकी सेवा करते हुये, उसका स्पर्श करते हुये ब्रह्मचर्य के कारण मुझे हिचकना पड़े तो वह ब्रह्मचर्य तीन कौड़ी का है जिस निर्विकार दशा का अनु, भव हम मृत्य शरीर को स्पर्श कर के कर सकते हैं उसी का अनुभव जब हम किसी सुन्दरी युवती को स्पर्श करके कर सकें तभी हम ब्रह्मचारी है ।"

सेवा के लिए ब्रह्मचर्य

"देश सेवा के लिये जो लोग सत्याग्रही होना चाहते हैं उन्हें ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये, सत्य का सेवन तो करना ही चाहिए और निर्भय बनना चाहिये ।"

ब्रह्मचर्य और आस्तिकता

"मुझे यह बात कहनी ही होगी कि ब्रह्मचर्य व्रत का; तब तक पालन नहीं हो सकता जब तक कि ईश्वर में, जो कि जीता-जागता सत्य है; अटूट विश्वास न हो ।,'

अस्वाद

"अस्वाद का अर्थ है स्वाद न लेना । स्वाद मनोरस । किसी भी वस्तु को स्वाद के लिये चखना (अस्वाद) व्रत का भग है ।"

अस्तेय

"जिस चीज की हमें जरूरत नहीं है, उसे जिसके अधि-कार मे वह हो उसके पास से उसकी आज्ञा लेकर भी लेना

चोरी है। अनावश्यक एक भी वस्तु न लेना चाहिये। मन से हमने किसी की वस्तु प्राप्त करने की इच्छा की या उस पर जूठी नजर डाली तो वह चोरी है।"

अपरिग्रह

"सच्चे सुधार का, सच्ची सभ्यता का लक्षण परिग्रह बढ़ाना नहीं है, बल्कि उसका विचार इच्छा पूर्वक घटाना है। ज्यों ज्यों परिग्रह घटाइए, त्यों-त्यों सच्चा सुख और सच्चा सन्तोष बढ़ता है, सेवा-शक्ति बढ़ती है।"

अभय

"अभय व्रत का सर्वथा पालन लगभग अशक्य है। भय मात्र से मुक्ति तो जिसे आत्मसाक्षात्कार हुआ हो वही पा सकता है। अभय मोह-रहित अवस्था, अवस्था की परा-काष्ठा है।"

स्वदेशी

"स्वदेशी तो शाश्वत धर्म है। स्वदेशी आत्मा है, खादी इस युग के लिये उसका शरीर। स्वदेशी एक सेवा धर्म है। स्वदेशी में स्वार्थ नहीं, शुद्ध परमार्थ है।"

× ×

स्वदेशी यह नहीं है कि अपने गढ़े में डूब मरें, किन्तु स्वदेशी के माने हैं अपने गढ़े की सार्वजनिक समुद्र में होम करना।

आलस्य

'जो सत्य अहिंसा का उपासक है, भारत और जीवमात्र की सेवा करना चाहता है, वह सुस्त नहीं रह सकता। जो समय का नाश करता है वह सत्य, अहिंसा और सेवा का भी नाश करता है। आलस्य एक प्रकार की हिंसा है।"

अस्पृश्यता

"अस्पृश्यता स्वयं एक असत्य है। असत्य का समर्थन कभी सत्य से नहीं हुआ, जैसे कि सत्य का समर्थन असत्य नही हो सकता। अगर होता है तो वह स्वयं असत्य हो जाता है।"

धार्मिक सहिष्णुता

"इस समय आवश्यकता इस बात की नहीं है कि सब का धर्म एक बना दिया जाय। बल्कि इस बात की है कि भिन्न भिन्न धर्मों के अनुयायी और प्रेमी परस्पर आदर भाव और सहिष्णुता रखे। हम सब धर्मों को मृतवत् एक सतह पर लाना नहीं चाहते। बल्कि चाहते हैं विविधता मे एकता। पूर्व परम्परा तथा आनुवंशिक संस्कार, जलवायु और दूसरी आस पास की बातों के प्रभाव को उन्मूलित करने का प्रयत्न केवल असफल ही नहीं बल्कि अधर्म होगा। आत्मा सब धर्मों की एक है, हाँ वह भिन्न-भिन्न आकृतियों में मूर्तिमान होती है।

❀ ❀

उपवास

"उपवास सत्याग्रह के शस्त्रागार में एक महान् शक्तिशाली अस्त्र है। इसे हर कोई नही चला सकता। केवल शारीरिक योग्यता इसके लिये कोई योग्यता नहीं। ईश्वर में जीती-जागती श्रद्धा न हो तो दूसरी योग्यताये बिलकुल निरुपयोगी हैं। विचार-रहित मनोदशा या निरी अनुकरण वृत्ति से वह कभी नहीं होना चाहिये। वह तो अपनी अन्तरात्मा की गहराई मे से उठना चाहिए।"

"गीता रत्नों की खान है।"

"भगवद्गीता और तुलसी दास की रामायण से मुझे अत्यधिक शान्ति मिलती है। मैं खुल्लम खुल्ला कबूल करता हूँ कि कुरान, बाइबिल तथा दुनिया के अन्यान्य धर्मों के प्रति मेरा अति आदर भाव होते हुये भी मेरे हृदय पर उनका उतना असर नहीं होता जितना कि श्रीकृष्ण की गीता और तुलसीदास की रामायण का होता है"

× ×

"जिस प्रकार एक रत्ती संखिया से लोटा भर दूध बिगड़ जाता है उसी प्रकार अस्पृश्यता से हिन्दू धर्म चौपट हो रहा है।"

❀ ❀

"चाहे मैं टुकडे टुकडे कर दिया जाऊँ, पर दलित जातियों से आत्मीयता न छोड़ूंगा।"

× ×

"जिस प्रथा की बदौलत हिन्दुओं का एक बड़ा भाग पशु से भी बदतर हालत को जा पहुँचा है उसके लिये मेरे रोम-रोम में घृणा व्याप्त हो रही है।"

❀ ❀

"वही काव्य और वही साहित्य चिरजीवी रहेगा, जिसे लोग सुगमता से पा सकेंगे, जिसे वे आसानी से पचा सकेंगे।"

❀ ❀

"कोई देश और कोई भाषा गंदे साहित्य से मुक्त नहीं है। जब तक स्वार्थी और व्यभिचारी लोग दुनिया में रहेंगे तब तक गन्दा साहित्य प्रकट करने वाले और पढ़नेवाले भी रहेंगे। लेकिन जब ऐसा साहित्य प्रतिष्ठित माने जाने वाले अखबारों के द्वारा होता है और उसका प्रचार कला और सेवा के नाम पर किया जाता है तब वह भयंकर स्वरूप धारण करता है।"

\+ +

"अत्यन्त आधुनिक साहित्य तो प्रायः यह शिक्षा देता है कि विषय-भोग ही कर्तव्य है और पूर्ण संयम पाप है।"

❀ ❀

"सब इतिहासकारों ने गवाही दी है कि जो सभ्यता भारत के किसानों में पाई जाती है, दुनिया के और किसानों में नहीं पाई जाती।"

❀ ❀

"हमारे सामने जो कुछ हो रहा है, उसे हम देख रहे हैं। आटे की छोटी छोटी मिलें हाथ की चक्कियों को, तेल की मिलें गाँव की ढेंकी को, और शक्कर की मिलें गुड़ बनाने के ग्रामीण साधनों आदि को विलुप्त करती जा रही हैं। ग्रामीण श्रम के इस प्रकार उठ जाने से ग्रामवासी कंगाल हो रहे हैं और धनी लोग मालदार बन रहे हैं। अगर काफी लम्बे अर्से तक यही क्रम चलता रहा तो और किसी प्रयत्न के बग़ैर ही गावों का नाश हो जायगा।"

— —

"सत्य ही राम है, नारायण है, ईश्वर है, खुदा है, अल्ला है, 'गाड' है।"

\+ +

"चरखा तो लँगड़े की लाठी है—सहारा है। भूखे को दाना देने का साधन है। निर्धर स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा करने वाला किला है।"

× ×

"भारतवर्ष एक पक्षी है। हिन्दू और मुसलमान उसके दो पंख हैं। आज ये दोनों पंख अपंग हो गये हैं और पक्षी आसमान में उड़ कर स्वतन्त्रता की आरोग्यप्रद और शुद्ध हवा लेने में असमर्थ हो गया है।"

+ +

"मैं तो कह चुका हूँ कि पाकिस्तान एक ऐसा 'असत्य' है जो टिक ही नहीं सकता। ज्यों ही इस योजना को बनाने वाले इसे अमल में लाने बैठेंगे उन्हें पता चल जायगा कि यह अमल में लाने वाली जैसी चीज ही नहीं है।"

× ×

"जो मनुष्य मार के डर से गाली खाकर बैठ रहता है, वह न मनुष्य है, न पशु है।"

× ×

"भारत इस समय मर्द बनने का पाठ पढ़ रहा है। यदि पूरा पाठ पढ़ ले तो स्वराज्य हथेली पर रखा है।"

× ×

"राजपूतों का इतिहास पढ़कर सीखो, कि वीरों का एक भी वचन मिथ्या नहीं जाता। 'वीरता' बातें कहने में नहीं, परन्तु उन्हें मिथ्या नहीं जाने देने में है।"

× ×

"बल तो निर्भयता में है, शरीर में मांस बढ़ जाने में नहीं।"

× ×

"जिस प्रकार बिना भूख के खाया हुआ भोजन नही पचता उसी प्रकार बिना दुःख के सुख भी नही पच सकता।"

— —

"रिवाज के कुयें में तैरना अच्छा है। उसमें डूबना आत्म-हत्या है।"

— —

"आँखे सारे शरीर का दीपक हैं।"

+ × ×

"निर्बल वह नहीं है जिसे निर्बल कहा जाता है बल्कि वह है जो अपने को निर्बल समझता है।"

— —

"गुण्डे सिर्फ बुजदिल लोगों के बीच पनप सकते हैं।"

+ +

गो-सेवा के बारे में अपने दिल की बात कहूँ तो आप रोने लग जायेंगे और मैं भी रोने लग जाऊँ इतना दर्द मेरे दिल में भरा हुआ है।"

— —

स्त्री

"स्त्री क्या है ? साक्षात् त्याग मूर्ति है जब कोई स्त्री किसी काम में जी जान से लग जाती है तो वह पहाड़ को भी हिला देती है।"

— —

"...स्त्री पुरुष की गुलाम नहीं है। वह अर्द्धांगिनी है, सहधर्मिणी है। उसको मित्र समझना चाहिये।"

× ×

'तुम अपनी पत्नी की आबरू की रक्षा करना पर उसके मालिक मत बन बैठना, उसके सच्चे मित्र बनना। तुम उसका शरीर और आत्मा वैसे ही पवित्र मानना; जैसे कि वह तुम्हारा मानेगी।"

+ +

"स्त्री को अबला कहना उसका अपमान करना है। उसे अबला कहकर पुरुष उसके साथ अन्याय करता है। अगर ताकत से मतलब पाशवी ताकत से है तो निस्सन्देह पुरुष की अपेक्षा स्त्री में कम पशुता है। पर इसका मतलब नैतिक शक्ति से है तो अवश्य ही पुरुष की अपेक्षा स्त्री कहीं अधिक शक्तिशालिनी है क्या स्त्री में पुरुष की अपेक्षाकृत अधिक प्रतिभा नही है? क्या उसका आत्मत्याग पुरुष से बढ़कर नहीं है? उसमें सहन शक्ति की कमी है? साहस का अभाव है? बिना स्त्री के पुरुष हो नही सकता? अगर अहिंसा हमारे जीवन का ध्यान-मन्त्र है तो कहना होगा कि देश का भविष्य स्त्रियों के हाथ में है।"

"बिना सहन-शक्ति और धैर्य के धर्म की रक्षा असम्भव है। स्त्री सहन-शक्ति की साक्षात् प्रतिमूर्ति है, धैर्य का अवतार है। धर्म के मूल्य में श्रद्धा रही है। जहाँ श्रद्धा नहीं वहाँ धर्म नहीं। स्त्री की श्रद्धा के साथ पुरुष की कोई तुलना नही हो सकती।"

"स्त्री में जिस प्रकार बुरा करने की, लोक का नाश करने की शक्ति है, उसी प्रकार भला करने की, लोकहित साधन

करने की शक्ति भी उसमें सोई हुई पड़ी है, यह भावना अगर स्त्री को हो जाय तो कितना अच्छा हो! अगर यह विचार छोड़ दे कि वह खुद अबला है और पुरुष के खेलने की गुड़िया होने के ही योग्य है तो वह खुद अपना और पुरुष का (फिर चाहे वह उसका पिता हो, पुत्र हो, या पति हो) जन्म सुधार सकती है, और दोनों के ही लिये इस संसार को अधिक सुखमय बना सकती है।"

"स्त्री अहिंसा की मूर्ति है। अहिंसा का अर्थ है अनन्त प्रेम और उसका अर्थ है। कष्ट सहने की अनन्त शक्ति पुरुष की माता, स्त्री, से बढ़कर इस शक्ति का परिचय अधिक से अधिक मात्रा में और किससे मिलता है? ..युद्ध में फँसी हुई दुनिया आज शान्ति-का अमृत पान करने के लिए तड़प रही है। यह शान्ति-कला सिखाने का काम भगवान ने स्त्री को ही दिया है।,,

"बिशयेच्छा एक सुन्दर और श्रेष्ठ वस्तु है; इसमें शर्म की कोई बात नहीं है। किन्तु यह सन्तानोत्पत्ति के लिए ही। इसके सिवा इसका कोई उपयोग किया जाय तो वह परमेश्वर और मानवता के प्रति पाप होगा।"

सन्तति-निरोध और नारी

"यह तो सच्चे स्त्री धर्म का सवाल है।...मैं सतियों की पूजा करता हूँ पर उन्हें कुएँ में नहीं गिराना चाहता। स्त्री का सच्चा धर्म तो द्रौपदी ने बताया है। पति अगर गिरता हो तो स्त्री न गिरे। स्त्री के संयम में बाधा डालना शुद्ध व्यभिचार है। यदि वह बलात्कार करने आवे तो उसे थप्पड़ मार कर भी सीधा करना उसका धर्म है। व्यभिचारी पति के

लिये वह दरवाजा बन्द कर दे। अधर्मी पति की पत्नी बनने से उसे इंकार करना चाहिये। हमें स्त्रियों के अन्दर यह हिम्मत पैदा कर देनी चाहिये।

"आम तौर पर बहिनों को मातृधर्म की शिक्षा नहीं मिलती लेकिन अगर गृहस्थजीवन धर्म है तो मातृजीवन भी धर्म ही है। माता का धर्म एक कठिन धर्म है। ..जो स्त्री देश को तेजस्वी, निरोग्य और सुशिक्षित सन्तान भेंट करती है, वह भी सेवा ही करती है।..."

दहेज

" ..जब वर कन्या के बाप से विवाह करने की मिहरबानी के लिये दड लेता है तब नीचता की हद हो जाती है। ..पैसे के लालच में किया गया विवाह, विवाह नही है, एक नीच सौदा है।

गहने

"...गहनों की उत्पत्ति की जो कल्पना मैंने की है, वह अगर ठीक है तो चाहे जैसे हल्के और खूबसूरत क्यों न हों हर हालत में गहने त्याज्य हैं। बेड़ी सोने की हो या हीरा मोती से जड़ी हो, आखिर बेड़ी ही है। अँधेरी कोठरी में बन्द करो या महल में रखो, दोनों में रखे स्त्री-पुरुष कैदी तो कहे ही जायँगे।"

हम लोगों को रोज स   रे   उठकर यह सकल्प चाहिये। मैं संसार में किसी से नहीं डरूँगा, अकेले से डरता हूँ। किसी से मैं वैर नहीं करूँगा, किसी के अन्याय के वश में नहीं रहूँगा। झूठ को सच्चाई से जीतूँगा, झूठ का सामना करते हुये यदि दु:ख सहना पड़े तो भोग लूँगा।

– +

अहिंसा सत्य की बुनियाद है। मेरा विश्वास है। कि जो सिद्धांत सत्य और अहिंसा की भित्ति पर कायम नहीं है, उस सिद्धांत का चलना असम्भव है। दुष्ट प्रणाली पर हमें आक्रमण करना चाहिये, उससे टक्कर लेनी चाहिये। पर प्रणाली के प्रणेता से वैर करना आत्मवैर सरीखा है। हम सब के सब एक ही प्रभु की सन्तान हैं। और सबके भीतर एक ही ईश्वर व्याप्त है। धर्मात्मा के भीतर और पापात्मा के भीतर भी; फिर एक जीव को कष्ट पहुँचाना मानो ईश्वर का अपमान करने और सारी सृष्टि को कष्ट पहुँचाने जैसी बात है।

\+ +

—:o:—

माता कस्तूरबाई गाँधी के आदर्श उपदेश

"हमारे देश की स्त्रियों को यह समझ लेना चाहिये, कि जैसे पति सेवा उनका एक धार्मिक कर्तव्य है वैसे ही देश सेवा भी उनका एक विशेष कर्तव्य है। जिस माँ की कोख से कोई जन्म लेता है उसके गौरव एवं यश के लिए कौन कामना नही करता। पर आवश्यकता इस बात की है कि केवल कामना ही न करे बल्कि उसके भविष्य को उज्ज्वल करने का प्रयत्न तन मन धन से किया जाय। हमारी शोभा और गौरव तभी होगा जब हम भारत माँ को स्वतन्त्र करा लेंगी।

"मैं ब्रिटिश साम्राज्यवाद को चुनौती देती हूँ कि वह चाहे जितना अत्याचार हम लोगों पर कर ले पर वह दिन शीघ्र आयेगा, जब कि भारत स्वाधीन होगा और पराधीनता का अन्धकार खत्म हो जायगा। हम स्वाधीन होने का सङ्कल्प कर चुके हैं, और हम स्वाधीन हो कर रहेंगे।"

श्रीमती सरोजिनी नायडू

—:०:—

लोक मान्य तिलक के आदर्श उपदेश

स्वराज्य हमारा जन्मगत अधिकार है। इस संग्राम में हमें ऐक्य-बद्ध होना होगा। जब तक सर्वसाधारण हमारे कामों में सम्मिलित न होंगे, तक तक हमें सफलता नहीं प्राप्त होगी। ज्ञान हीन ग्रामवासियों को हमें सब से अधिक उपयुक्त राजनीति की शिक्षा देनी होगी। गाँव-गाँव में जाकर स्वाधीनता-वाणी की घोषणा करनी होगी। ऐसे युवकों का दल आजकल कहाँ है? ग्रामवासियों को जगाओ। अगर स्वराज्य लेना चाहते हो तो जन-शक्ति को कर्मक्षेत्र में खींच लाओ।

× ×

सन्, १८१८ से १९१८ तक पूरे सौ वर्ष हो गये, दासत्व का असहनीय जीवन व्यतीत करते हुये। स्वराज्यलाभ किये बिना भारत कदापि सुखी नहीं हो सकेगा। जीवित रहने के लिये हमें तुरन्त ही स्वराज्य की आवश्यकता है। तुम अगर स्वाधीनता चाहो, तो स्वाधीन हो सकते हो और अगर स्वाधीनता न चाहो, तो तुम्हारा पतन अनिवार्य है! स्वाधीनता के बिना तुम्हारी पतितावस्था कभी भी नहीं दूर हो सकती। तुममें अनेक ऐसे हैं, जो अस्त्र धारण करना पसन्द नहीं कर

सकते। ... तुममें क्या आत्म-संयम की शक्ति नहीं है? तुम क्या इस प्रकार नहीं चल सकते, कि विदेशी राजशक्ति जरा भी सहायता न प्राप्त कर सके, इसी का नाम असहयोग है। क्या तुम इसे कर सकते हो? अगर कर सकते हो, तो तुम कल से ही स्वतन्त्र हो।

+ +

राजनीति के सम्पर्क में रहने से हमें आपदाओं का सामना करना पड़ेगा। मैं इस प्रकार की आपदाओं का सामना करने को सर्वदा प्रस्तुत हूँ। सरकार मुझे सताकर कुछ भी नहीं कर सकती, क्योंकि मैं दूसरों की तरह कच्चा नहीं हूँ, मैं जनता का केवल सेवक हूँ। अगर सङ्कट में पड़ कर लज्जाजनक कायरता दिखाऊँ, तो जनता उत्साह-हीन हो जायगी। अगर मैं दण्डित होऊँ तो सर्व-साधारण की सहानुभूति ही मुझे बल प्रदान करेगी।

यद्यपि जूरी ने मुझे दोषी बताया है, तथापि मैं अपने को निर्दोष समझता हूँ। जिस शक्ति द्वारा यह संसार परिचालित होता है, वह शक्ति माननीय विचार-क्षमता से कहीं श्रेष्ठ है। जिस पवित्र कार्य की साधना की मैंने कोशिश की है, मेरे क्लेश भोगने से देश उसकी सिद्धि की ओर अग्रसर होगा। मालूम होता है, भगवान की ऐसी ही इच्छा है।

+ +

विरुद्ध पक्ष चाहता है, कि मैं सिर झुका कर दोष स्वीकार कर लूँ। मुझसे ऐसा नहीं हो सकता। मेरे चरित्र-बल पर ही जनता के ऊपर मेरा प्रभाव निर्भर करता है और मेरी देश-सेवा का सुयोग भी इसी पर निर्भर है। ऐसी दशा में अगर

मैं भय का वशवर्त्ती होऊँ तो महाराष्ट्र में रहना या अण्डमन में रहना मेरे लिये बराबर है।

कर्तव्य की राह गुलाब-जल से सींचो हुई नहीं होती और गुलाब फूल हँसी से भरा होता है। यह बात सच है, कि हम जो कुछ चाहते हैं, वह इसी तरीके से बिप्लव है, क्योंकि हम नौकरशाही शासन-पद्धति में सम्पूर्ण परिवर्तन चाहते हैं और यह भी सच है, कि यह बिप्लव रक्तपात-विहीन होगा। परन्तु रक्तपात यदि न होगा, तब इसके लिये देशवासियों को कोई दुःख या कष्ट भी सहना न पड़ेगा, ऐसा विश्वास अगर किसी का हो तो वह उसकी निर्बुद्धिता का परिचायक होगा। केवल दुःख-कष्ट ही नहीं, गुरुतर दुःख-कष्ट भोगना पड़ेगा। क्योंकि दुःख-कष्ट भोगने के लिये प्रस्तुत हुये बिना, किसी विषय में भी सफलता नहीं प्राप्त हो सकती। तुम्हारा विप्लव रक्तपात-विहीन होगा, परन्तु यह न समझ लेना, कि तुम्हे उसके लिये कष्ट भी स्वीकार न करना पड़ेगा, अथवा जेल न जाना होगा।

× ×

लाला लाजपत राय के आदर्श उपदेश

ब्रिटिश जनता ने भारतवर्ष को युद्ध द्वारा नहीं जीता है। एक दल के लोगों को भय न दिखाते तथा दूसरे दल वालों को काम में न लगाते तथा भारत-वासियों द्वारा नैतिक और आर्थिक सहायता न प्राप्त होती, तो वे भारत को नहीं जीत सकते थे। उनके भारत के जीतने की कथा बड़ी ही कलङ्कपूर्ण है। ब्रिटिश इण्डियन कोर्ट में जिस समय भारतीय कानून द्वारा प्रतिष्ठित सरकार को नष्ट कर डालने के अभियोग में उपस्थित किये जाते हैं, तो उस समय वास्तव में बड़ी हँसी आती है। पूछने की इच्छा होती है, किस कानून के आधार पर इस देश में यह सरकार प्रतिष्ठित है?

❀ ❀

फाँसी की रस्सी, जल्लाद का कुठार, तोप का गोला, मनुष्य के जीवन का नाश कर सकता है, किन्तु जाति की शक्ति उससे बढ़ती है। निर्वासन, नजरबन्दी कारागार अत्याचार, जायदाद की जब्ती आदि अस्त्रों द्वारा अत्याचारी स्वतन्त्रता-कामियों का ध्वंस करना चाहता है। परन्तु अब तक इस प्रकार की चेष्टाएँ व्यर्थ ही सिद्ध हुई हैं।

— —

युवकों ने कारागार का भय छोड़ दिया है। कुछ दिनों में मृत्यु का भय उन्हें विचलित न कर सकेगा तब सरकार क्या करेगी? गवर्नमेण्ट उन्हें जेल दे सकती है; फाँसी पर लटका सकती है, किन्तु जेल जाने में कोई हरज नहीं है, मृत्यु हो जाय तो भी कोई चिन्ता नहीं—ऐसी मनोवृत्तियों के उदय होने पर क्या होगा?

× ×

स्वाधीनता-प्राप्ति की चेष्टा करने का प्रत्येक जाति को अधिकार है।......जिस अवस्था में पड़ कर सरकार हमारी माँग स्वीकार करने को बाध्य होगी। जब तक हम उस अवस्था की सृष्टि न कर सकेंगे; तब तक पूर्ण स्वाधीनता तो क्या, औपनिवेशिक स्वायत्त-शासन भी सरकार हमें न देगी। इस सम्बन्ध में मुझे जरा भी सन्देह नहीं है, आप चाहे पूर्ण स्वाधीनता चाहते हों या औपनिवेशिक स्वराज्य चाहते हों, इस अवस्था की सृष्टि करने के जो काम हैं, वही वास्तविक काम हैं।

× ×

धन क्या तुम्हारा है? जिसके हाथों में बल है, जिसके हाथों में फौज है, धन उसी का है, तुम तो सिर्फ खज़ाञ्ची हो। धन के साथ ही जिसमें शारीरिक बल नहीं है, बुद्धि नहीं है, सङ्गठन की शक्ति नहीं है, उसके धन का आज न सही, कल कोई दूसरा उपभोग करेगा ही। धन उसी के काम आता है, जिसमें आत्म-बल होता है। धन रहने से ही अगर सब कुछ हो सकता, तो आज हिन्दू जाति की इतनी दुर्दशा न होती। सोमनाथ का मन्दिर जिन्होंने पाया था, उनके पास धन की

क्या कमी थी? परन्तु धन कुछ भी न कर सका। महमूद ग़जनवी की तलवार से सोमनाथ की मूर्त्ति टुकड़े टुकड़े हो गई थी।

÷ ÷

वर्तमान भारत क्या चाहता है?

भारत चाहता है:—

१ माता पिता—जो प्यार करें, पढ़ावें, परन्तु हुकूमत न करे।

२ शिक्षक—जो अपने शिष्यों को 'विचार करना और मतभेद रखना सिखावें और जो अपनी बातों को उनके द्वारा सत्य माने जाने की आशा न करें।

३ नेता—जो राह दिखावें न कि आदेश दें।

४ मित्र—जो पारस्परिक आदर और साहाय्य के सच्चे सङ्कल्प से सम्मिलित हों, जो मतभेद से भिड़ न जायँ, व्यक्तिगत बातों से रुष्ट न हो जायँ और जो मत एवं हित के भिन्न होते हुये भी उदारता से सहायता करें।

५ वक्ता जो कोरी बातें न बघारें।

६ सचिव—जो मनुष्य-समाज को, भेड़ियों के समान अपनी भिन्नतों (लवड़योंयों का अनुसरण करने को कह कर, अनादर न करे।

७ पति—जो प्यार करे सेवा करें व कार्य में भाग लें, और पत्नियों का व्यक्तित्व न कुचलें; न नादिरशाही ही चलावे।

८ देशभक्त—जो टुकड़ों और हीनबातों की अपेक्षा गूढ़ तत्वों पर अधिक ध्यान दें।

९. भारतीय युवक—जो ऐहिक लाभ की अपेक्षा मनुष्यत्व, सम्मान एवं आत्मगौरव की अधिक परवाह करे, जो सेवा करने और दुःख झेलने के अवसरों को ढूढ़ें; जो आत्म-

संशोधन करके दूसरों के साथ न्याय करने की उदारता, और खतरा हो तो भी कार्य करने की, और मौलिकता की शक्ति को बढ़ावें।

१०पत्नियाँ—जो खुद को गुलाम, तुच्छ जीव या केवल बच्चे उत्पन्न करने की कल के समान व्यवपार न करने देते हुये अपने प्रेम, सम्मान और स्वाभिमान के गुणों को बनाये रक्खें।

११ अधिकारी—जो अधिकारों पर अधिकार न करे, परन्तु प्रजा को स्वय शासन करने का साहस दें।

१२ गवर्नर—जो शान-शौकत की फिक्र छोड़ कर न्याय, सत्य और सार्वजनिक भलाई की ओर अधिक ध्यान रक्खे।

१३ वायसराय जो ग्रेंटब्रिटेन की अपेक्षा भारत का अधिक ध्यान रक्खे।

१४ जमीनदार—अपनी थैली की फिक्र की अपेक्षा किसानों की मानुषिक आवश्यकताओं की अधिक चिन्ता करें।

१५ सार्वजनिक कार्यकर्तागण खिताब; सम्मान और जागीर की अपेक्षा सत्यता पर अधिक लक्ष रक्खें।

१६ विद्या ‘चारक—आचार्य एवं निपुण बनने की कम कोशिश करें और मनुष्य अधिक बनें।

१७ व्याख्यानदाता—सिद्धान्तवादी कम हों, और विचार एवं सत्य के सच्चे प्रतिपादनकर्त्ता अधिक हों।

१८ संवाददाता—जो तत्वों पर विशेप ध्यान दें न कि अपनी इच्छा के अनुसार घटनाओं को स्थिर करें।

१९ सम्पादकगण—असल बात की अधिक परवाह करें न कि व्यक्तिगत झगड़ों को लिखें।

२० सस्थाएँ—जो देश के हित की भले की, अधिक चिन्ता करें बनिस्बत अपनी सत्ता, थैली और नाम के।

श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के आदर्श उपदेश

अत्याचार हमें नही डरा सकता, बल्कि वह हमें अपने सङ्कल्प में दृढ़ कर देगा। आत्म-दलन करने वालों की शोणित-धारा से स्वाधीनता-मन्दिर की नींव मजबूत होती है और हमारे नौजवान आत्मदाताओं के रक्त से हमारी साधना पवित्र होगी। हमारा विश्वास चाहे सत्य हो या भ्रान्त; हम अपने को सवशक्तिमान ईश्वर का यन्त्र-स्वरूप समझते हैं, हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि हम उसी को ज्योति से उद्भासित पथ पर चल रहे है। इसे विभ्रम कह सकते हो, इसे कुसंस्कार के नाम से पुकार सकते हो, इसे उन्मत्तता समझ सकते हो, हमें मानवसमाज मे विभ्रान्त व्यक्तियों का समूह कह सकते हो, परन्तु हमारी तरह सुदृढ़ विश्वास लेकर जब मनुष्य काय करता है, तब वह अप्रतिहत-पराक्रम और दुधर्ष हो उठता है। इस सत्य की उपलब्धि अगर तुम नही कर सकते, तो तुम्हारा इतिहास पढ़ना वृथा है। मनुष्य जब इस तरह के विश्वास का विश्वासी होकर कार्य में प्रवृत्त होता है, तो वह संसार की सारी आपदाओं, बाधाओं और विघ्नों का सामना कर सकता है।

\+ +

युवको, मातृ-भूमि की सेवा के लिये जाग्रत होओ, युवकोचित साहस और उद्यम के साथ मातृ-भूमि की सेवा-साधना में लग जाओ। स्वदेशी आन्दोलन के साथ विद्यार्थियों का सम्पर्क रखना उचित नहीं, इस युक्ति द्वारा तुम्हें भ्रान्त करने की चेष्टा होती है। ऐसी धारणा को एक क्षण के लिये भी अपने हृदय मे स्थान न देना। स्वदेशी आन्दोलन की अपेक्षा

पवित्र साधना युवकों के लिये दूसरी नहीं हो सकती। . .
महाराष्ट्रोचित साहस, शौर्य और त्यागशीलता का परिचय प्रदान करो।

× ×

स्वाधीनता-संग्राम में एक दिन में विजय नहीं मिलती। ईर्ष्यापरायणा स्वतन्त्रता देवी दीर्घकाल-व्यापी कठोर साधना से अपने भक्त के प्रति प्रसन्न होती हैं। इतिहास पढ़ो। स्वाधीनता-संग्राम चलाने के लिये कठोर सहिष्णुता; धैर्य, त्याग और निष्ठा की आवश्यकता होती है, उसे सीखो।

× ×

विद्यार्थियो, हम अपने कार्य का भार तुम्हारे ऊपर दे जाते हैं। तुम इसके लिये अपने को उपयुक्त बना लो। सत्यपरायणता और पुरुषोचित निर्भीकता सीखो, अन्याय और अत्याचार के प्रति घृणा का भाव अपने चित्त में जगा लो। अपने अन्तर्तम पुरुष को जगा लो। अपनी पारिवारिक अवस्था की उन्नति करो।

÷ –

सारा इतिहास इस बात की घोषणा कर रहा है, कि स्वेच्छाचारी शक्ति की कोई भित्ति नहीं होती। इस शक्ति को स्थायी बनाने के लिये जनता की गम्भीर अनुरक्ति में उसे प्रतिष्ठित करना अनावश्यक है। स्वेच्छाचार शासन के परिवर्तन का एक स्वर है। उसकी मीयाद को अनावश्यक रूप से बढ़ाना उचित नहीं है। पुनर्गठन का समय आया है। इसलिये शक्ति जगी है, उपादान संग्रहीत हो चुका है।

× ×

——

देशबन्धु चितरंजनदास के आदर्श उपदेश

भारत के जल और भारत की मिट्टी में एक चिरसत्य छिपा है। वह सत्य प्रत्येक युग में नए-नए रूप से और नए-नए भावों में प्रकट होता है। हजारों परिवर्तन, आवर्तन और विवर्तन के साथ वह चिर-सत्य ही प्रकट हो उठा है। साहित्य, दर्शन, काव्य, युद्ध, विप्लव, धर्म, कर्म, अज्ञान, अधर्म, स्वाधीनता और पराधीनता में; वही अपने को घोषित कर रहा है। वही भारत का प्राण, भारत की मिट्टी, जल और वायु है, वही प्राणों का वहिरावरण है।

× +

सत्याग्रह हमारे स्वाधीनता-संग्राम का अन्तिम अस्त्र है। मैं इसे ब्रह्मास्त्र कहता हूँ। कुरुक्षेत्र के धर्मयुद्ध में महावीर गण्डीवी ने, जिस तरह सबसे पहले पाशुपत्यास्त्र का प्रयोग नहीं किया था, महावीर कर्ण ने भी जिस तरह, सबसे पहले 'एकाग्नी' अस्त्र का व्यवहार नहीं किया था। कोई वीर ऐसा नहीं करता—हम भी सब से पहले अपने अन्तिम अस्त्र का व्यवहार नहीं करेंगे। किन्तु सब अस्त्र समाप्त हो जायेंगे—अन्त जब स्वयं हमारे सामने आकर खड़ा हो जायगा, तब धर्म-क्षेत्र कुरुक्षेत्र के रथी को हृदय में धारण करके हम अपने अन्तिम अस्त्र के प्रयोग करने में सङ्कोच नहीं करेंगे—भयभीत न होंगे, क्योंकि हम जानते है, कि यह युद्ध है। यह युद्ध पशुबल के विरुद्ध मनुष्य के आत्मबल का युद्ध है। इस धर्म-युद्ध में

हम विजयी होंगे या हार जायँगे—इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। हमें यह विश्वास है, कि संसार का अतीत और वर्तमान इतिहास हमारे इस संग्राम की तरह एक संग्राम भी नही दिखा सकता। एक ओर वर्तमान युग के नवाविष्कृत विज्ञान की सहायता से सज्जित सैन्य-श्रेणी और दूसरी ओर निरस्त्र, दुर्भिक्ष-पीड़ित— भूख और प्यास से म्रियमाण तीस करोड़ नर-कङ्काल है ! कमर में वस्त्र का एक टुकड़ा लपेटे देशव्यापी क्षुधा और दरिद्रता की जीवित मूर्ति—भारत के प्रधान सेनापति, आज केवल आत्मबल को हाथ में लेकर, हमें समरक्षेत्र में बुला रहे हैं।

. . . .तुमने स्वाधीनता सग्राम में बड़ा त्याग किया है, बहुत कष्ट सहा है—तुम्हारे ही ऊपर राजरोप ने संहारमूर्ति के रूप में आत्म-प्रकाश किया है। अभी समय नहीं आया है, कि हम कुछ सम्मानपूर्वक अस्त्र रख कर विश्राम कर सकें। युद्ध अभी भी तुम्हारी अपेक्षा के कल-कोलाहल से मुखरित है। जाओ वीर, युद्ध करो, इतिहास के एक अत्यन्त गौरवान्वित युद्ध के तुम सिपाही हो, इसे कदापि न भूलना। जब युद्ध का अन्त होगा, जब सन्धि हो जायगी और शान्ति का शुभागमन होगा—तब सयत शान्त भाव से शन्तिमय मिलन-मन्दिर में—समुन्नत सिर से तुम प्रवेश करोगे—यह स्वप्न मैं साश्रु-नेत्रों से देख रहा हूँ। ....मिलन-मन्दिर के यात्री जिसमे तुम्हें देख कर कह सकें, ये वे सिपाही हैं, जिन्होंने युद्ध-क्षेत्र में भय को पराजित किया है, मृत्यु को तुच्छ समझा है और युद्ध के अन्त में जयमाल धारण करने पर विभव और सौजन्य से शत्रु को भी जीत लिया है।

——

पंडित मोतीलाल नेहरू के आदर्श उपदेश

हम देखते है, कि हमे जो अधिकार प्राप्त हैं वे हमारे शासकों के दिये हुये दान हैं। जब तक उनकी मर्जी होगी, तब तक हम उन अधिकारों का उपभोग कर सकेंगे। वे हमें अधिकार-वञ्चित कर सकते हैं—उनके हाथों मे जो क्षमता है उसके बल से बीच-बीच में, किसी प्रकार का कारण दिखाये बिना ही अधिकार से वञ्चित किया गया है। निर्यातन और निष्पेषण के लिये सरकार ने कितनी व्यवस्थाएँ कर रक्खी हैं, उसकी लम्बी-चौड़ी फिहरिस्त तैयार करने से कोई लाभ नही है। स्वर्गीय देशबन्धु अपने जीवन के अन्तिम कई वर्षों तक उनके लिये घोर संग्राम कर चुके हैं। हमें उस आत्मोपलब्धि; आत्मोन्नति और आत्म-विकास के सुयोग से वञ्चित रक्खा गया है। अपने देश के अभ्यन्तरीन और बहिर्व्यापार से हमें दूर रक्खा गया है।

÷ ÷

यद्यपि अनेक अन्यायों के लिये सरकार जिम्मेदार है। तथापि यह बात अकपट भाव से स्वीकार करना होगा, कि अपनी वर्तमान अवस्था के लिये हम स्वयं भी कई अंशों में जिम्मेदार हैं। एक जाति का विभिन्न अंश जिस बन्धन में बँधा रहता है, उस बन्धन के सामर्थ्य और असामर्थ्य के ऊपर ही जाति का सामर्थ्य और असामर्थ्य निर्भर रहता है। कई

शताब्दियों से हमारा वह बन्धन शिथिल हो गया है। हम छोटे-बड़े बहुत से सम्प्रदायों में बँट गए हैं।.. सर्वसाधारण में अज्ञानता और दरिद्रता और उच्च श्रेणी वालों में बढ़ते हुये असन्तोष के लिये अनेक अंशों तक सरकार ही जिम्मेदार है, इसमें सन्देह नहीं। परन्तु अपनी सामाजिक व्यवस्थाओं के लिये, जिसके कारण अपने लाखों भाइयों को हमने दलित और अस्पृश्य बना कर रक्खा है—जिस व्यवस्था के अनुसार हमने स्त्रियों को उनके वास्तविक अधिकारों से वञ्चित कर रक्खा है; निश्चय ही इसके लिये सरकार जिम्मेदार नहीं है।

× ×

धर्म का उच्च आदर्श चाहे कुछ भी हो, हमारे प्रति-दिन के व्यवहार में धर्म का आदर्श बन गया है। कट्टरता, धर्मोन्मत्तता, असहिष्णुता, सङ्कीर्णता, स्वार्थ-परता और जो कुछ समाज के लिये कल्याणकर है, उसके विपरीत भाव। पर-धर्मावलम्बी को घृणा करना ही आजकल धार्मिक होने का प्रधान लक्षण है। ऐहिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिये जितने अन्याय होते हैं, उनसे कहीं अधिक हो ते हैं धर्म के पवित्र नाम पर। हिन्दुओं और मुसलमानों में जिन तुच्छ कारणों को लेकर सङ्घर्ष उपस्थित होते हैं, उन्हें देख कर विस्मित होना पढ़ता है।

———

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के आदर्श उपदेश

जीवित रहने की नियत इच्छा और साधना ही जीवित रहने का प्राकृतिक लक्षण है। जिस समाज में प्राणों का बल

है, वह समाज कायम रहने की गरज से ही आत्मरक्षा-जनित दो सर्व-प्रधान आवश्यकताओं की तरफ अक्लांत भाव से सजग रहता है—अन्न और शिक्षा, जीविका और विद्या। समाज के ऊपरी स्तर या मंजिल के लोग खा-पीकर परिपुष्ट रहेंगे और नीचे की मंजिल के लोग अधपेट खाकर या भूखों रहकर जी रहे हैं या मर रहे हैं—इस सबंध में समाज रहेगा अचेतन या सोता हुआ। तो इसे हम आधे अंग का पक्षाघात ही कहेंगे। यह लकवे की बीमारी बर्बरता की बीमारी है।
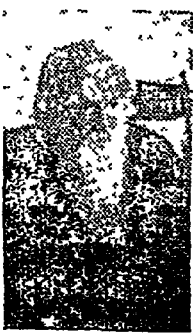
एक बार हमें अकपट चित्त और सरल भाव से इस बात को स्वीकार करने में क्या दोष है कि अभी भी हम लोगों में चरित्र-बल पैदा नहीं हुआ है? हम दल बन्दी, ईर्ष्या और क्षुद्रता के शिकार हैं। हम एकत्र नहीं हो सकते, हम परस्पर विश्वास नहीं करते और आप लोगों में से किसी का नेतृत्व हम स्वीकार करना नहीं चाहते। हम लोगों के बहुत बड़े अनुष्ठान भी पानी के बुलबुले की तरह नष्ट हो जाते हैं। आरम्भ में काम खूब

तेजी से उन्नत हो उठता है, दो दिन बाद ही वह पहले विच्छिन्न, बाद में विकृत और उसके बाद निर्जीव हो जाता है। जितनी देर त्याग स्वीकार करने का समय नहीं आता, उतनी देर खेल में लगे बालक के समान हम एक उद्योग को लेकर उन्मत्त हो उठते हैं, उसके बाद किंचित त्याग का समय आ उपस्थित होने पर हम तरह-तरह के बहाने बनाकर अपने-अपने घरों की ओर चल देते है। ऐसी दुर्बल परिणति के अत्यन्त जीर्ण चरित्र को लेकर हम लोग किस साहस से वाहर आ खड़े हुए हैं, यही विस्मय और चिंता का विषय है।

"जहाँ मन निःशक है और स्वाभिमान से माथा ऊँचा रहता है; जहाँ ज्ञान निर्युक्त है; जहाँ संसार संकीर्ण एवं विभाजनकारी गृह-प्राचीरों द्वारा खण्ड-खण्ड नहीं कर दिया गया है; जहाँ वाणी सदा सत्य-मूलक होती है; जहाँ अथक उद्योग अपनी भुजाएं पूर्णता की ओर प्रसारित करता है, जहाँ विवेक की निर्मल धारा मृत रूढ़ियों के शून्य मरुथल म विलुप्त नहीं हो गई है और जहाँ मन तेरे नेतृत्व में सतत विकास-शील विचारों और कर्मों की ओर अग्रसर होता रहता है— मेरे पिता! स्वातन्त्र्य के ऐसे स्वर्गस्थल में मेरा देश जागृत हो।"

× ×

"भाग्य चक्र किसी दिन अँगरेजों को अपना ब्रिटिश साम्राज्य त्याग देने के लिये विवश करेगा। पर वे अपने पीछे कस प्रकार का भारतवर्ष छोड़ जायँगे, और कितनी नग्न दुरावस्था? जब उनकी शताब्दिदियों की शासन धास-सूख जायेगी

तब वे अपने पीछे कितना कीचड़ और कितना कूड़ा करकट छोड़ जायँगे ?

"जैसे ही मैं सच्ची घटनाओं के गम्भीर प्रकाश में पहुँचा, भारतीय जन-समूह की तीव्र दरिद्रता के दृश्य ने मेरे हृदय को विदीर्ण कर दिया। अपने स्वप्नों से अकस्मात् जगा हुआ मैं यह समझने लगा कि जीवित रहने के लिये नितान्त आवश्यक पदार्थों की इतनी कमी शायद किसी भी आधुनिक राष्ट्र में नही. जितनी भारत में।"

''मैं इस बात को कैसे न सोचता कि भारत कृषिप्रधान देश है जो ब्रिटेन वासियों के कोष को भरता रहा है। मानव आदर्श का ऐसा मखौल, तथा कथित सभ्य राष्ट्र की मनोवृत्ति में इतना पतन और भारत के करोड़ों निराश नर नारियों के प्रति इतनी पाप पूर्ण घृणास्पद लापरवाही की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था।

× ×

वह युग आ गया है, जब कि निशस्त्र व्यक्ति हथियारों से सुसज्जित आदमी के मुकाबले मे खड़े होने का साहस करेगा। उस दिन विजय उसकी न होगी जो मार सकता है, बल्कि उसकी जीत होगी, जो मौत झेल सकता है उस दिन दु:ख देने वाला नीचे चला जायेगा। और श्रेय का वही भागी होगा। जो यातना सहन करेगा। उस दिन पशु-बल का मुकाबला आत्म-बल से करते हुये मानव यह घोषित करेगा कि अब वह दानव नहीं रह गया है, वह प्राकृतिक बंधनों को पार कर गया है। इस महान् सत्य को प्रमाणित करने का कर्तव्य और उत्तर दायित्व हम भारतीयों पर आ पड़ा है।

× ×

"अँग्रेजी भाषा के घूँघट में छिपी हुई विद्या स्वभावतः हमारे मन की सहवर्तिनी होकर नहीं चल सकती। यही वजह है कि हममें से अधिकांश लोगों को जितनी शिक्षा मिलती है उतनी विद्या नहीं मिलती।"

— ÷

"हमारे तरुणों को, जिनमें जीवनी शक्ति का वह नैसर्गिक श्रोत उमड़ रहा है, उस शक्ति का निर्ममता से दबाये रखना, मृत्यु वेदना से भी अधिक कष्टकर प्रतीत होता है। इस उभरती हुई शक्ति श्रोत को बाढ़ और दुष्का. पीड़ितों की सेवा करने मात्र से अपने प्रवाह के लिये मार्ग नहीं मिल सकता। हमारे जीवन के दैनन्दिन कार्यों की सीमा ही इसके उचित कार्यों की सीमा हो सकती है। अन्यथा दबी हुई आकांक्षाये नैराश्य और कुढ़न की आँच से मलिन हो जाती हैं और इसके परिणाम स्वरूप देश में गुप्त हिंसात्मक कार्यों का प्रसार होने लगता है। इधर उन गुप्त हिंसात्मक कार्यों के प्रभाव में आकर अधिकारीगण राष्ट्र के आत्म विकाश की दिशा में किये गये किसी भी सङ्गठित प्रयत्न को शङ्का शील आँखों से देखने लगते हैं।"

× ×

"संसार में जितने अश को हम ज्ञान द्वारा जानेंगे और हृदय द्वारा प्राप्त करेंगे, उतनी ही हमारी व्याप्ति और विस्तृति होगी। ससार जिस परिमाण में हमसे दूर है, उस परिमाण में हम ही छोटे हे। इसी कारण हमारी मनोवृत्ति और कर्म शक्ति सब वस्तुओं पर अधिकाधिक अधिकार करने का प्रयत्न किया करती है।"

+ ×

"अरे ओ मेरे अभागे देश! तुमने जिसका अपमान किया उसी अपमान से तुमको आज सबके समान होना होगा।. जिनको तुमने मनुष्य के अधिकार से वंचित किया है और जिन्हें तुमने पास बैठने की जगह नहीं दी, अपने उसी अपमान से आज तुम्हें सबके समान होना होगा।"

× ×

"तुमने जिसको नीचे फेका, वह आज तुम्हे पीछे खींच रहा है। तुमने अज्ञान अन्धकार के गहर में जिसे छिपाया, वह तुम्हारे मङ्गल, कल्याण को ढक कर घोर बाधाये पैदा कर रहा है। अपमान के द्वारा तुम्हें उसके बराबर होना होगा।"

"मृत्यु-दूत दरवाजे पर खड़ा है, उसने तुम्हारे जातीय अहकार पर अभिशाप की छाप लगा दी है। अब यदि सब को नहीं बुलाओगे, इस समय भी बैठे रहोगे और अपने आप को चारों तरफ से जातीय अहंकार में बाँध रखोगे, तो समझ रखो मृत्यु के बाद चिता की राख मे तुमको सबके बराबर होना पड़ेगा।"

—

पं० मदनमोहन मालवीय के आदर्श उपदेश

"स्मरण रक्खो कि हम एक राष्ट्र हैं और हमारा एक ही लक्ष्य है। भारत हम सभी हिन्दुओं, मुसलमानों, सिक्खों, इसाइयों

तथा पारसियों की मातृभूमि है हिन्दू-राज्य अथवा मुस्लिम राज के दिन लद गये हैं। हिन्दुस्तान में हमारा हिन्दुस्तानी राज्य होगा। एक हिन्दुस्तानी का दूसरे हिन्दुस्तानी से लड़ना अन्याय है। अपने देश में अपना राज्य—यह हम लोगों का नारा होना चाहिये। विद्यार्थियों को ६ सिद्धान्तों का पालन करना चाहिये—सत्य-ब्रह्मचर्य, शारीरिक पुष्ट, नियमित अध्ययन, देश-भक्ति की भावना और स्वार्थ त्याग। इसके अतिरिक्त उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति पर नजर रखनी चाहिये तथा देश की आजादी के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिये।"

+ +

"वर्तमान अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध घृणा फैलाना प्रत्येक भारतीय का धर्म है।"

× ×

"यह शरीर परमात्मा का मन्दिर है। इसमें ईश्वर का निवास है। सदैव इसका अपने भीतर अनुभव करो और इस मन्दिर को कभी अपवित्र न होने दो। इस मन्दिर को अपवित्र

चना देने वाली कुछ बातें हैं जिनसे सदा बचो। भूल कर भी, स्वप्न में भी मुँह से असत्य न निकले, इसकी कोशिश बराबर करो। यदि कहीं भूल से झूठ निकल जाय तो उस असत्य के लिये प्रार्थना करो, सच्चे और पवित्र हृदय से पुनः असत्य न बोलने का व्रत लो।"

× ×

"इस पवित्र मन्दिर का रक्षक ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य ही हमें वह आत्मबल देता है जिसके द्वारा हम संसार को जीत सकते हैं। ब्रह्मचर्य की ही यह महत्ता है कि महाबली मेघनाद को परास्त करने के लिये लक्ष्मण जैसा ब्रह्मचारी चुना गया। अर्जुन ने भी ब्रह्मचर्य के बल से जयद्रथ को हराया था। भीष्म, अर्जुन, लक्ष्मण, हनुमान, महाबीर, बुद्ध और शङ्कर और दयानन्द ब्रह्मचर्य की मूर्ति हैं। हम ब्रह्मचर्य के द्वारा अपने भीतर वह विद्युत् शक्ति भर सकते हैं, जिसे प्राप्त कर के हम विश्व-विजयी बन सकते हैं। लक्ष्मण और अर्जुन को सदा ध्यान में रक्खो। ब्रह्मचर्य के पालन में उनका स्मरण बड़ी सहायता देगा। भारतवर्ष का मस्तक इन्हीं ब्रह्मचारियों ने ऊँचा रखा है। महान् पुरुषों के चित्र अपने कमरे में लगा लो और उन्हीं के उपदेश और आचरण पर अपने मन को लगाओ। हृदय को कभी कलुषित न होने दो। मन को सदा प्रफुल्ल और उल्लसित रखो।"

× × ×

"नित्य प्रात काल ब्रह्ममुहूर्त में अवश्य बिस्तर छोड़ दो और नित्य कर्मादि से निवृत्त होकर एकान्त में पवित्र भाव से भगवान की प्रार्थना करो।"

× × ×

"अपना आन्हिक (डायरी) लिखने से मनुष्य को उन्नति में बहुत सहायता मिलती है। ससार के अनेक महापुरुषों के चरित्र में यह पाओगे कि वे अपनी कमजोरी को डायरी में नोट करते जाते थे, और उसे दूर करने के लिये भी अथक प्रयत्न करते जाते थे। डायरी में अपना हृदय खोल कर रख दो। वहाँ अपने सम्मुख भगवान को समझ कर अपनी बुराइयां, दोषों और अपराधों के लिये पश्चात्ताप करते हुये परमात्मा से क्षमा मांगो। तुम्हारे जीवन को पवित्र, सुखी, नियमयुक्त बनाने के लिये गीता का यह श्लोक बहुत लाभदायक सिद्ध होगा :—

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।

"सभी बातों मे सयम सीखो। वाणी में संयम, भोजन में संयम रखो और अपने सभी कार्यों में शीलवान बनो। शील ही से मनुष्य बनता है। शीलं परम् भूषणम्। शील ही पुरुष का शबसे उत्तम भूषण है।"

× × ×

"कठोर काम में अनवरत लगे रहने का अभ्यास डालो। पढ़ते समय सारी दुनिया को एक ओर रख दो और पुस्तकों में—लेखक की विचारधारा में—डूब जाओ। यही तुम्हारी समाधि है। यही तुम्हारी उपासना है और यही तुम्हारी पूजा है। कठिन परिश्रम करना सीखो। खूब गड़कर, जमकर मेहनत करो और अपने उच्च और पवित्र आदर्श को कभी मत भूलो। शास्त्र और शस्त्र, बुद्धिबल और बाहुबल, दोनों का उपार्जन करो।"

× × ×

———

सुभाषचन्द्र बोस के आदर्श उपदेश

"हमारे लिये समाजवाद तात्कालिक प्रश्न नहीं है फिर भी समाजवादी प्रचार देश को स्वतन्त्रता उपरान्त समाजवाद के लिये तैयार रखने के हेतु आवश्यक है।"

"सारे संसार में भारत के विरुद्ध प्रचार किया जाता है कि हम असभ्य हैं और उससे यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि हमको सभ्य बनाने के लिये अंग्रेजों की आवश्यकता है। इसका उत्तर यही है कि हम संसार को समझा दें कि हम क्या हैं और हमारी संस्कृति क्या है।"

— —

"संसार की राजनीति में स्वतन्त्र भारत की एक स्वस्थ और समृद्ध शक्ति होगी और विदेशों में अपने देशवासियों के हितों की रक्षा कर सकेगा।"

\+ +

"आज कांग्रेस ही जन आन्दोलन की एक मात्र सर्वोच्च संस्था है। इसके अन्दर चाहे उग्र विचार वाले हों चाहे दक्षिण पक्ष वाले हों पर यह भारतीय स्वतन्त्रता के लिये प्रयत्नशील तमाम साम्राज्य विरोधियों का ही मंच है।"

"यदि हम केवल अपने पारस्परिक मत भेद को भुला दें, अपनी सम्पूर्ण शक्ति को एकत्रित करें और राष्ट्रीय संग्राम में अपनी पूरी ताकत लगा दें तो ब्रिटिश साम्राज्यशाही पर हमारा हमला अवश्य अकाट्य हो!"

× ×

"देश के सब उग्र विचारवालों को निकट सहयोग और मित्रता से कार्य करना चाहिये और देश की तमाम साम्राज्य-विरोधी शक्तियों को ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर अन्तिम चोट करने के लिये आगे बढ़ना चाहिये।"

× ×

"हमको पदलोलुपता के कारण अपने बीच पैदा हो जाने वाली गन्दगी और निर्बलता को सख्ती से हटाना पड़ेगा।"

× ×

"ईश्वर के नाम पर, उन बीती हुई पीढ़ियों के नाम पर जिन्होंने भारतीयों को राष्ट्र का स्वरूप दिया है तथा उन मृतक वीरों के नाम पर जिन्होंने हमारे लिये वीरत्व और आत्मत्याग की परम्परा स्थापित की है—हम भारतीय जनता का आह्वान करते हैं कि वह भारतीय स्वतन्त्रता के लिये अन्तिम चोट करने के लिये हमारे झण्डे के नीचे एकत्रित हों।"

× ×

अपने सम्मुख के कार्य पूरा करने के लिये अपनी कमर कस लो। यह आशा करना कि तुम स्वतन्त्र भारत को देखने के लिये जीवित रहोगे भारी भूल होगी—यह समझ कर भी कि विजय अब अतिनिकट है। यहाँ पर किसी की यह इच्छा नहीं होनी चाहिये कि वह जीवित रह कर स्वतन्त्रता का आनन्द उठायेगा। अभी भी हमारे सम्मुख एक लम्बी और कठिन लड़ाई है।

× ×

"आज हमारी केवल एक इच्छा होनी चाहिये—मरने की इच्छा ताकि भारत जीवित रह सके—शहीदों की मौत मरने

की इच्छा, जिससे स्वतन्त्रता का मार्ग शहीदों के खून से सींचा जा सके।"

— ÷

"आज मैं आपसे एक सर्वोच्च बलिदान चाहता हूँ। मैं तुमसे खून चाहता हूँ। खून ही उस खून का बदला लेगा जिसे हमारे दुश्मनों ने बहाया है। खून ही स्वतन्त्रता का मूल्य चुका सकता है। मुझे दो खून और मैं तुम्हें दूँगा आजादी।"

× ×

"हमारा काम आसान नही है। हमारी लड़ाई लम्बी और कठिन होगी पर मुझे अपने कार्य की न्यायोचितता तथा अजेयता पर पूर्ण विश्वास है। ४० करोड़ मानव मनुष्य समाज के पाचवे अंश को स्वतन्त्र होने का पूर्ण अधिकार है वे आज स्वतन्त्रता का पूरा मूल्य चुकाने को तैयार है। संसार की कोई भी शक्ति नहीं है जो हमारे जन्म-सिद्ध अधिकार से हमको वंचित रख सके।"

× ×

"यह सर्व विदित है कि प्रत्येक साम्राज्य "विभाजन कर शासन करो" वाली नीति के आधार पर चलता है। पर मैं नही समझता कि ब्रिटेन ने इस नीति के वर्तने में जितनी कुटिलता, नियम बद्धता तथा हृदयहीनता का व्यवहार किया है उतना किसी और ने किया हो।"

× ×

"मैं निःशंक यह विश्वास करता हूँ कि अपनी गरीबी, अशिक्षा तथा रोग को दूर करने और वैज्ञानिक ढङ्ग से उत्पादन एवं वितरण सम्बन्धी हमारे प्रमुख प्रश्न समाजवादी आधार पर ही उचित रूप से सुलझाये जा सकते है।"

+ +

"विदेशी सत्ता का बोझ हटने के पश्चात् अपनी जनता को एक रखने के लिये हमको विशेप प्रयत्न करना पड़ेगा। कारण विदेशी शासन ने कुछ हद तक हमारा नैतिक पतन करके हमको असंगठित कर दिया है।"

+ +

"हमारा सब से बड़ा सवाल होगा देश की गरीबी दूर करना। इसके लिये हमको अपनी भूमि व्यवस्था में आमूल परिवर्तन करना होगा, जमींदारी प्रथा तोड़ना होगा।"

÷ ÷

"आर्थिक प्रश्नों को हल करने के लिये केवल कृषि उन्नति पर्याप्त नहीं होगी। शासन सत्ता के स्वामित्व एवं अनुशासन के अन्तर्गत हमको औद्योगिक उन्नति की विराट योजना बनानी होगी।"

× ×

"देश के सामने इस समय गुलामी, गरीबी और बेकारी के प्रश्न हैं। ये तभी दूर हो सकते हैं, जब पहले गुलामी को दूर कर दिया जाय।"

× ×

..हमारी उन्नति तब ही पूर्ण होगी जब ब्रिटिश साम्राज्य से हमारा सम्बन्ध विच्छेद हो जायगा।...

+ +

"स्वयं मैं तो स्वतन्त्र फेडरल प्रजातन्त्र शासन का समर्थक हूँ। और यही अन्तिम लक्ष्य है जिसे मैं सदा अपने सम्मुख रखता हूँ। मैं चाहता हूँ कि भारत अपने भाग्य का स्वयं निर्णय करने वाला बने, जैसा कि वह अपने गौरवमय अतीत में था। ऐसा होने पर ही वह अपनी विशेपता का विकास कर सकेगा। मेरी यह उत्कट अभिलापा है कि भारत अनिय-

न्त्रित स्वातन्त्र्य को प्राप्त करे और संसार के स्वतन्त्र राष्ट्रों में अपना मस्तक ऊँचा करके खड़ा रह सके। मैं चाहता हूँ कि भारत पूर्ण स्वतन्त्रता से मिलने वाले आनन्द का उपभोग करे और उस आनन्द में उन तमाम दातों का आविष्कार करे जो उसके तथा समस्त संसार के लिये लाभप्रद हों। मैं चाहता हूँ कि भारत का अपना जुदा झण्डा हो, अपनी पृथक जल-सेना और थल-सेना हो, और उसके राजदूत अन्य स्वतन्त्र देशों की राजधानियों में रहें। स्वतन्त्रता तो मेरा ध्येय है। वह एक ऐसी वस्तु है, जिसका मूल्य आंकना असम्भव है। मनुष्य की आत्मा के लिये स्वाधीनता उतनी ही आवश्यक है जितनी कि उसके फेफड़ों के लिये हवा है। स्वामी विवेकानन्द ने ठीक ही तो कहा है:—"स्वतन्त्रता आत्मा का गीत है।" स्वाधीनता सच्चा अमृत है—मृत्युलोक का जीवन-रसायन है।"

"इस वीरता के संग्राम में हम में से व्यक्तिगत प्रत्येक का चाहे जो कुछ हो, पर भूमण्डल पर ऐसी कोई शक्ति नहीं जो भारत को अब गुलाम रख सके। हम चाहे जीवित रहें और काम करते रहें, या लड़ते हुये मर जायँ, पर समस्त परिस्थितियों में हमारा दृढ़ विश्वास होना चाहिये कि जिस उद्देश्य के लिये हम लड़ रहे हैं, वह अवश्य सफल होगा। ईश्वर का संकेत भारत की स्वतन्त्रता की ओर है। हमें केवल अपने कर्तव्य का पालन करना है और भारतीय स्वतन्त्रता का मूल्य चुकाना है। भूमण्डल पर ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो भारत को अब गुलाम रख सके। मैं तुमसे वादा करता हूँ कि तुम मुझे खून दो और मैं तुम्हें आजादी दूँगा। मैं तुम्हारे लिये शान्ति का नहीं, युद्ध का सन्देश लाया हूँ।"

—:o:—

पं० जवाहरलाल नेहरू के आदर्श उपदेश

"आज कल की दुनिया में चारों तरफ लड़ाई, दंगा-फसाद हो रहा है। हिन्दुस्तान में भी काफी झगड़ा फसाद है, और तरह तरह की बहसें पेश होती हैं। ऐसे मौके पर यह आवश्यक होता है कि हम अपनी नई संस्कृति की ऐसी बुनियाद रखें, जिसमें आजकल की दुनिया के विचार जान सकें। और जब हमारे सामने पेचीदा मसले आयें तो हम बहके बहके न फिरें। संस्कृति तो एक ऐसा

पत्थर होना चाहिये जिससे हर चीज की आजमाइश हो सके। अगर किसी जाति के पास यह नहीं है, तो वह दूर तक नहीं जा सकती। हमें अपने सांस्कृतिक मूल्य कायम करने हैं और उनको अपने साहित्य की और सभी काम की बुनियाद बनाना है।

"मैं मानूँ चाहे न मानूँ। आप मानें चाहे न मानें हिन्दुस्तान की ठेकेदारी हम पर है। हम इस ठेकेदारी से इनकार नहीं कर सकते।"

"हमने चाहा है कि हम अपनी जिन्दगी अपने ढंग से बसर करें और उसमें बाहर वाले किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करें। हालांकि हमारे लिये यह मुमकिन नहीं है कि पिछली सदी के इतिहास को हम किसी तरह मिटायें फिर भी हम चाहते हैं कि हमारी गुलामी की याद को ताजी बनाये रखने-वाले हर निशान को हम जड़ से मिटा दें।"

"हम चाहें या न चाहें हमारे भाग्य में अब आँसू और खून बहाना बदा है परन्तु हम भयभीत न हों, हम अपना कर्तव्य छोड़कर न भागें। हमें चाहिये कि नारी और पुरुष की हैसियत से हम स्वेच्छा से अपने अपने कर्तव्य का सम्हालें। भाग्य चक्र ने हमें आज इस परीक्षा के सामने उपस्थित कर दिया है। किसी राष्ट्र के लिये इससे वड़ी और चरम परीक्षा हो ही नहीं सकती।"

× ×

"हम बने रहें या नष्ट हो जायँ, हम संकट का सामना सम्मान और साहस के साथ करेंगे। हमें इस प्यारे देश की इज्जत नहीं भूलना चाहिये जिसने हमें जन्म दिया। हममें से हर एक पुरुष और नारी भारत का ही एक छोटा अंग है और भारत के प्राचीन गौरव का कुछ न कुछ हिस्सा उसके साथ जड़ित है।"

+ ÷

"हमारा आँसू और खून जरूर बहेगा, शायद भारत की प्यासी भूमि को उसकी जरूरत है। क्योंकि तभी तो यहाँ स्व-तन्त्रता का वह पुष्प खिलेगा जिसकी सुगन्ध से सारा देश महक उठेगा। हम उस कीमत को अदा करेंगे और हमारा कल्याण इसी में है कि हम अपने मार्ग पर अविचलित रह कर अपने ध्येय के प्रति नैष्ठिक वने रहें।',

× ×

"...हिन्दुस्तान की आजादी के लिये इन्कलाब करना हमारा पेशा है और हर हिन्दुस्तानी का यह पेशा होना चाहिये।"

× ×

—:※:—

खाँन अब्दुल गफ्फारखाँ के आदर्श उपदेश

"मैं खुदाई खिदमतगार हूँ मेरे लिये मानव समाज की सेवा ही ईश्वर भक्ति के समान है। इसलाम से यही शिक्षा मुझे मिली है और सब लोगों की सेवा करते हुये मैंने इस पवित्र शिक्षा के अनुसार कार्य करने की कोशिश की है स्वतन्त्रता के अभाव में धर्म अथवा और कोई पवित्र कार्य विकसित नहीं हो सकता। फलतः मेरे लिये तथा इस महान् देश के सारे निवासियों के लिये स्वतन्त्रता आवश्यक है। मैं समझता हूँ कि स्वतन्त्रता के द्वारा ही विभिन्न सम्प्रदायों के बीच शान्ति और सहयोग की भावना पैदा हो सकती है। इसी उद्देश्य से मैंने अभी तक कार्य किया है और आगे भी करता रहूँगा। घृणा और बुरी भावनाओं के द्वारा भारत अथवा भारत की कोई जाति उन्नति नहीं कर सकती। हमें साथ-साथ रहना है और साथ ही साथ सारी कठिनाइयों का सामना करना है।"

× +

"गुलामों का कोई धर्म नही होता।"

+ ×

"स्त्री और पुरुष मिलकर ही जीवन की गाड़ी को आगे खींच सकते है। जब से स्त्रियाँ बुरकों में बन्द होकर घरों मे बैठ गईं और सभ्यता के आगे बढ़ने की जिम्मेदारी केवल पुरुषों के कन्धों पर ही रह गई, तब से सभ्यता की प्रगति

एकांगी रह गयी। पैगम्बर के जमाने में पर्दे का नाम निशान न था। स्त्रियाँ खुले आम मुल्की और मजहबी मामलों में हिस्सा लेती थीं। जमाने के दौर ने उन्हें पंगु बनाकर पिंजड़े में बन्द कर दिया।"

+ +

"मैं आशा करता हूँ कि वह समय अब शीघ्र ही आनेवाला है जब हम लोग संकुचित दृष्टिकोण का त्यागकर उदार विचारों का समर्थन करेंगे। हमे सारे भारत की स्वाधीनता का चित्र अपने सम्मुख रखना चाहिये। आपस के झगड़ों में हम लोगों ने काफी समय और शक्ति नष्ट की किन्तु इससे केवल हमारे शत्रुओं को ही लाभ पहुँचा है। मुसलमानों से विशेष रूप से मैं अपील करता हूँ कि वे इसलाम की पवित्र शिक्षा के अनुसार कार्य करे तथा देश की आजादी और उन्नति तथा विभिन्न सम्प्रदायों के बीच सहयोग की भावना पैदा करने में अगुआ बने।"

× –

"मैं राष्ट्र भाषा का हिमायती हूँ, अँग्रेजी का दुश्मन नहीं। अन्तर्राष्ट्रीय दुनिया से व्यवहार करने में हमें आज भी अँग्रेजी का सहारा लेना पड़ता है। मगर गुलाम देश को अपनी सदियों की गुलामी से जल्द से जल्द छुटकारा पाने के लिये राष्ट्र भाषा का ही सहारा लेना होगा।"

—जमनालाल बजाज

—:o:—

बाबू राजेन्द्र प्रसाद के आदर्श उपदेश

हिन्दुस्तान एक बाग है, इसमें तरह तरह के फूल पौदे लगे हैं। जब सब अपनी अपनी जगह पर रहेंगे और अपने अपने समय पर फूलें फलेंगे तो बाग की खूबसूरती बढ़ेगी। अगर एक दूसरे की खुराक छीनने की कोशिश करेंगे तो सूख जायेंगे। हो सकता है कि कुछ ज्यादा फल जायें, मगर बाग की वह सुन्दरता नहीं रहेगी और न हम उसको देख कर खुश ही हो सकेंगे।
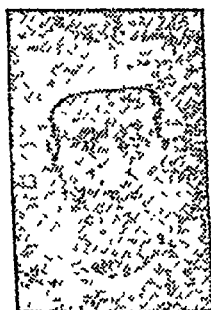
इसलिए इस जहान के बाग को हरा भरा करना, तरह तरह के नित नये फूल लाना और सारे बाग को रोज-ब-रोज ज्यादा खूबसूरत बनाना हमारा धर्म है और 'हिन्दुस्तानी' यही करना चाहती है, आप सब इसकी मदद करें।

"देश की अवस्था पर विचार करने के समय हम बहुधा भूल जाया करते हैं कि हमारी दुखावस्था और दुर्गति के मूल कारण हमारे में ही हैं। और जब तक हम उन्हें दूर न करेंगे, हमारी दशा सुधर नहीं सकती। राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक ह्रास का प्रधान कारण हमारी अकर्मण्यता, अदूरदर्शिता और जड़ता है। इसलिये देश की उन्नति के लिये जो भी कार्यक्रम बनाया जाय उसमें इन दुर्गुणों के दूर करने का उपाय अवश्य रहना चाहिये।"

× +

—:※:—

मौलाना अबुल कलाम आजाद के आदर्श उपदेश

"हिन्दुस्तान में आजादी की लड़ाई कई मंजिलों को पार करती हुई इस अवस्था मे आज पहुँची है कि हम गर्व से मस्तक

ऊँचा करके खडे हो सकते हैं। ६० साल पूर्व जो कारवां आजादी की राह पर चल पड़ा था अब उसकी यात्रा पूरी होनेवाली है। यात्रा का लक्ष्य अब दूर नहीं है। रास्ते में कठिनाइयाँ आई, मुसीवतों का पहाड़ टूटा, परेशानियों का सामना करना पड़ा किन्तु हम साहस के साथ आगे बढ़ते गये। पिछली बातों का जिक्र व्यर्थ है। अब तो मंजिल निकट है अन्तिम लक्ष्य की ओर ध्यान दो।"

— —

"आजादी के विना जिन्दगी बेकार है और कुरबानी के विना आजादी मुमकिन नही।"

"हमें अपने मार्ग से न भय विचलित कर सकेगा न पक्षपात। मैं मानव हूँ और मुझमे त्रुटियां का होना सम्भव है। एक समय में सबको प्रसन्न करना मनुष्य के लिये असम्भव है।"

वी॰ जी॰ खरे

—:※:—

सरदार बल्लभ भाई पटेल के आदर्श उपदेश

"आत्म रक्षा हमारा प्रारम्भिक कर्तव्य है और आपत्ति के समय हिसा या अहिसा दोनों प्रकार से कर्तव्य पूरा करना चाहिए अहिसा की आड़ में इधर उधर भागने की जरूरत नहीं। यदि किसी कारण दंगा हो जाय तो पुलिस की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये बल्कि आन्तरिक शान्ति और संगठन के लिये चेष्टा करनी चाहिये। दंगों का यथा सम्भव अहिसा से मुकाबला करना चाहिये परतु यदि रक्षा न हो सके तो उचित उपाय भी काम में लाना चाहिये।"

× ×

आचार्य कृपलानी के आदर्श उपदेश

"मैं मानता हूँ कि जैसे इग्लैण्ड अंगरेजों का है, जर्मनी जर्मनों का है, वैसे ही यह देश हम हिन्दुस्तानियों का है। मैं मानता हूँ कि मनुष्य-मात्र के चेहरे पर से ही स्वभावतः उसके वतन का पता चल सकता है। अंग्रेजों का रूप-रंग और सूरत-शक्ल उन्हें इंगिलस्तान का ठहराता है और मेरा मुझे हिदुस्तान का साबित करता है। जापानी के मुँह पर कुदरत ही ने ऐसी छाप लगा दी है कि वह साफ ही जापान का मालूम पड़ता है।

मनुष्य की शक्ति नहीं कि वह ईश्वर और कुदरत ने जो किया है उसे बिना नुक्शान किये मिटा सके। इसलिये मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि जैसे इंग्लैण्ड हिन्दुस्तानियों का नहीं हो सकता, जर्मनी फ्रांसीसियों का नहीं हो सकता, वैसे ही हिन्दुस्तान भी ब्रिटिशों का कदापि नहीं हो सकता। यह चीज ही खतरनाक है और कुदरत ऐसे खतरों को हमेशा मिटाती रहती है।"

+ +

"इस समय हम जो कर रहे हैं उसी को, ऐसी परिस्थिति में, एक क्षुद्र से क्षुद्र अँग्रेज भी अपना कर्तव्य समझेगा। अरे, हम तो वही करना चाहते हैं, जो आपके (अँग्रेज) श्रेष्ठ वीरों ने अपने समय में किया था। हेम्पडन, मिलटन और क्रामवेल ने अपने जमाने में जो कुछ किया था, वही हम आज किया चाहते हैं, जार्जवाशिंग्टन ने अमेरिका के लिये जो किया था मैजिनी ने इटली के लिए जो किया था, और दूसरे अनेक देशभक्तों ने अपने देश पर के विदेशी जुए के विरोध में जो किया था, वही हम किया चाहते हैं। अजी नहीं, हम तो गांधी जी के झण्डे के तले इतिहास के दृष्टान्तों को परिशुद्ध करना चाहते हैं। उन्होंने अपने-अपने समूहों के खिलाफ मूसा के 'शठं प्रति शाठ्य' के नियम का पालन किया था, पर हम तो बुद्ध और ईसा के आदेशों का अनुसरण किया चाहते हैं। हम बुराई को भलाई से जीतना चाहते हैं। हमारा विश्वास है कि वैर से वैर कभी नहीं मिटता। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भी प्रेम से वैर का नाश होता है। हमारा धर्म-युद्ध विशुद्ध है; पाक है। ऐसे ही पाक और निरपवाद हमारे सत्य और अहिंसा के साधन हैं।"

— : : -

विजयलक्ष्मी पंडित के आदर्श उपदेश

"हम अँग्रेजों को क्षमा नही कर सकते—इसलिये नहीं कि उन्होंने हमारे देश का शोषण किया, इसलिये नहीं कि उन्होंने मानवता के अधिकार भी हमें नहीं दिये—बल्कि इसलिये कि उन्होंने भारतीय जनता की आत्मा कुचल दी है। भारत में स्थिति गभीर है, भारत विद्रोह की दशा में है, और यदि युद्ध हुआ तो वह जाति का युद्ध होगा यदि विजेता लोग दूसरों को भी भाग दें, और अपनी विचार शैली में कूटनीति के बदले उपयोगी सिद्धांतों को स्थान दें तो फिर युद्ध होने की आवश्यकता नहीं है।"

"किसी भी राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र पर शासन करने का अधिकार नहीं होना चाहिये। साम्राज्यवाद भी फासिज्म का जुड़वा भाई है। भारत की स्वाधीनता ब्रिटिश साम्राज्यवाद के लिये उतनी ही लाभकारी होगी, जिस प्रकार अमेरिका की स्वाधीनता उनके लिये हुई है।"

"अब अहिंसा का सवाल नहीं रहा। हम लड़ेंगे। जिस तरह होगा लड़ेंगे। हमारे पास हथियार नही होगा तो हम हथियार खुद बनायेंगे।"

पुरुषोत्तमदास टंडन

— :❀:—

"स्वतन्त्रता हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार। स्वतन्त्रता के लिये ही हम लोग जीवित हैं और वही हमारा प्रिय लक्ष्य है। कोई भी शक्ति ऐसी नहीं है जो हमें स्वतन्त्रता प्राप्त करने से रोक सके।"

"हिन्दुस्तान तुम्हारा देश है, इसे तुम आजाद करो। जब तक तुम आजादी के लिये बलिदान देने को तैयार नहीं होगे तब तक भारत स्वाधीन नहीं हो सकता।"

पंडित गोविन्द वल्लभ पंत

"मन का हर एक वंशज, यानी हर एक आदमी को अपनी रक्षा अपने ही बल से करना चाहिये। यही ऋषियों की आज्ञा है। यही सार्वभौम मनुष्य धर्म है। मनुष्य अपनी रक्षा बाहुः बल से करे अथवा आत्मबल से करे, किन्तु अपना रक्षण आप ही करे, यह स्वाभाविक है। अगर उसके अकेले का बल पर्याप्त न हो तो, आत्म-रक्षा के लिये मनुष्य दूसरे की मदद ले सकता है, परन्तु अपनी जान बचा कर दूसरे पर निर्भर कदापि न रहे। अपना निजी प्रयत्न किसी हालत में शिथिल न करे।"

"अत्म रक्षा का कर्तव्य जिसने छोड़ दिया, उसे न सम्पत्ति रखने का अधिकार है न विवाह करने का। सन्यासी लोग अपने देह को परिग्रह समझ कर उसकी परवाह छोड़ देते हैं। उनकी बात अलग है।"

काका कालेलकर

"राज्य अलग चीज है, स्वराज्य अलग चीज है। राज्य हिंसा से भी कमा सकते हैं; स्वराज्य अहिंसा के बिना असंभव है। इसलिये विचारवान राज्य नहीं चाहते। 'न त्वहं कामये राज्य' (मुझे राज्य नहीं चाहिये) और 'यत्नेमहि स्वराज्ये' (हम स्वराज्य का यत्न करते हैं) उनके राजनैतिक नारे होते हैं।"

"स्वराज्य वैदिक परिभाषा का शब्द है। उसका व्याख्या इस प्रकार की जाती है—स्वराज्य यानी प्रत्येक का राज्य अर्थात् ऐसा राज्य जो हरेक को अपना लगे। इसी के माने हैं राम-राज्य।"

"बाइबिल में कहा है, "तुम्हारा दाहिना हाथ जो देता हो, उसे बायाँ हाथ न जानने पाय।" सब धर्म ग्रन्थों को यही सिखावन है। खादी के द्वारा यह गुप्त दान होता है। यही नहीं बल्कि खुद दाता भी यह नहीं जानता कि मैं दान क रहा हूँ, और न लेने वाले को पता होता है कि मैं दान ले रहा हूँ। खरीदार कहता है, मैंने खादी खरीदी। जिस गरीबों को पैसे मिलते हैं, वह सोचता है, मैंने अपने श्रम का मेहनताना िया। इसमें किसी का दुर्बल बनने की जरूरत नहीं, लेकिन फिर भी उसमें दान तो है ही। हमारे दिल में तो दान की भावना भी नहीं होगी, फिर भी दूसरे को मदद तो पहुँचती ही है। दान देने वाले और लेने वाले ने एक दूसरे को देखा तक नहीं है। लेकिन वास्तविक धर्म पर अमल वहाँ हो रहा है।

—आचार्य विनोबा

"पिछले दिनों में जितनी तकलीफें और कष्ट लोगों को उठाने पड़ रहे हैं उनका सबका एक ही इलाज है और वह है विदेशी शासन के जुये को कंधे पर से हटाना। यदि जरूरत हुई तो आजादी की लड़ाई हर जगह लड़ी जायगी।"

—————

आचार्य नरेन्द्रदेव के आदर्श उपदेश

"हमारे देश की माली हालत कितनी खराब है। हमारे रहन-सहन की स्थिति कितनी नीचे गिर गई है? स्वतन्त्र मुल्क हम लोगों को नीची निगाह से देखते हैं। गुलामी का अभिशाप सब पापों से बढ़ कर है। सब से पहला काम है कि हम गुलामी के जुये से अलग हों। सब को समान अधिकार मिलना चाहिये। समाज से ऊँच-नीच की भावना विलकुल बन्द होनी चाहिये। समाजवादी सरकार में पक्ति-भेद का नामो निशान न होगा। हमारा पहला कदम ग्रामीणों और मजदूरों की शिक्षा और आर्थिक स्थिति को सुधारने का होगा। ग्रामीणों को जमीन उनकी होगी। जमींदारी प्रथा का नाश होना सबसे पहला काम है। समाजवादी व्यवस्था में हर एक को तरक्की करने का पूर्ण अधिकार और सुविधा होगी। ग्रामों की रचना नई पद्धति से की जायेगी। गाँवों में पार्क होगा। सुन्दर वाचनालय होंगे। अच्छे साफ सुथरे नये ढङ्ग के मकान होंगे। अच्छी सड़कें बनाई जावेंगी। रेडियो से तरह-तरह की शिक्षा दी जावेगी। एक तरह से वहाँ आमूल परिवर्तन किया जावेगा। आज के भारतीय गावों में जमीन आसमान का अन्तर मालूम होगा। सब का स्वास्थ्य अच्छा होगा। हर एक के लिये दवा-दारू का समुचित प्रबन्ध होगा। सब को निःशुल्क शिक्षा दी जायेगी। आज जो किसानों और मजदूरों की हड्डियाँ दूर से दिखाई पड़ती हैं। समाजवादी सरकार में उनके मुख दूर से चमकेंगे। शरीर में ताकत और खून होगा। लोग बुद्धिमान होंगे और

अपना अधिकार समझेंगे। हर एक स्त्री पुरुष को वोट (राय) देने का अधिकार होगा। बड़े-बड़े कल कारखानों पर राष्ट्र का आधिपत्य होगा। रूस का अन्ध अनुकरण नहीं किया जायगा। भारतीय संस्कृति का लिहाज रक्खा जायेगा। आज की शिक्षा बेकार है! करोड़ों जनता को अपना नाम तक लिखना नहीं आता। उनकी मेहनत का नाजायज फायदा शहरों में खर्च हो रहा है। कुछ चन्द आदमी उच्च शिक्षा प्राप्त करके गुलामी की मशीनरी में लगजाते हैं। यह राष्ट्र की असली शिक्षा नहीं कही जा सकती। गुलाम बनने की ही शिक्षा दी जाती है। शिक्षा का पूर्ण अधिकार जनता के चुने हुये प्रतिनिधियों के हाथ में सौंप देना चाहिये।"

"संसार की प्रगतिशील शक्तियों को नयी व्यवस्था कायम करने के लिये प्रयत्नशील होना चाहिये। संसार से गरीबी, बेकारी और गुलामी दूर करने के लिये सब देशों की जनता में चेतना उत्पन्न करने की आवश्यकता है। यही हमारा प्रधान कार्य है।"

"स्वराज्य गरीबों के लिये होना चाहिये ताकि वे अपना भरण पोषण करते हुये, अपने बच्चों को शिक्षा देते हुये अपना जीवन सुधार करें।"

यूसुफ मेहरअली

—:॰:—

"हम केवल अपनी शक्ति से आजादी प्राप्त कर सकते हैं और इसके लिये हमें सगठित होना चाहिये। अंग्रेजों में विश्वास करना व्यर्थ है। ब्रिटिश सरकार हमें पूर्ण स्वतन्त्रता कभी नहीं देगी इस लिये भावी संघर्ष के लिये अभी से तैयार करना आवश्यक है।"

— जय प्रकाश नारायण

"अपनी मातृभूमि के लिये हर समय खून बहाने के लिये तैयार रहना चाहिये, अंग्रेज शासन-शक्ति देने के लिये तैयार नहीं है; उनसे छीन कर ही लेना होगा।"

—शाहनवाज खां

"बिना अच्छी शिक्षा के कोई अच्छा राजनीतिज्ञ नहीं हो सकता। और न बिना क्रान्ति के स्वराज्य ही प्राप्त हो सकता है। सब को अंग्रेजी भाषा का बहिष्कार करना चाहिये और मातृ भाषा में शिक्षा देनी चाहिये।"

—डा० राममनोहर लोहिया

"हमारी आजादी का उद्देश्य केवल थोड़े से लोगों का सुख और आराम कभी नहीं होना चाहिये। हमे भारत के सारे वर्गों और जातियों के बीच सहयोग, प्रेम और बन्धुत्व की भावना पैदा करनी चाहिये। हमारी स्वाधीनता का यही लक्ष्य होगा। ब्रिटेन की मजदूर सरकार हमें अधिकार देनें को प्रस्तुत है। हमें भी इस अवसर से लाभ उठाने को तैयार रहना चाहिये।"

—राजा महेन्द्र प्रताप

—:卐:—

"जब तक हिन्दुस्तान का एक एक बच्चा जीवित है तब तक वह अपने प्राणों की बाजी लगाकर राष्ट्रीय झंडे की शान कायम रक्खेगा। हिन्दुस्तान अपनी आजादी लेकर रहेगा। मैं हिन्दुस्तान के सिपाहियों से कहती हूँ कि अपने देश को पहचानो। अपनी मातृभूमि को प्यार करो और आजाद सैनिक बनो। अंग्रेजों की छत्रछाया में रहना सबसे बड़ा पाप है। मै ि जि शासन को घृणा से देखती हूँ। अंग्रेजों का राज्य उखाड़ ि.कन चाहिये। अंग्रेज यहाँ से जितनी जल्दी जा सकें उतना भारत के लिये अच्छा है। मैं देश की आजादी के लिये फांस पर लटकने को तैयार हूँ।"

"भारतीय जनता और सेना जिसका अंग्रेजों को इ भरोसा है, मार्मिक प्रहार करके भारत में ब्रिटिश साम्र ज्य को पूर्णतया नष्ट कर देगी। ब्रिटेन को यह नहीं भूलना हि कि क्रान्ति की ज्वाला अब भी जनता के हृदय में धधक है। महात्मा गांधी देश के सब से बड़े क्रान्तिकारी हैं। उ ह ही सन् १९४२ मे अंग्रेजों से कहा था कि 'भारत छोड़ चले जाओ' और जनता से कहा कि "करो या मरो"

—विद्रोहिणी अरुणा आसफअ

"देश की स्वाधीनता के लिये हमें अपना खून बहा दे चाहिये। सच्चे सैनिक बन कर भारत को आजाद करो। आज हिन्द फौज के सैनिकों के समान भावना से ही भारत आ किया जा सकता है। युवकों को अपने अन्दर ऐसी पैदा करनी चाहिये।"

—श्रीमती सत्यवती

—:※:—